भास्कर 1/5/25 पेज 13

कृषि • बोरलॉग इंस्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया पूसा के हेड ने दी नई कृषि तकनीक व यंत्रों की जानकारी

आधुनिक तकनीक व यंत्रों के इस्तेमाल से उपज व आय में होगी वृद्धि : डॉ. जाट

परंपरागत कृषि तकनीकों से अलग हटकर आधुनिक कृषि की जरूरत

भास्कर न्यूज|पूसा

बिहार के किसान मौसम के बदलते परिवेश में आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के साथ-साथ कृषि यंत्रों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल कर अपनी खेती को लाभकारी बना सकते हैं। परंपरागत कृषि तकनीकों से अलग हटकर आधुनिक कृषि तकनीक और कृषि यंत्रों का इस्तेमाल करने से फसल उत्पादन और आय दोनों में वृद्धि होती है। ये जानकारी बोरलॉग इंस्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया पूसा संस्थान के हेड डॉ. राजकुमार जाट ने दी है। उन्होंने कहा कि अब दौड़ यह आ गया है की अब किसानों की खेती उन्हें एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में दिखाई दें। उन्होंने कहा कि किसान अब कंबाइन हार्वेस्टर, जीरो टिलेज, सीड ड्रिल, डायरेक्ट सीड्स राइस, ड्रोन स्प्रेइंग, स्प्रिंकलर सिंचाई तकनीक जैसे आधुनिक मशीनों को अपनाकर खेती करें। इन तकनीकों के इस्तेमाल से किसानों के आय में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। डॉ.जाट ने बताया कि किसान खेती में कम लागत में ज्यादा उत्पादन व मुनाफा कमाने के लिए ग्रीष्मकालीन गरमा फसल जैसे मूंग, अरहर, लोबिया, मूंगफली, बाजरा, ज्वार जैसे अन्य दलहनी फसलों की खेती जरूर से जरूर करें। ये सभी फसलें मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाने के साथ-साथ किसानों को सामान्य फसलों की तुलना में अतिरिक्त आमदनी प्रदान करती है। उन्होंने कहा की सरकार भी इन तकनीकों और फसलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार किसानों को प्रोत्साहित कर रही हैं।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन।

किसान हरे खाद वाले फसलों की भी करें बुआई, इसमें कम लागत आती है

डॉ. जाट ने बताया कि ग्रीष्मकालीन फसलों के साथ-साथ किसान हरे खाद वाले फसल जैसे धैचा, लोबिया आदि की भी बुआई समय समय पर अपने खेतों में जरूर करें। धैचा, लोबिया जैसी फसल मिट्टी में जैविक कार्बन बढ़ाती है जिससे मिट्टी की जलधारण क्षमता सुधरने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। इसके अलावे ये फसलें नाइट्रोजन को प्राकृतिक रूप से मिट्टी में संचित करने में मदद करती है। इससे आगे लगाए जाने वाले मुख्य फसल में उर्वरकों की जरूरत कम हो जाती हैं।

किसान गेहूं की कटाई में कंबाइन हार्वेस्टर मशीन का करें प्रयोग, मजदूर की जरूरत नहीं, कम समय में पूरा होगा

डॉ. जाट ने बताया कि मौजूदा समय में गेहूं की कटाई शुरू हो चुकी है। इस समय किसान गेहूं की कटाई में कंबाइन हार्वेस्टर जैसे मशीन का अधिक से अधिक प्रयोग करें। कंबाइन हार्वेस्टर मशीन के माध्यम से काफी तेजी से और बिना ज्यादा श्रम के गेहूं की कटाई की जा सकती है। इस तकनीक के इस्तेमाल से जहां किसानों का समय बचेगा। वहीं किसान अपने गेहूं कटाई किये गए खेतों में सीड ड्रील के माध्यम से बिना जुताई किये ही मूंग जैसे अन्य फसलों की बुआई भी समय पर कर लेंगे। उन्होंने कहा कि गेहूं कटाई करने वाले यंत्र कंबाइन हार्वेस्टर का इस्तेमाल छोटे और बड़े सभी तरह के किसान कर सकते हैं। इस कृषि यंत्र से गेहूं की कटाई का काम काफी तेजी और कुशलता से होता है। उन्होंने बताया कि गेहूं की कटाई के तुरंत बाद किसान खेतों को बिना जोते जीरो टिलेज व सीड ड्रील से अगली फसल की बुआई कर सकते हैं जिससे मिट्टी की नमी बनी रहेगी और डीजल व श्रम बचने से लागत में कमी आएगी। उन्होंने कहा कि जीरो टिलेज व सीड ड्रील जैसे तकनीक के उपयोग से खेत जुताई करने की जरूरत नहीं पड़ती है। इससे समय और संसाधन की काफी बचत होने के साथ-साथ बुआई भी जल्द से जल्द पूरी हो जाती है। उन्होंने बताया कि ग्रीष्मकालीन फसलें जैसे मूंग, लोबिया, मूंगफली, मिलेट्स और अन्य दलहनी फसलों की बुआई करने से मिट्टी में जैविक तत्व बढ़ते हैं और भूमि की उर्वरकता भी बनी रहती है।

समर्पण भाव से अनुसंधान करने की जरूरत : कुलपति

उद्घाटन करते कुलपति डा पीएस पांडेय.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में स्थापना दिवस के अवसर पर जलवायु अनुकूल गन्ना उत्पादन तकनीक और बिहार में गन्ना उत्पादकता बढ़ाने को लेकर एक विमर्श सत्र का आयोजन किया गया. अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना और विकास की चर्चा की. कहा कि विवि के वैज्ञानिकों को समर्पण भाव से निःस्वार्थ अनुसंधान करने की जरूरत है. गन्ना अनुसंधान संस्थान का गौरवशाली इतिहास रहा है. उस इतिहास से सीख कर हमें नया इतिहास लिखना है. उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे मल्टी डिसिप्लिनरी टीम के साथ काम करें. उन्होंने कहा कि बिहार सरकार गन्ना अनुसंधान को लेकर विश्वविद्यालय को काफी सहयोग कर रही है. उन्होंने बिहार सरकार के द्वारा सेंटर आफ एक्सीलेंस की स्थापना को लेकर धन्यवाद दिया. विश्वविद्यालय आने वाले समय में बिहार को गुड़ उत्पादन के क्षेत्र में देश में नंबर वन बनाना चाहती है. वैज्ञानिकों को ऐसी वेरायटी डेवेलप करने के बारे में भी सोचना चाहिए, जिससे इथेनॉल का उत्पादन अधिक हो सके. डॉ पांडेय ने माइक्रो इरिगेशन में किसानों की समस्याओं पर भी चर्चा की.

प्रभात खबर
Wednesday, April 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ec358f085890aba4f3a946

जलवायु अनुकूल गन्ना के प्रभेद इजाद करने की जरूरत, यह समय की मांग : डॉ वीपी सिंह

प्रतिनिधि, पूसा

सभागार में मौजूद वैज्ञानिक.

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान संस्थान में पहली बार स्थापना दिवस समारोह मनाया गया. इसमें जलवायु अनुकूल गन्ना उत्पादन तकनीक और बिहार में गन्ना के उत्पादकता बढ़ाने के लिए परामर्श सेवाएं विषय पर तकनीकी सत्र के दौरान चिंतन किया गया. मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए पूर्व कुलपति डॉ वीपी सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में जलवायु अनुकूल गन्ने के प्रभेद इजाद करने की जरूरत है. गन्ना अनुसंधान संस्थान ने देश को सौ से ज्यादा गन्ना के प्रभेद दिये हैं. इसके अतिरिक्त कई रोगों की रोकथाम को लेकर तकनीक विकसित किये हैं. उन्होंने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिकों को गन्ना की उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान करना चाहिए. गुड़ उत्पादन को लेकर विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने कहा कि शिक्षा अनुसंधान और प्रसार क्षेत्रों में पिछले तीन वर्षों में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं. गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ देवेन्द्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया. कहा कि विश्वविद्यालय के गुड़ उत्पादों की विधानसभा में भी प्रस्तुत किया गया है. जिले के नयानगर के प्रगतिशील कृषक डॉ सुधांशु कुमार ने कहा कि उनकी विकास यात्रा में विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है. उन्होंने माइक्रो इरिगेशन को लेकर किसानों की समस्याओं के बारे में भी चर्चा की. हसनपुर चीनी मिल के प्रबंधक सुग्रीव पाठक ने कहा कि विवि से अनुसंधान किये गये गन्ना प्रभेदों से उत्पादक किसान बेहतर आय प्राप्त कर रहे हैं. संचालन डा सुनीता कुमारी मीणा ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वरीय वैज्ञानिक डॉ एसएन सिंह ने किया. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी, निदेशक बीज डॉ डीके राय, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ सीके झा, डॉ डीएन कामत, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि थे

प्रभात खबर
Wednesday, April 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ec358f085890aba4f3a946

भास्कर 2/5/25 पेज 12

कार्यक्रम • जलवायु अनुकूल गन्ना उत्पादन तकनीक और बिहार में गन्ना उत्पादकता को बढ़ाने के विषय पर वैज्ञानिकों की बैठक

संस्थान ने देश को सौ से ज्यादा गन्ने के प्रभेद दिए

उपलब्धि : गन्ना अनुसंधान संस्थान पूसा के स्थापना दिवस पर हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर जलवायु अनुकूल गन्ना उत्पादन तकनीक और बिहार में गन्ना उत्पादकता को बढ़ाने के विषय पर वैज्ञानिकों के बीच एक विचार- विमर्श सत्र का आयोजन किया गया।

इसका उद्घाटन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे पुसा विवि के पूर्व कुलपति डॉ. वीपी सिंह एवं वर्तमान कुलपति डॉ. पी एस पांडेय समेत अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूसा कृषि विवि के पूर्व कुलपति डॉ. वीपी सिंह ने कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान ने देश को सौ से ज्यादा गन्ने के प्रभेद दिये है। इसके अतिरिक्त भी संस्थान ने गन्ना में लगने वाले रोगों की रोकथाम को लेकर कई तकनीक भी विकसित किये है। उन्होंने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिकों को गन्ना की उत्पादकता को बढ़ाने व किसानों की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान करने चाहिए। उन्होंने गुड़ उत्पादन को लेकर विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की और कहा कि विश्वविद्यालय काफी तेजी से प्रगति कर रहा हैं। गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना और विकास की चर्चा करते हुए कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। उस इतिहास से सीख लेकर हमें नया इतिहास लिखना हैं। मंच संचालन डॉ. एस मीणा ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन वरीय वैज्ञानिक डॉ. एस एन सिंह ने किया। मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी, निदेशक बीज डॉ. डी के राय, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. राकेश मणि शर्मा, डॉ. सी के झा, डॉ. डीएन कामत, डॉ. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिक।

विवि के वैज्ञानिक जल्द ही किसानों के सपने को पूरा करेंगे

उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे मल्टी डिसिप्लिनरी टीम के साथ काम करें। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार गन्ना अनुसंधान को लेकर विश्वविद्यालय को काफी सहयोग कर रही है। उन्होंने बिहार सरकार के द्वारा विवि में सेंटर आफ एक्सीलेंस की स्थापना कराएं जाने पर सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय आने वाले समय में बिहार को गुड़ उत्पादन के क्षेत्र में देश में नंबर वन बनाना चाहता है। विवि के वैज्ञानिक बिहार सरकार के सहयोग से जल्द ही इस सपने को पूरा करेंगे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को ऐसी वेराईटी डेवेलप करने के बारे में सोचना चाहिए जिससे इथेनॉल का उत्पादन अधिक हो सके। उन्होंने कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान में सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स शुरू करने को लेकर भी प्रयास किये जा रहे है। कुलपति ने माइक्रो इरिगेशन में किसानों को होने वाली समस्याओं पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज के तकनीकी सत्र से निश्चित ही ऐसे निष्कर्ष निकलेंगे जो किसानों के लिए हितकारी होंगे। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय गन्ना किसानों के लिए एक मोबाइल एप विकसित करने पर काम कर रहा है। जल्द ही इस एप को लांच किया जाएगा।

शिक्षा अनुसंधान व प्रसार तीनों क्षेत्रों में पिछले तीन वर्षों में ऐतिहासिक कार्य हुए

निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह ने विश्वविद्यालय के उपलब्धियों की चर्चा की और कहा कि शिक्षा अनुसंधान और प्रसार तीनों क्षेत्रों में पिछले तीन वर्षों में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं जिसका असर अब स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। उन्होंने कुलपति के दूरदर्शी नेतृत्व की सराहना की। गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और संस्थान की प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए गुड़ के विभिन्न उत्पादों के बारे में भी वैज्ञानिकों एवं अन्य लोगों को बताया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के गुड़ उत्पादों को बिहार विधानसभा में भी सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है और सभी सदस्यों ने उत्पादों की काफी तारीफ की है। प्रगतिशील कृषक डॉ. सुधांशु कुमार ने कहा कि उनकी विकास यात्रा में विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने माइक्रो इरिगेशन के उपयोग में आने वाली समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए जिसमें गन्ना की उत्पादकता बढ़ाने और जलवायु अनुकूल गन्ना के विकास को लेकर विभिन्न वैज्ञानिकों ने बाह्य विशेषज्ञों के साथ अपने अनुसंधान से संबंधित जानकारी को साझा किया।

भास्कर 2/4/25 पेज 11

मौसम पूर्वानुमान • 4 से 9 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलने की जताई गई संभावना

6 अप्रैल तक आसमान में हल्के बादल छाए रहने के आसार किसान गेहूं की कटाई तेज करें, आगे बदल सकता है मौसम

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 2 से 6 अप्रैल तक आसमान में हल्के बादल छाए रह सकते हैं। मौसम शुष्क रहने की संभावना है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग के अनुसार इस दौरान अधिकतम तापमान 36 से 39 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 17 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पछिया हवा 4 से 9 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकती है। सुबह की सापेक्ष आर्द्रता 75 से 85 प्रतिशत और दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। मंगलवार को अधिकतम तापमान 36.8 डिग्री और न्यूनतम तापमान 13.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए वैज्ञानिकों ने किसानों को गेहूं की कटाई को प्राथमिकता देने की सलाह दी है। तापमान बढ़ने से फसलों में पानी की मांग बढ़ सकती है। खड़ी फसलों में जरूरत के अनुसार सिंचाई करें। गरमा मूंग और उरद की बुआई 10 अप्रैल से पहले पूरी करें। खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो स्फूर, 20 किलो पोटाश और 20 किलो गंधक का प्रयोग करें।

आम के मंजरों में लगे दाने।

बुआई से पहले बीजों को करें उपचारित

मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 और सोना किस्में उपयुक्त हैं। उरद के लिए पंत उरद-19, पंत उरद-31, नवीन और उत्तरा किस्में अनुशंसित हैं। बुआई से दो दिन पहले बीज को कार्बेन्डाजीम 2.5 ग्राम प्रति किलो की दर से शोधित करें। बुआई से ठीक पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। छोटे दानों के लिए बीज दर 20-25 किलो और बड़े दानों के लिए 30-35 किलो प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30x10 सेंटीमीटर रखें। गरमा सब्जियों जैसे भिंडी, नेनुआ, करेला, लौकी और खीरा की बुआई तुरंत पूरी करें। पहले से बोई गई फसलों में जरूरत के अनुसार निकाई-गुड़ाई करें। कीटों की निगरानी करें। कीट दिखने पर मैलाथियान 50 ईसी या डाइमेथोएट 30 ईसी की 1 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। लत्तर वाली सब्जियों में लाल मूंग कीट से बचाव के लिए डाइक्लोरवॉस 76 ईसी की 1 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर सुबह पौधों पर भुरकाव करने से कीट का प्रकोप कम होता है।

गन्ना अनुसंधान संस्थान का गौरवशाली इतिहास : कुलपति

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के गन्ना अनुसंधान संस्थान का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जलवायु अनुकूल गन्ना उत्पादन तकनीक और बिहार में गन्ना उत्पादकता बढ़ाने को लेकर एक विमर्श सत्र का आयोजन किया गया। अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डा. पी एस पांडेय ने गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना और विकास की चर्चा की। कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान का गौरव शाली इतिहास रहा है। उस इतिहास से सीख कर हमें नया इतिहास लिखना है। विज्ञानियों को ऐसी वेरायटी डेवेलप करने के बारे में भी सोचना चाहिए जिससे इथेनाल का उत्पादन अधिक हो

गन्ना अनुसंधान संस्थान के 94 वें स्थापना दिवस मनी, राज्य सरकार करेगी सेंटर आफ एक्सीलेंस की स्थापना

सके। उन्होंने कहा कि संस्थान को सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स शुरू करने को लेकर भी प्रयास करने की जरूरत है। कुलपति ने माइक्रो इरिगेशन में किसानों की समस्याओं पर भी चर्चा की और कहा कि विश्वविद्यालय गन्ना किसानों के लिए एक मोबाइल एप विकसित करने पर काम कर रहा है और जल्द ही इसे पूरा होने की संभावना है। मुख्य अतिथि राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. वीपी सिंह ने कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान ने देश को सौ से ज्यादा गन्ना के प्रभेद दिए हैं। रोगों की रोकथाम को लेकर तकनीक विकसित किया है। निदेशक अनुसंधान डा. ए के सिंह ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की चर्चा की और कहा कि शिक्षा अनुसंधान और प्रसार क्षेत्र में पिछले तीन वर्षों में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं।

संबोधन करते कुलपति व मंच पर मौजूद वैज्ञानी • जागरण

गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. देवेन्द्र सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और संस्थान की प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्रगतिशील कृषक डा. सुधांशु कुमार ने कहा कि उनकी विकास यात्रा में विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने माइक्रो इरिगेशन को लेकर किसानों की समस्याओं के बारे में भी चर्चा की।

कार्यक्रम के दौरान दो तकनीकी सत्र हुए। इसमें गन्ना की उत्पादकता बढ़ाने और जलवायु अनुकूल गन्ना के विकास को लेकर विभिन्न विज्ञानियों ने अपने अनुसंधान से संबंधित जानकारियां साझा की और विचार विमर्श किया। मंच संचालन डा एस मीणा ने किया धन्यवाद ज्ञापन वरीय विज्ञानी डा. एसएन सिंह ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान डा. ए के सिंह, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, निदेशक छात्र कल्याण डा. रमन त्रिवेदी, निदेशक बीज डा. डी के राय , पुस्तकालय अध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा,डा. सी के झा, डा. डीएन कामत भी उपस्थित रहे।

DAinik Jagran 02-04-2025

तापमान 39 डिग्री पहुंचने की संभावना

पूसा। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस दौरान औसतन 4 से 9 किमी.प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चलने की संभावना भी है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने 6 अप्रैल तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 36 से 39 डिग्री एवं न्यूनतम 17 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

Hindustan 02-04-2025

अधिक ईथेनाल उत्पादकता वाले गन्ना प्रभेद को विकसित करने की जरूरत : डॉ पीएस पांडेय

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ईख अनुसंधान संस्थान का स्थापना दिवस मंगलवार को मनाया गया। इस अवसर पर जलवायु अनुकूल गन्ना उत्पादन तकनीक और बिहार में गन्ना उत्पादकता बढ़ाने को लेकर एक विमर्श सत्र का आयोजन किया गया। अतिथियों के स्वागत सम्मान व वीसी सहित अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन के बाद मुख्य अतिथि राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ वीपी सिंह ने कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान ने देश को सौ से ज्यादा गन्ना के प्रभेद दिये है। साथ ही गन्ना में लगने वाले रोगों की रोकथाम से जुड़े तकनीक विकसित किये है। उन्होंने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिकों को गन्ना की उत्पादकता बढ़ाने व किसानो की समस्याओं पर आधारित अनुसंधान करना चाहिए। गुड़ उत्पादन को लेकर विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय काफी तेजी से प्रगति पथ पर अग्रसर है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना, उद्देश्य एवं विकास की चर्चा करते हुए कहा कि अनुसंधान संस्थान के गौरवशाली अतीत से सीख कर हमें नया इतिहास लिखने कि जरूरत है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे मल्टी डिसिप्लिनरी टीम के साथ काम करें। इस दौरान उन्होंने बिहार सरकार के द्वारा सेंटर आफ एक्सीलेंस की स्थापना को लेकर धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय बिहार को गुड़ उत्पादन के क्षेत्र में देश में नंबर वन बनाना चाहती है और बिहार सरकार के सहयोग से जल्द ही यह सपना पूरा होगा। डॉ पाण्डेय ने कहा कि मौजूदा दौर में वैज्ञानिकों को कम जलधारण वाले गन्ने का ऐसा प्रभेद विकसित करने के बारे में भी सोचना चाहिए जिससे इथेनॉल का उत्पादन अधिक हो सके। उन्होंने संस्थान को सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स शुरू करने को लेकर भी प्रयास करने की जरूरत पर बल दिया। डॉ पांडेय ने माइक्रो इरिगेशन में किसानों की आने वाली समस्याओं पर भी चर्चा की और कहा कि आज के तकनीकी सत्र से निश्चित ही ऐसी निष्कर्ष निकलेंगे जो किसानों के लिए हितकारी होंगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय गन्ना उत्पादक किसानों के लिए एक मोबाइल एप विकसित करने पर काम कर रहा है जल्द ही यह पूरा हो जायेगा। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि विवि में शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार तीनो क्षेत्रों में पिछले तीन वर्षों में ऐतिहासिक कार्य हुए है। जिसका असर अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। इसके पुर्व गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ देवेन्द्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विषय प्रवेश के दौरान संस्थान की प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए गुड़ के विभिन्न उत्पादों के बारे में जानकारी दी। प्रगतिशील किसान डॉ सुधांशु कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए विवि से मिले सहयोग की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन डॉ सुनीता कुमारी मीणा ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन वरीय वैज्ञानिक डॉ एसएन सिंह ने किया। इस दौरान निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी, निदेशक बीज डॉ डीके राय, अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ सीके झा, डॉ डीएन कामत, डॉ कुमार राज्यवर्धन, डॉ तुलिका सहित कई वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

उद्घाटन करते वीसी व अन्य।

Rashtriya Sahara 02-04-2025

मौसम रहेगा शुष्क, 40 के करीब जायेगा पारा

समस्तीपुर। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 02-06 अप्रैल, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते है। हलाकि इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 36 से 39 डिग्री सेल्सियस वही न्यूनतम तापमान 17 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 9 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara
02-04-2025

हल्की बारिश की संभावना, किसान बरतें सावधानी

समस्तीपुर. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्तार ने कहा है कि उत्तर पश्चिम व दक्षिण बिहार के जिलों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा व बूंदाबांदी हो सकती है. इस स्थिति को देखते हुये किसानों को सलाह दी जाती है कि गेहूं की कटाई और कृषि कार्यों में सावधानी बरतें.आज का अधिकतम तापमान 34.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.3 अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 14.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 4.8 डिग्री सेल्सियस कम रहा. सुबह में सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत रहा, वहीं दोपहर में सापेक्ष आर्द्रता 51 प्रतिशत रहा.

प्रभात खबर
Thursday, April 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ed88bb9167da97a946de

मौसम एलर्ट : अगले 24 घंटे में हो सकती है हल्की बारिश

समस्तीपुर। उत्तर-पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम बिहार के जिलों में कहीं-कहीं अगले 24 घंटे में हल्की वर्षा या बूंदा-बूंदी हो सकती है। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डॉ अब्दुल सत्तार ने उक्त जानकारी देते हुए कहा है कि इस स्थिति को देखते हुए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि गेहूं की कटाई एवं .षि कार्यों में सावधानी बरतें। मौसम के अनुसार कटे हुए गेहुं को सुरक्षित कर लें, और तदनुरूप दौनी कर भंडारन कर लें।

Rashtriya Sahara
03-04-2025

रंगीन मछली का पालन कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं किसान : डॉ श्याम

पूसा (एसएनबी) । डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा परिसर स्थित पंचतंत्र भवन के सभागार में समेकित मत्स्य पालन से बेहतर उत्पादन विषय पर आधारित छरू दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत किया गया। जिसमें बिहार के गया जिले के 30 किसान शामिल है। उपस्थित वैज्ञानिक डॉ फुल चंद्र ने मत्स्य पालन के दौरान होने वाले रोगों की पहचान व उससे जुड़े उपचार की जानकारी दिया। वहीं उपस्थित जिला मत्स्य पदाधिकारी मृणाल कुमार ने प्रशिक्षुओं से कहा कि प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान को जमीनी स्तर पर उतारे और लोगों से साझा करें। जबकि उपस्थित वैज्ञानिक डॉ श्याम कुमार ने सजावटी मछली की मांग और उपलब्ध बाजार के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि किसान रंगीन मछली का पालन कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ विनीता सत्पती ने कहा कि मछली उत्पादन के क्षेत्र में बिहार की उत्पादकता क्षमता बढ़ी है । उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना सहित बिहार सरकार की ओर से चलाए जा रहे मत्स्य पालन से जुड़े विकास योजना की जानकारी दिया। उन्होंने ने कहा कि मछली उत्पादक किसान समेकित मत्स्य पालन में नवीनतम तकनीक को अपनाकर कर अपनी आय को बढ़ा सकते है। उन्होंने प्रशिक्षुओं को मछली के विभिन्न प्रजातियों की जानकारी दी।

प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षु व प्रशिक्षक।

Rashtriya sahara 05-04-2025

श्रद्धालुओं की सुविधा पर होगा विशेष फोकस

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित महावीर मानस मंदिर के पुजारी गौतम मिश्रा की देखरेख में चैती नवरात्र की धूम देखी जा रही है. प्रखंड के ओईनी स्थित महाकवि विद्यापति की कर्मस्थली ओईनी डीह स्थित चैती दुर्गा स्थान में पूजा समिति के कुल पुरोहित पंडित शंकर झा के निर्देशन में माता दुर्गा की पूजा-अर्चना जारी है. पंडित झा ने बताया कि गुरुवार को पांचवें दिन माता के छठे स्वरूप, शक्ति, साहस और विजय का प्रतीक कात्यायनी माता की पूजा की गई. पूजा समिति के अध्यक्ष धनन्जय कुमार झा ने बताया कि गत वर्षों में जुटने वाली भीड़ से सबक लेते हुए इस बार श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा के लिए खास इंतजाम किये हैं. जिसमें करीब गांव के 100 युवा स्वयंसेवकों की टीम तैनात रहेगी. चप्पे-चप्पे में शोहदों पर नजर रखने एवं त्वरित कार्रवाई के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस भी तैनात रहेगी. इस अवसर पर उदय कुमार चौधरी, राकेश ठाकुर, कुमार विकास, चंदन कुमार झा, सन्त सुमन, पांचू पासवान, सुधांशु कुमार मुंशी, श्याम कुमार, आशीष कुमार पूजा के सफल संचालन में जुटे दिखे.

प्रभात खबर
Friday, April 4, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67eedbf063a1f9090c6eaf4e

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 5 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में अभी और भी बढ़ोतरी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
04 अप्रैल	38.0	22.0
05 अप्रैल	38.2	22.0
दरभंगा		
04 अप्रैल	38.2	22.0
05 अप्रैल	38.2	22.3
पटना		
04 अप्रैल	39.0	23.0
05 अप्रैल	39.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 04-04-2025

मछलीपालन प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत

कार्यक्रम

वैज्ञानिक के साथ प्रतिभागी .

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र भवन के सभागार में समेकित मत्स्यपालन के बेहतर उत्पादन विषय छः दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गयी. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने कहा कि समेकित मत्स्यपालन में बेहतर उत्पादन के लिए, मछलीपालन के साथ कृषि और पशुपालन को जोड़ कर संसाधनों का बेहतर उपयोग किया जाता है. जिससे आहार की कमी दूर होती है. आय बढ़ती है और पर्यावरण को भी लाभ होता है.

मछलीपालन से प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत मिलता है जो आहार में कमी को दूर करने में मदद करता है. समेकित मत्स्य पालन से किसानों को आर्थिक रूप से लाभ होता है, क्योंकि वे विभिन्न उत्पादों को बेचकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं. कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ शतपथी ने कहा कि मछली उत्पादन के क्षेत्र में बिहार की उत्पादकता क्षमता बढ़ी है. उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना सहित बिहार सरकार की ओर से चलाए जा रहे मत्स्यपालन से जुड़े विकास योजना की जानकारी दी. उन्होंने ने कहा कि मछली उत्पादक किसान समेकित मत्स्यपालन में नवीनतम तकनीक को अपनाकर कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं. उन्होंने प्रशिक्षुओं को मछली के विभिन्न प्रजातियों की जानकारी दी. प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जायेगा. जिसमें बिहार के गया जिले के 30 किसान शामिल हैं. वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने मत्स्यपालन के दौरान होने वाले रोग की पहचान व उससे जुड़े उपचार की जानकारी दी. जिला मत्स्य विकास पदाधिकारी मृणाल कुमार ने प्रशिक्षुओं से कहा कि प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान को जमीनी स्तर पर उतारे और लोगों से साझा करें. वैज्ञानिक श्याम कुमार ने कहा कि किसान रंगीन मछली का पालन कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं. मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Saturday, April 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67f02e3ca9bbbcb0cc3f843d

भास्कर 5/4/25 पेज 15

मौसम • अधिकतम तापमान 37 से 39 डिग्री व न्यूनतम तापमान 17 से 20 डिग्री के बीच रह सकता है

9 अप्रैल को तेज हवा व हल्की बारिश के आसार, गेहूं की कटाई जल्द करें, 17-20 किमी की रफ्तार से चलेगी हवा

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 5 से 9 अप्रैल तक आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। मौसम शुष्क रहने की संभावना है। 9 अप्रैल के आसपास मैदानी इलाकों में बिजली गिरने और 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलने के साथ हल्की बारिश हो सकती है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग के अनुसार इस दौरान अधिकतम तापमान 37 से 39 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 17 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पछिया हवा औसतन 10 से 15 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से एक दिन चलेगी। इसके बाद पुरवा हवा चलने की संभावना है। सुबह सापेक्ष आर्द्रता 75 से 85 प्रतिशत और दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रह सकती है। वैज्ञानिकों ने किसानों को मौसमी हालात को देखते हुए सुझाव दिए हैं। शुष्क मौसम को ध्यान में रखते हुए गेहूं और मक्का की तैयार फसल की कटाई और दौनी करें। दानों को अच्छी तरह धूप में सुखाकर भंडारण करें। आम में मटर के दाने के बराबर फल आ चुके हैं। इस अवस्था में मधुवा और चूर्णिल आसिता रोग की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोरप्रीड 17.8 एसएल की 1 मिली दवा को 2 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। हैक्साकोनाजोल 1 ग्राम को 2 लीटर पानी या डाइनोकैप 46 ईसी की 1 मिली दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से रोग की तीव्रता कम होती है। प्लेनोफिक्स नामक दवा की 1 मिली मात्रा को 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से फल झड़ने की समस्या कम होती है।

आम के पेड़ में आया टिकोला।

गरमा मूंग और उरद की बुआई पूरी करें किसान

गरमा मूंग और उरद की बुआई प्राथमिकता से पूरी करें। खेत की जुताई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाश और 20 किलोग्राम गंधक का प्रयोग करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 और सोना किस्में उपयुक्त हैं। उरद के लिए पंत उरद-19, पंत उरद-31, नवीन और उत्तरा किस्में अनुशंसित हैं। बुआई से दो दिन पहले बीज को कार्बन्डाजीम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से शोधित करें। बुआई से ठीक पहले बीज को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करें। छोटे दानों की किस्मों के लिए बीज दर 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और बड़े दानों के लिए 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30x10 सेंटीमीटर रखें। ओल की फसल के लिए गजेन्द्र किस्म की बुआई करें। 0.5 किलोग्राम वजन वाले कंदों को 75x75 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाएं। इससे कम वजन के कंदों की रोपाई न करें। बीज दर 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई से पहले प्रत्येक गड्ढे में 3 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट या 10 ग्राम यूरिया, 37.5 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 16 ग्राम पोटेशियम सल्फेट डालें।

भास्कर 5/9/25 पेज 17

कृषि • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में समेकित मत्स्य पालन विषय पर प्रशिक्षण

समेकित मत्स्यपालन कर कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करें : डॉ. विनीता

मछलियों से विभिन्न उत्पाद बनाकर उसे बेचकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं किसान

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र भवन सभागार में बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए समेकित मत्स्य पालन करने के विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में मत्स्यपालन में रुचि रखने वाले गया जिले से पहुंचे कुल 30 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन विवि की प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ. बिनीता सतपति, डॉ. फुलचंद्र आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. विनीता सतपति ने कहा की प्रशिक्षणार्थी समेकित मत्स्यपालन कर कम लागत में ज्यादा मछलियों का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। किसान समेकित मत्स्यपालन के तहत कृषि और पशुपालन को आपस में जोड़कर सभी संसाधनों का बेहतर प्रयोग करते हुए मछली पालन कर सकते है। इस तकनीक से मछलीपालन करने पर मत्स्यपालकों की जहाँ आय बढ़ती है। वहीं पर्यावरण को भी काफी लाभ पहुंचता है। उन्होंने कहा कि मछलियों में काफी मात्रा में प्रोटीन मौजूद रहता है। उन्होंने कहा कि समेकित मत्स्य पालन के तहत मत्स्यपालक मछलियों से विभिन्न उत्पाद बनाकर भी उसे बेचकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि मछली उत्पादन के क्षेत्र में बिहार की उत्पादकता क्षमता बढ़ी है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना सहित बिहार सरकार की ओर से चलाए जा रहे विभिन्न मत्स्य पालन से जुड़े विकास योजनाओ के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने मछली के विभिन्न प्रजातियों के बारे में भी प्रशिक्षणार्थियों को बताया।

प्रशिक्षणार्थियों के साथ डॉ. विनीता सतपति व अन्य वैज्ञानिक।

सैद्धांतिक व प्रायोगिक जानकारी दी जाएगी

प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान सैद्धांतिक व प्रायोगिक जानकारी दी जाएगी। डॉ. फुलचंद्र ने कहा कि समेकित मत्स्यपालन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है क्योंकि इसके तहत मछली पालन को अन्य कृषि गतिविधियों जैसे पशुपालन और बागवानी से जुड़े संसाधनों का प्रयोग करते हुए किया जाता है। उन्होंने मत्स्य पालन के दौरान मछलियों को होने वाले रोग, उसकी पहचान व उससे जुड़े उपचार की जानकारी भी प्रशिक्षणार्थियों को दी। जिला मत्स्य पदाधिकारी मृणाल कुमार ने प्रशिक्षुओं से कहा कि वे प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान को जमीन पर उतारकर ज्यादा से ज्यादा लोगों के साथ इस ज्ञान को साझा करें। वैज्ञानिक श्याम कुमार ने कहा कि किसान रंगीन मछली का पालन करके भी अपनी आय को बढ़ा सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 7 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में अभी और भी बढ़ोतरी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
05 अप्रैल	38.0	22.0
06 अप्रैल	38.2	22.0
	दरभंगा	
05 अप्रैल	38.2	22.0
06 अप्रैल	38.2	22.3
	पटना	
05 अप्रैल	39.0	23.0
06 अप्रैल	39.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 5/4/25 पेज 5

पूसा में मछली पालन पर छह दिवसीय प्रशिक्षण हुआ शुरू

पूसा, निसं। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनीता छत्रपति ने कहा कि बीते 10 वर्षों में राज्य में मछली उत्पादन दोगुना हुआ है।

इसमें सरकार की प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना जैसी योजनाओं से लोग प्रोत्साहित हो इस दिशा में तेजी से बढ़ रहे है। अब जरूरत है मछली उत्पादन के साथ इसके उत्पाद से जुड़े रोजगार को बढ़ावा देने की। वे शुक्रवार को कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में गया जिले से आए किसानों और प्रसार कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रही थी। मौका था बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि सजावटी मछली से जुड़ा कारोबार भी तेजी बढ़ रहा है। उन्होंने किसानों से मछली पालन के नवीनतम तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया है।

Hindustan 05-04-2025

जिले में 9 अप्रैल को तेज हवा संग गिर सकती है बिजली

पूसा, निज संवाददाता । उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक हल्के बादल रह सकते है। इस दौरान मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस दौरान 09 अप्रैल के आसपास मैदानी भाग के जिलो में बिजली गिरना और तेज हवा (40-50 किलोमीटर प्रति घंटे) के साथ हल्की वर्षा हो सकती है।

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने 9 अप्रैल तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की गति से अगले एक दिन तक पछुआ हवा व उसके बाद पुरवा हवा चलने की संभावना है। पूर्वानुमान की अवधि में सुबह में 75 से 85 एवं दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 37 से 39 डिग्री एवं न्यूनतम 17 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।

Hindustan 05-04-2025

रंगीन मछली का पालन कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं किसान : डॉ श्याम

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा परिसर स्थित पंचतंत्र भवन के सभागार में समेकित मत्स्य पालन से बेहतर उत्पादन विषय पर आधारित छरू दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत किया गया। जिसमें बिहार के गया जिले के 30 किसान शामिल है। उपस्थित वैज्ञानिक डॉ फुल चंद्र ने मत्स्य पालन के दौरान होने वाले रोगों की पहचान व उससे जुड़े उपचार की जानकारी दिया। वहीं उपस्थित जिला मत्स्य पदाधिकारी मृणाल कुमार ने प्रशिक्षुओं से कहा कि प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान को जमीनी स्तर पर उतारे और लोगों से साझा करें। जबकि उपस्थित वैज्ञानिक डॉ श्याम कुमार ने सजावटी मछली की मांग और उपलब्ध बाजार के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि किसान रंगीन मछली का पालन कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ विनीता सत्पती ने कहा कि मछली उत्पादन के क्षेत्र में बिहार की उत्पादकता क्षमता बढ़ी है । उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना सहित बिहार सरकार की ओर से चलाए जा रहे मत्स्य पालन से जुड़े विकास योजना की जानकारी दिया। उन्होंने ने कहा कि मछली उत्पादक किसान समेकित मत्स्य पालन में नवीनतम तकनीक को अपनाकर कर अपनी आय को बढ़ा सकते है। उन्होंने प्रशिक्षुओं को मछली के विभिन्न प्रजातियों की जानकारी दी।

प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षु व प्रशिक्षक।

Rashtriya sahara 05-04-2025

9 अप्रैल के आसपास बिजली गिरने और तेज हवा के साथ हल्की बारिश की संभावना

समस्तीपुर। 09 अप्रैल के आसपास मैदानी भागों के जिला में बिजली गिरना और 40-50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा के साथ हल्की वर्षा हो सकती है। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा,एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 05-09 अप्रैल, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते है। हलाकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 37 से 39 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 17 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले एक दिन पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा चलने की सम्भावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya sahara
05-04-2025

भास्कर 6/4/25 पेज 17

कार्यक्रम • कृषि विवि पूसा में वैज्ञानिकों की इंटरफेस बैठक सह कार्यशाला का आयोजन

कृषि को विकासशील बनाने के लिए विवि व सरकार को कदम मिलाकर चलना होगा

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में बिहार में कृषि विस्तार गतिविधियों को सुव्यवस्थित और संवर्धित करने के विषय पर वैज्ञानिकों की एक इंटरफेस बैठक सह कार्यशाला आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि बिहार में कृषि को विकासशील बनाने के लिए विवि एवं राज्य सरकार के विभिन्न अंगों को कदम से कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि केपिसिटी बिल्डिंग के लिए शिक्षा में भी सुधार लाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कृषि विकास के क्षेत्र में बिहार प्रथम स्थान पर है लेकिन इस बात की कमी है कि इस बेहतरी का डॉक्यूमेंटेशन नहीं हो रहा है। इस पर वैज्ञानिकों को पॉजिटिव सोच के साथ कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर में उर्वरक विक्रेताओं के लिए डिप्लोमा कोर्स की शुरुआत की गई हैं। इस विषय से संबंधित जानकारी उपलब्ध रहने के बावजूद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में उर्वरक विक्रेताओं के लिए डिप्लोमा कोर्स की शुरुआत क्यों शुरू नहीं हो पाई। इस विषय पर वैज्ञानिकों को समीक्षा करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विवि के माध्यम से वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट पर कार्य किया जा रहा है। अब बिहार के सभी प्रखंडों को चिह्नित कर किसानों के खेतों में तकनीकी विकास पर कार्य करने की आवश्यकता है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि मिलेट्स के क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रहा

कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति व मौजूद अन्य अतिथि।

कई जिलों के किसान लाभान्वित

उन्होंने कहा की चौथा कृषि रोडमैप में छात्र छात्राओं का अत्यधिक झुकाव देखा जा रहा है। छात्र-छात्राओं के इस झुकाव को और गति प्रदान करने की जरूरत है। विवि मिलेट्स के क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रहा है। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम से बिहार के विभिन्न जिलों के किसान लाभान्वित हो रहे है। उन्होंने कहा कि राजेंद्र सोनिया हल्दी देश में प्रथम स्थान पर है। स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय ने किया। वर्कशॉप में विषय प्रवेश जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कराया। इससे पहले कुलपति समेत अन्य अतिथियों ने दीप जलाकर वर्कशॉप का शुभारंभ किया।

दर्जनों परियोजनाएं संचालित की जा रही

निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि बिहार सरकार का बजट अनुसंधान, कृषि शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में अग्रणी है। बामेती के सहयोग से दर्जनों परियोजना संचालित किये जा रहे है। विशिष्ट अतिथि के तौर पर बोलते हुए बिहार सरकार के बामेती के निदेशक धनंजय पति त्रिपाठी ने कहा कि बामेती के सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों में प्रसार से जुड़े गतिविधियों पर कार्य संचालित हो रहा है। आत्मा के सहयोग से किसानों को फील्ड में ही प्रशिक्षण देने का प्रावधान बनाया जा रहा है। क्षेत्र में क्रियाशील एटीएम बीटीएम से आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि किसानों से खरीफ सीजन में खेतों के मेर पर अरहर की खेती कराने के लिए उन्हें प्रेरित करना चाहिए। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक सह प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा. विनीता सतपथी ने किया।

शिक्षा में सुधार लाने की जरूरत : कुलपति

राज्य में कृषि के विकास के लिए इंटरफेस बैठक सह कार्यशाला का किया आयोजन

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित पंचतंत्र सभागार में शनिवार को बिहार में कृषि विस्तार गतिविधियों को सुव्यवस्थित और संवर्धित करने को लेकर शनिवार को इंटरफेस बैठक सह कार्यशाला आयोजित हुई। अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डा. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि बिहार में कृषि को विकासशील बनाने के लिए विश्वविद्यालय एवं राज्य सरकार के विभिन्न अंगों को कदम से कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता है। हीं कैपिसिटी बिल्डिंग के लिए शिक्षा में सुधार लाने की जरूरत है। कृषि विकास के क्षेत्र में बिहार प्रथम स्थान पर है। सिर्फ कमी इस बात की है कि इस बेहतरी का डाक्यूमेंटेशन नहीं हो रहा है। इस पर वैज्ञानिकों को पाजिटिव सोच के साथ कार्य करने की जरूरत है। बिहार कृषि विश्वविधालय सबौर में उर्वरक विक्रेताओं के लिए डिप्लोमा कोर्स की शुरुआत कर दी गई। जानकारी उपलब्ध रहने के बावजूद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में क्यों शुरू नहीं हो सका इस विषय पर वैज्ञानिकों को समीक्षा करने की जरूरत है। राजेंद्र सोनिया हल्दी देश में प्रथम स्थान पर है। इसे किसानों के लिए रिलीज करने की दिशा में पहल हो रही है। स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने किया। कार्यशाला में विषय प्रवेश शष्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डा रत्नेश कुमार झा ने कराया। इससे पहले दीप प्रज्वलित कर अतिथियों ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। निदेशक अनुसंधान डा. अनिल कुमार सिंह और विशिष्ट अतिथि बिहार सरकार निदेशक बामेती धनंजय पति त्रिपाठी ने कहा कि बामेती के सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों में प्रसार गतिविधियां पर कार्य संचालित है। खरीफ मक्का एवं अरहर की बीज 50 प्रतिशत के अनुदान पर उपलब्ध है। कहा कि किसानों को खरीफ सीजन में खेतों के मेड़ पर अरहर की खेती करने की दिशा में पहल की जानी चाहिए। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा. बिनीता सतपथी ने की। मौके पर डीन डा. पीपी श्रीवास्तव, डा. रामसुरेश, डा. आरके झा, डा. आरके तिवारी, डा. दिव्यांशु शेखर, डा. विनय कुमार शर्मा, आत्मा उप निदेशक शारदा शर्मा, प्रमोद कुमार मिश्रा, रंजीत प्रताप पंडित, राम बिनोद कुमार साह, नीरज कुमार, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार व विक्की आदि मौजूद रहे।

कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति, उपस्थित वैज्ञानिक व कृषि पदाधिकारी • जागरण

Dainik Jagran 06-04-2025

लोगों को लुभा रही है विवि से विकसित मशरूम बड़ी

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मशरूम विभाग से विकसित मशरूम बड़ी इन दिनों लोगों को काफी लुभा रही है। विवि से विकसित इस मशरूम बड़ी में 22 प्रतिशत तक प्रोटीन उपलब्ध है। सब्जियों में बड़ी के शौकीन लोग इसका लगातार सेवन कर रहे हैं। खासकर वैसे लोग जो पूर्व में बाजार से खरीद कर बड़ी खाते थे। अब वे विवि के इस प्रोडक्ट का सेवन कर रहे हैं।

Hindustan 06-04-2025

बिहार में कृषि विस्तार गतिविधियों को सुव्यवस्थित तरीके से बढ़ाने पर इंटरफेस मीटिंग सह कार्यशाला आयोजित

कृषि विकास और उपलब्धियों में बिहार अग्रणी, मॉनिटरिंग की जरूरत : कुलपति

शनिवार को कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में संबोधित करते कुलपति व निदेशक ।

पंचतंत्र सभागार में विवि के डीन-डायरेक्टर, केवीके के पीसी व बामेति से जुड़े अधिकारी।

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि कृषि क्षेत्र के विकास व उपलब्धियों में बिहार अग्रणी राज्यों में शामिल है। यह सरकार की नीति, कृषि वैज्ञानिको की तकनीक व किसानों की लगन व मेहनत का परिणाम है। जरूरत है विकास गति को तेज करते हुए कार्यो के डाक्यूमेंटेशन करने की। वे शनिवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में बोल रहे थे।

मौका था बिहार में कृषि विस्तार गतिविधियों को सुव्यवस्थित और बढ़ाने पर इंटरफेस मीटिंग सह कार्यशाला का। उन्होंने कहा कि देश को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा व प्रशिक्षण की गुणवत्ता को उत्कृष्ट बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अब प्रखंड स्तर पर फसलो को चिन्हित कर विस्तारित करने की जरूरत है। कहा कि हल्दी की सोनिया वेराईटी गुणवत्ता में देश में नंबर एक पर है। उन्होंने कृषि से जुड़े विकास कार्यो की लगातार मोनिटरिंग करने पर बल दिया। बामेति के निदेशक डॉ.धनंजयपति त्रिपाठी ने सरकार की विकास योजनाओं की चर्चा करते हुए खाद-बीज दुकानो के लिए आयोजित प्रशिक्षण समेत अन्य प्रशिक्षणों की जानकारी देते हुए किसानो की जरूरतो के अनुरूप गांव में ही प्रशिक्षण देने की अपील की। इसके अलावा खरीफ मक्का व प्याज, मिलेट्स, धान की हाईब्रीड वेराईटी के विस्तार पर चर्चा की। इस दौरान डीईई डॉ.मयंक राय, डीआर डॉ.अनिल कुमार सिंह, डॉ.रत्नेश कुमार झा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया। संचालन डॉ.विनिता क्षत्रपति ने किया। मौके पर आत्मा के राज्य समन्वयक डॉ.प्रमोद कुमार मिश्रा, उपनिदेशक शारदा शर्मा, रंजीत कुमार पंडित, राम बिनोद कुमार, नीरज कुमार समेत विवि के डीन-डायरेक्टर, केवीके के पीसी मौजूद थे।

विवि में 89 वैज्ञानिकों की हुई नियुक्ति

- कृषि विज्ञान केंद्र की कमी जल्द होगी दूर
- चयनित वैज्ञानिक 22 राज्यों से जुड़े हैं

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि में 89 वैज्ञानिको की नियुक्ति की गई है। जिसमें 85 सहायक प्राध्यापक के पद पर हैं। चयनित वैज्ञानिक 22 राज्यो से जुड़े हैं।

जल्द ही जरूरतमंद विभागों में वे कार्य करेंगे। वे शनिवार को विश्विद्यालय के पंचतंत्र सभागार में एक समारोह के दौरान उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि चयनित वैज्ञानिक बेहतर प्रदर्शन कर विश्विद्यालय के विकास गति तेज करने में अहम योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि वर्ष के अंत तक कृषि विज्ञान केन्द्रो की कमी को भी पूरा करने की दिशा में विश्विद्यालय कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि नये वैज्ञानिको से काफी उम्मीदें हैं।

उन्होंने सरकार से केन्द्रीय कृषि विज्ञान केन्द्रों को आवंटित कार्य को नहीं पूरा करने वालो की पूरी रिपोर्ट दो दिनों में देने का भी निर्देश दिया है।

Hindustan 06-04-2025

कृषि विस्तार गतिविधियों को सुव्यवस्थित करने पर इंटरफेस बैठक

कैपिसिटी बिल्डिंग के लिए शिक्षा में सुधार लाने की जरूरत : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बिहार में कृषि विस्तार गतिविधियों को सुव्यवस्थित और संवर्धित करने पर इंटरफेस बैठक-सह-कार्यशाला हुई. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि बिहार में कृषि को विकासशील बनाने के लिए विवि एवं राज्य सरकार के विभिन्न अंगों को कदम से कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता है. कैपिसिटी बिल्डिंग के लिए शिक्षा में सुधार लाने की जरूरत है. कृषि विकास के क्षेत्र में बिहार प्रथम स्थान पर है. सिर्फ कमी इस बात की है कि इस बेहतरी का डॉक्यूमेंटेशन नहीं हो रहा है. इस पर वैज्ञानिकों को पॉजिटिव सोच के साथ कार्य करने की जरूरत है. बिहार कृषि विश्वविद्यालय

संबोधित करते कुलपति.

सबौर में उर्वरक विक्रेताओं के लिए डिप्लोमा कोर्स की शुरुआत कर दी गई. उन्होंने कहा कि विवि के माध्यम से वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट पर कार्य किया जा रहा है. अब बिहार के सभी प्रखंडों को चिह्नित कर किसानों के खेत में तकनीकी विकास पर कार्य करने की आवश्यकता है. चौथे कृषि रोडमैप में छात्र छात्राओं का अत्यधिक झुकाव देखा जा रहा है. इसे गति प्रदान करने की जरूरत है. स्वागत प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने किया. विषय प्रवेश शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डा रत्नेश कुमार झा ने कराया. इससे पहले दीप जलाकर आगत अतिथियों ने वर्कशॉप का शुभारंभ किया. निदेशक अनुसंधान डा अनिल कुमार सिंह ने कहा कि बिहार सरकार का बजट अनुसंधान, कृषि शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में अग्रणी है. बामेती के सहयोग से दर्जनों परियोजना संचालित है. विशिष्ट अतिथि के तौर पर निदेशक बामेती बिहार सरकार धनंजय पति त्रिपाठी ने कहा कि बामेती के सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों में प्रसार गतिविधियां पर कार्य संचालित है. आत्मा के सहयोग से किसानों के फील्ड में प्रशिक्षण देने का प्रावधान बनाया जा रहा है. जिसमें मुख्य भूमिका में कृषि विज्ञान केंद्रों की वैज्ञानिक ही रहेंगे. संचालन वैज्ञानिक सह प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा बिनीता सतपथी ने किया. मौके पर डीन डा पीपी श्रीवास्तव, डा रामसुरेश, डा आरके झा, डा आरके तिवारी, डा दिव्यांशु शेखर, डा विनय कुमार शर्मा, आत्मा उप निदेशक शारदा शर्मा, प्रमोद कुमार मिश्रा, रंजीत प्रताप पंडित, रामविनोद कुमार साह, नीरज कुमार, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार एवं विक्की आदि मौजूद थे.

Prabhat khabar 06-04-2025

भास्कर 7/5/25 पेज 13

संडे पॉजिटिव नई तकनीक, उन्नत बीज, समय से बुआई व प्रशिक्षण लेकर कम लागत में अधिक उत्पादन

मशरूम की खेती कर आत्मनिर्भर बनी रंजना, अब लोगों को कर रही प्रेरित; राज्य स्तरीय उद्यानिक पुरस्कार जीता

भास्कर न्यूज|ताजपुर

प्रखंड क्षेत्र में जैविक ग्राम के नाम से प्रसिद्ध कोठिया पंचायत डुमरी निवासी रंजना कुमारी मशरूम की खेती कर आत्मनिर्भर के साथ राज्य स्तरीय उद्यानिक पुरस्कार जीत चुकी है। इन दिनों वह समूह के माध्यम से प्रखंड के अन्य महिलाओं को भी मशरूम की खेती कर स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर रही है। 40 वर्षीय स्नातक पास रंजना कुमारी 0.5 एकड़ जमीन में मशरूम की खेती कर रही है। उन्होंने बताया कि मेरे पति के पास खेती योग्य भूमि तो थी पर स्थित खराब रहने एवं आधुनिक खेती की जानकारी के अभाव में खेती ठीक से नहीं हो रही थी। इससे हमेशा आर्थिक तंगी बनी रहती थी जिससे बच्चे की पढ़ाई में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। एक दिन हमारे गांव में आत्मा योजना द्वारा बैठक आयोजित की गई। इसमें प्रखंड कृषि कार्यालय से आत्मा के कुछ पदाधिकारी आए हुए थे। उन्होंने आत्मा योजना के बारे में विस्तार से बताया।

मशरूम उत्पादन दिखाती रंजना देवी ।

प्रशिक्षण लेकर कम लागत में अधिक उत्पादन संभव

बातों को समझकर हम सभी महिला किसान का समूह गठन किए। तब उसके द्वारा मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण लिया और उत्पादन करने लगा। आज रंजना कुमारी कृषक महिला के रूप में अपनी अलग पहचान बनाकर कोठिया पंचायत समेत आसपास के पंचायतों में महिला कृषक, युवाओं एवं गृहिणियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई।

महिला कृषक, युवाओं एवं गृहिणियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी, काम की सराहना

शेडनेट हाउस में शिमला मिर्च की खेती समूह का गठन कर राज्य एवं राज्य के बाहर प्रशिक्षण लेकर कम लगत में अधिक उत्पादन किया जा सकता है। इन सभी बातों को समझकर हम सभी महिला किसान का समूह गठन किए। तब उसके द्वारा मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण लिया और मशरूम उत्पादन करने लगा। रंजना कोठिया समेत आसपास के पंचायतों में महिला कृषक, युवाओं एवं गृहिणियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई। बताते चले कि बीते 25 फरवरी को जिला कृषि पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक आत्मा के मार्गदर्शन में नवनियुक्त पदाधिकारियों का कोठिया में विभिन्न कृषि विधाओं का परिभ्रमण कार्यक्रम के तहत जैविक खेती के माध्यम से शेडनेट हाउस में शिमला मिर्च की खेती, टमाटर की अंतर्वर्ती खेती, मशरूम उत्पादन इकाई आदि का निरीक्षण कर किसानों की सराहना किया।

भास्कर 7/4/25 पेज 16

खेती-किसानी • कृषि वैज्ञानिक बोले- बिहार की जलवायु केले की खेती के लिए काफी उपयुक्त, इसका लाभ उठाएं किसान

केला लगाने के लिए किसान अभी से करें तैयारी

वैज्ञानिक तकनीक से केले की खेती करेंगे तो 1 हेक्टेयर में खेती में 3 लाख का खर्च आएगा

भास्कर न्यूज | पूसा

केला की खेती में रुझान रखने वाले बिहार के किसान मई के अंतिम सप्ताह से लेकर 15 सितंबर तक अपने-अपने खेतों में केला लगाने के लिए अभी से ही खेतों की तैयारी शुरू कर दें। ऐसे सभी किसान गेहूं की कटाई के तत्काल बाद खेतों की जुताई कर उसमें धईंचा की बुआई कर दें तथा एक से डेढ़ महीने बाद छोटे छोटे धईंचा को ट्रैक्टर का कल्टी चलाकर उसे मिट्टी में ही दबा दें। धईंचा एक तरह का हरा खाद है जो मिट्टी को पर्याप्त मात्रा में सभी तरह का पोषक तत्व उपलब्ध कराता हैं। ये जानकारी कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि बिहार की जलवायु केले की खेती के लिए काफी उपयुक्त है। किसान अगर वैज्ञानिक तकनीक से केले की खेती करेंगे तो उन्हें जहां 1 हेक्टेयर केले की खेती में 3 लाख रुपये का खर्च आएगा। वहीं किसान इससे 8 से 12 लाख रुपए तक का आमदनी आसानी से प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा कि केला हमारे देश में सदाबहार फल है। केले की पोषकता और आसानी से उपलब्धता इसे और खास बना देती हैं। केले में कई तरह के औषधीय गुण है जिससे सालों भर इसकी मांग बाजारों में बनी रहती है। इसमें कार्बोहाइड्रेट और विटामिन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। महाराष्ट्र में इसकी खेती सबसे ज्यादा होती है। जबकि कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में भी केले की खेती जोर शोर से होती है।

नर्सरी में रखा गया केले के जी 9 प्रभेद का पौधा।

सबसे पहले केला लगाने के लिए जुताई अच्छे से हो

किसान सबसे पहले केला लगाने के लिए चिह्नित खेत की जुताई अच्छे से कराएं। इसके बाद खेत को खरपतवार से मुक्त कर दें। इसके बाद खेत में 2 या 3 मीटर की दूरी पर 50 सेमी लंबे, चौड़े और गहरे गड्ढे करें। इन गड्ढों को 15 दिनों के लिए धूप में खुला छोड़ दें। 15 दिन बाद इन गड्ढों में 10 किलो गोबर की खाद, 250 ग्राम नीम केक और 20 ग्राम कार्बोफ्युरॉन डाल दें। इस प्रक्रिया को पूरा करने के बाद किसान सभी गड्ढों में केले के पौधों की रोपाई शुरू करें।

सफल और अच्छी खेती के लिए जलजमाव नहीं होने दें

केले की खेती के लिए उष्ण और आर्द्र जलवायु अच्छी मानी जाती है। वहीं बलुई और दोमट मिट्टी में केले का विकास काफी अच्छा होता है। केले की सफल और अच्छी खेती के लिए खेतों में जलजमाव नहीं होना चाहिए। जिस मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की मात्रा अधिक होती है उसमें केले का उत्पादन ज्यादा होता है। किसान केले से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमेशा केले की उन्नत किस्मों का ही चयन करें। केले की उन्नत किस्मों में जी 9, रोबस्टा, अल्पान, कोठिया, चिनिया, चीनी चंपा आदि कई अन्य प्रभेद शामिल है। इन प्रभेदों की डिमांड मार्केट में अधिक होती है। इसलिए किसान इन प्रभेदों को लगाकर केले से अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। किसान कृषि विवि पूसा से कई तरह के केले के पौधों की खरीदारी

पौधों की जड़ों को नुकसान से बचाने के लिए ड्रिप सिंचाई सिस्टम का प्रयोग करें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि केले से अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए किसान सर्दियों में लगभग 7 से 8 दिन के अंतराल पर तो गर्मियों में 4 से 5 दिन के अंतराल पर बागों में सिंचाई करें। किसान पौधों की जड़ों को नुकसान से बचाने के लिए अगर संभव हो तो ड्रिप सिंचाई सिस्टम का प्रयोग करें। इस सिस्टम से पानी की बचत होती है और पौधों को अच्छी बढ़वार मिलती है। केले में कई तरह के कीट और रोगों के लगने की संभावना भी बनी रहती है। इन कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से केले के फसल को बचाने के लिए किसान समय समय पर कृषि विशेषज्ञों व वैज्ञानिकों के सलाह को जरूर अपनाएं।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 7 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय : साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में अभी और भी बढ़ोतरी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
07 अप्रैल	37.8	16.6
08 अप्रैल	37.8	17.0
दरभंगा		
07 अप्रैल	37.8	17.0
08 अप्रैल	38.0	17.0
पटना		
07 अप्रैल	39.0	18.0
08 अप्रैल	39.0	18.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 07-04-25

उच्च गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन करने की जरूरत

पूसा . डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली फार्म में बीज उत्पादन कार्यक्रम का निरीक्षण करने के लिए निदेशक बीज तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली डॉ डीके राय एवं सहायक प्राध्यापक बीज निदेशालय डॉ हेमचंद्र चौधरी पहुंचे. उन्होंने क्षेत्र में लगे तीन हेक्टेयर गेहूं एवं कटाई उपरांत भंडारित अरहर, मसूर एवं तीसी का निरीक्षण किया. बेहतर उत्पादन दिलाने के लिए गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन करने की जरूरत है. डॉ डीके राय ने प्रक्षेत्र पर लगे गेहूं डी बी डब्ल्यू 252 के बीज उत्पादन का निरीक्षण करते हुए खरीफ में होने वाले बीज उत्पादन कार्यक्रम के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. साथ ही भविष्य में बीज उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कई बिंदुओं पर कृषि विज्ञान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों से विचार किया. डॉ हेमचंद्र चौधरी ने खेत की तैयारी से संबंधित एवं बीज उत्पादन में ध्यान रखने वाली कई महत्वपूर्ण तथ्य को बताया. ताकि भविष्य में उच्च गुणवत्तायुक्त बीज का उत्पादन किया जा सके. मौके पर कृषि विज्ञान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ इं. विनिता कश्यप, डा धीरू तिवारी, सुमित कुमार सिंह, वर्षा कुमारी, निशा रानी, विक्रांत, वीरेंद्र आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, April 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67f42759fbdaa8eb0b503d77

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 10 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में अभी और भी बढ़ोतरी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
08 अप्रैल	38.0	22.0
09 अप्रैल	38.2	22.0
दरभंगा		
08 अप्रैल	38.2	22.0
09 अप्रैल	38.2	22.3
पटना		
08 अप्रैल	39.0	23.0
09 अप्रैल	39.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 08-04-2025

निदेशक ने केंद्र के बीज क्षेत्र का किया निरीक्षण

संस, जागरण • पूसा : डा.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि वि के बीज निदेशक डा.डीके राय एवं सहायक प्राध्यापक डा.हेमचन्द्र चौधरी ने सोमवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली का निरीक्षण किया। विज्ञानियों की टीम ने क्षेत्र में लगे तीन हेक्टेयर गेहूं एवं कटाई उपरांत भंडारित अरहर, मसूर एवं तीसी का अवलोकन किया। प्रक्षेत्र पर लगे गेहूं के डीबीडब्ल्यू 252 के बीज उत्पादन को देखा। भविष्य में बीज उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कई बिंदुओं पर केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया। वहीं भविष्य में उच्च गुणवत्तायुक्त बीज का उत्पादन को लेकर कई टिप्स दिये। मौके पर केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ ई.विनीता कश्यप, डा. धीरू तिवारी, सुमित कुमार सिंह, वर्षा कुमारी, निशा रानी, विक्रांत, वीरेंद्र समेत अन्य मौजूद रहे।

Dainik Jagran 08-04-2025

उच्च गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन करने की जरूरत

पूसा . डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली फार्म में बीज उत्पादन कार्यक्रम का निरीक्षण करने के लिए निदेशक बीज तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली डॉ डीके राय एवं सहायक प्राध्यापक बीज निदेशालय डॉ हेमचंद्र चौधरी पहुंचे. उन्होंने क्षेत्र में लगे तीन हेक्टेयर गेहूं एवं कटाई उपरांत भंडारित अरहर, मसूर एवं तीसी का निरीक्षण किया. बेहतर उत्पादन दिलाने के लिए गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन करने की जरूरत है. डॉ डीके राय ने प्रक्षेत्र पर लगे गेहूं डी बी डब्ल्यू 252 के बीज उत्पादन का निरीक्षण करते हुए खरीफ में होने वाले बीज उत्पादन कार्यक्रम के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. साथ ही भविष्य में बीज उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कई बिंदुओं पर कृषि विज्ञान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों से विचार किया. डॉ हेमचंद्र चौधरी ने खेत की तैयारी से संबंधित एवं बीज उत्पादन में ध्यान रखने वाली कई महत्वपूर्ण तथ्य को बताया. ताकि भविष्य में उच्च गुणवत्तायुक्त बीज का उत्पादन किया जा सके. मौके पर कृषि विज्ञान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ इं. विनिता कश्यप, डा धीरू तिवारी, सुमित कुमार सिंह, वर्षा कुमारी, निशा रानी, विक्रांत, वीरेंद्र आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, April 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67f42759fbdaa8eb0b503d77

10 से 12 अप्रैल के बीच मैदानी इलाकों में हल्की बारिश व बिजली गिरने के आसार

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूस के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केंद्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 09 से 13 अप्रैल 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से माध्यम बादल देखें जा सकते हैं. इस अवधि में उत्तर बिहार के तराई तथा मैदानी भागों में बिजली गिरना और तेज हवा (40-50 किलोमीटर प्रति घंटे) के साथ हल्की वर्षा या बुंदा-बूंदी की संभावना है. इसकी ज्यादा सम्भावना 10-12 अप्रैल के बीच बन सकती है. हल्की वर्षा 2 से 5 मिमी हो सकती है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 36 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है.न्यूनतम तापमान 20 से 23 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 15 से 20 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिन पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा चलने की सम्भावना है.

कुछ स्थानों पर तेज हवा (30-35 किलोमीटर प्रति घंटे) भी चल सकती है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है.आज का अधिकतम तापमानः 35.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.2 डिग्री अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 23 डिग्री अधिक रहा

प्रभात खबर
Wednesday, April 9, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67f5710d79bb17a7b5e417af

भास्कर 9/4/25 पेज 13

पूर्वानुमान • अधिकतम तापमान 32 से 36 डिग्री व न्यूनतम तापमान 20 से 23 डिग्री के बीच रह सकता है

आज से 13 अप्रैल तक हल्की बारिश की संभावना, 40 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकती है हवा, गेहूं की फसल पर संकट

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 9 से 13 अप्रैल तक आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान तराई और मैदानी इलाकों में बिजली गिरने और 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलने की संभावना है। साथ ही हल्की बारिश या बूंदाबांदी हो सकती है। बारिश की संभावना 10 से 12 अप्रैल के बीच ज्यादा है। वर्षा की मात्रा 2 से 5 मिलीमीटर तक हो सकती है। अधिकतम तापमान 32 से 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 20 से 23 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग के अनुसार, अगले दो दिन पछिया हवा 15 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी। इसके बाद पुरवा हवा चलने की संभावना है। कुछ जगहों पर हवा की रफ्तार 30 से 35 किलोमीटर प्रति घंटे तक हो सकती है। सुबह सापेक्ष आर्द्रता 75 से 85 प्रतिशत और दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। मौसम को देखते हुए वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह दी है कि गेहूं की तैयार फसल की कटाई-दौनी में सावधानी बरतें। कीटनाशकों का छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें। भिंडी की फसल में फल और प्रोह वेधक कीट की निगरानी जरूरी है। यह कीट फलों के अंदर घुसकर उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देता है। प्रभावित फलों को तोड़कर मिट्टी में दबा दें। अधिक प्रकोप होने पर डाईमेथोएट 30 ईसी दवा का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।'

आगे क्या... अधिकतम व न्यूनतम तापमान रहेगा सामान्य

मंगलवार को साफ रहा आसमान।

भिंडी की फसल में लीफ हॉपर कीट का खतरा, किसान कीटनाशक का करें प्रयोग

भिंडी की फसल में लीफ हॉपर कीट भी नुकसान करता है। यह हरे रंग का सूक्ष्म कीट होता है। पत्तियों के नीचे रहकर रस चूसता है। इससे पत्तियां पीली होकर सिकुड़ जाती हैं और सूखने लगती हैं। फलन पर असर पड़ता है। इस कीट के दिखने पर इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान फलदार पौधों का नया बगान लगाना चाहते हैं, वे इस माह में अनुशंसित दूरी पर गड्ढे की खुदाई कर छोड़ दें। ओल की फसल की बुआई के लिए गजेन्द्र किस्म उपयुक्त है। ओल के कटे कंद को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के 5 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में 20 से 25 मिनट तक डुबोकर रखें। फिर छाया में 10 से 15 मिनट सुखाकर रोपाई करें। इससे मिट्टी जनित बीमारियों से बचाव होगा और अच्छी उपज मिलेगी।

भ्रमण में बादल...दहलीज पर बूंदें

उत्तर बिहार में कुछ दिनों तक बदला रहेगा मौसम का मिजाज

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 13 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान तराई व मैदानी इलाकों में बूंदाबांदी की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान तापमान बढ़ेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
09 अप्रैल	35.5	22.8
10 अप्रैल	36.0	22.8
दरभंगा		
09 अप्रैल	36.0	23.0
10 अप्रैल	36.0	23.5
पटना		
09 अप्रैल	38.0	26.0
10 अप्रैल	38.0	26.0

डिग्री सेल्सियस में

संस, पूसा (समस्तीपुर) : उत्तर बिहार के जिलों में अगले कुछ दिनों तक मौसम का मिजाज बदला रहेगा। अभी कुछ जगह कभी-कभार बादल दिख रहे, मानों बारिश से पहले भ्रमण कर रहे लेकिन इस सप्ताह के अंत तक स्थिति बदलेगी। बादलों के आने से धूप की तल्खी से राहत मिलेगी। हालांकि, किसानों के लिए जरूर चिंता की बात होगी। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार के अनुसार, अगले तीन दिनों तक आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रहेंगे। 10 से 12 अप्रैल के बीच तेज हवा के साथ बिजली गिरने तथा हल्की वर्षा या बूंदाबांदी की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार 50 किमी प्रतिघंटे तक हो सकती है। वर्षा दो से पांच मिलीमीटर होने का अनुमान है। अधिकतम तापमान 36 तथा न्यूनतम 23 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

10 से 12 अप्रैल के बीच तेज हवा के साथ बिजली गिरने तथा हल्की बारिश या बूंदाबांदी की संभावना

35.5 डिग्री सेल्सियस रहा मंगलवार को अधिकतम तापमान और न्यूनतम 22.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज

पछुआ के बाद चलेगी पुरवा हवा

विश्वविद्यालय के मौसम विभाग द्वारा मंगलवार को अधिकतम तापमान 35.5 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। अगले दो दिनों तक पछिया हवा 15 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलने की संभावना है, इसके बाद पुरवा हवा चलेगी। कुछ स्थानों पर 30 से 35 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति से तेज हवा भी चल सकती है। मौसम और कृषि विज्ञानियों ने किसानों को गेहूं की तैयार फसल की कटाई और दौनी के कार्य में सावधानी बरतने और खेतों में खड़ी फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव केवल मौसम साफ रहने पर ही करने की सलाह दी है। गरमा मूंग और उड़द की बुआई प्राथमिकता के आधार पर पूरी करने की सलाह दी गई है।

Dainik jagran 09-04-2025

बीज भंडारण के लिए दिये सुझाव

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के बीज निदेशक डॉ.डीके राय व सहायक प्राध्यापक डॉ.हेमचन्द्र चौधरी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों की टीम ने केन्द्र के बीज उत्पादन कार्यक्रम के तहत संचालित कार्यों की समीक्षा करते हुए खेतों का निरीक्षण किया।

वैज्ञानिकों की टीम ने क्षेत्र में लगे तीन हेक्टर गेहूं एवं कटाई उपरांत भंडारित अरहर, मसूर एवं तीसी का अवलोकन करते हुए आवश्यक सुझाव दिया।

डॉ.डीके राय ने प्रक्षेत्र पर लगे गेहूं के डीबीडब्ल्यू 252 के बीज उत्पादन का निरीक्षण करते हुए खरीफ में होने वाले बीज उत्पादन कार्यक्रम के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस दौरान उन्होंने भविष्य में बीज उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कई बिंदुओं पर केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया। डॉ.हेमचंद्र चौधरी ने खेत की तैयारी से संबंधित एवं बीज उत्पादन में ध्यान रखने वाली कई महत्वपूर्ण तथ्य से अवगत कराया। साथ ही भविष्य में उच्च गुणवत्तायुक्त बीज का उत्पादन को लेकर कई टिप्स दिये।

Hindustan 09-04-25

हवा के साथ बिजली गिरने की संभावना

पूसा। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक हल्के से मध्यम बादल रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के तराई एवं मैदानी भाग के जिलों में बिजली गिरने और तेज हवा 40-50 किमी प्रति घंटे की गति से चलने की संभावना है। इस दौरान हल्की वर्षा या बूंदा-बांदी हो सकती है।

मौसम विभाग के अनुसार इसकी ज्यादा संभावना 10-12 अप्रैल के बीच बताई गई है। इस दौरान 2 से 5 मिमी वर्षा हो सकती है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 13 अप्रैल तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में औसतन 15 से 20 किमी प्रति घंटा की गति से अगले दो दिनो पछुआ एवं उसके बाद पुरवा हवा चल सकती है। मौसम विभाग के अनुसार कुछ स्थानों पर तेज हवा 30 से 35 किमी प्रति घंटे की गति से भी चल सकती है। पूर्वानुमान की अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 एवं दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Hindustan 09-04-2025

तेज हवा के साथ दो मिमी तक हो सकती है बारिश

समस्तीपुर (एसएनबी)। अगले दो दिनों में तेज हवा के साथ हल्की बारिश होने की संभावना है। जिले के डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 09-13 अप्रैल, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पुर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल देखें जा सकते है। इस अवधि में उत्तर बिहार के तराई तथा मैदानी भागों में बिजली गिरने और तेज हवा ह्र40-50 किलोमीटर प्रति घंटे) के साथ हल्की वर्षा या बुंदा-बुंदी की संभावना है। इसकी ज्यादा सम्भावना 10-12 अप्रैल के बीच बन सकती है। इस दौरान हल्की वर्षा 2 से 5 मि0मी0 हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 20 से 23 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिन पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा चलने की सम्भावना है। कुछ स्थानों पर तेज हवा (30-35 किलोमीटर प्रति घंटे) भी चल सकती है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 09-04-2025

कृषि ज्ञान वाहन से किसानों की समस्याओं का हुआ निराकरण

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के सहयोग से कृषि ज्ञान वाहन का परिचालन दरभंगा जिले के हनुमाननगर किया गया. इस वाहन के माध्यम से किसानों को खेतों में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए आधुनिक कृषि ज्ञान और तकनीकी सहायता मुहैया कराई जा रही है. केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय से कृषि ज्ञान वाहन के इस दौरा से जिले के करीब तीन प्रखंड हनुमान नगर, हायाघाट, सिमरी के पांच पंचायत में पहुंच कर करीब 150 किसानों को लाभान्वित किया. इस वाहन की मदद से किसानों को कृषि विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक के द्वारा कृषि उपकरणों की जानकारी प्रदान की गई. विशेषज्ञों ने इस वाहन की विशेषता के बारे में किसानों को बताया कि यह वाहन किसानों को फसल उगाने से लेकर, रोग नियंत्रण बीज चयन, पानी की बचत, और मृदा प्रबंधन के बारे में वीडियो फिल्म के माध्यम से जानकारी देंगे. जिससे किसानों के उत्पादन में वृद्धि होगी और उनके आय में सुधार आयेगा. किसानों ने इस परियोजना को लेकर उत्साह व्यक्त किया. इस तरह की सुविधाओं की कमी को महसूस करते हुए इसे एक बड़ा कदम बताया. कृषि ज्ञान वाहन की शुरुआत से दरभंगा के किसानों को काफी लाभ होने की संभावना जताई जा रही है.

प्रभात खबर
Thursday, April 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67f6c9ec33ad7a08776be197

भास्कर 10/4/25 पेज 15

कृषि • पूसा विवि के कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय कृषि वैज्ञानिक ने दी किसानों को जानकारी

रीपर बाइंडर मशीन से कम श्रम, खर्च और समय में गेहूं की कटाई करें किसान, सरकार भी कर रही मदद : डॉ. तिवारी

भास्कर न्यूज| पूसा

रीपर बाइंडर मशीन गेहूं की कटाई करने वाले किसानों के लिए एक वरदान मशीन साबित हो रहा हैं। इस मशीन से बड़े और छोटे सभी स्तर के किसानों के गेहूं फसल की कटाई बेहद आसान ढंग से की जा रही है। इस मशीन से फसल की कटाई करने पर समय, श्रम, और खर्च तीनों में काफी बचत होती है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि एक अनुमान के मुताबिक गेहूं की कटाई के समय में ज मजदूरों की कमी उत्पन्न हो जाती है। वहीं मजदूरों से कटाई कराने पर करीब 1 एकड़ गेहूं की फसल में 3000 रूपए से अधिक का खर्च भी आता है। जबकि ठीक इसके विपरीत रीपर बाइंडर मशीन से गेहूं कटवाने पर एक एकड़ में लगभग 1000 रुपये ही किसानों को खर्च करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि इस तरह से जहां किसानों को प्रति एकड़ 2000 रुपए कीबचतहोती है। वहीं गेहूं कीकटाईका काम भी शीघ्र हो जाता है। उन्होंने कहा कि मौजूदा वक्त में कई तरह के मशीनों ने किसानों के काम को बेहद आसान बना दिया है। पहले जिस काम को करने में कई दिन या हफ्ते लग जाते थे अब वैसे सभी काम को मशीनों से कुछ ही घंटों में आसानी से संपन्न कर लिया जाता है। उन्होंने कहा कि रीपर बाइंडर मशीन गेहूं की खड़ी फसल को काटकर बंडल बनाते हुए खेत में छोड़ देता है। बाद में किसान इन बंडलों को इकट्ठा कर खेत में ही थ्रेशर से दौनी कर लेते हैं। उन्होंने बताया कि रीपर बाइंडर मशीन समतल खेत में जमीन से 5 सेंटीमीटर ऊपर से फसल की कटाई करता है जिससे भूसे का नुकसान भी नहीं होता है।

रीपर बाइंडर मशीन से गेहूं की कटाई।

नई तकनीक से किसानों को होगा अधिक फायदा

केवीके हेड डॉ. तिवारी ने बताया कि रीपर बाइंडर मशीन के कटरबार की चौड़ाई जहां 1.2 मीटर होती है। वहीं इसके आगे बढने की गति 1.1 से 2.2 मीटर पर सेकंड होती है। इस मशीन के माध्यम से एक घंटे में एक एकड़ गेहूं के फसल की कटाई आसानी से की जा सकती है। इस मशीन को चलाने में एक घंटे में करीब सवा लीटर डीजल की खपत होती है। उन्होंने बताया कि रीपर बाइंडर मशीन के ऊपर एक सीट लगी होती है तथा उस सीट के नीचे एक नुमेटिक पहिया लगा होता है। इससे कम समय में कटाई होती है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 13 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान तराई व मैदानी इलाकों में बूंदाबांदी की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान तापमान बढ़ेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
10 अप्रैल	35.5	22.8
11 अप्रैल	36.0	22.8
दरभंगा		
10 अप्रैल	36.0	23.0
11 अप्रैल	36.0	23.5
पटना		
10 अप्रैल	38.0	26.0
11 अप्रैल	38.0	26.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-04-2025

दुकान के सामने से कुर्सी-टेबुल हटाने का निर्देश दिया

पूसा। डॉ.राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि प्रशासन ने विवि परिसर में अवस्थित शॉपिंग कम्प्लेक्स में संचालित दुकानो के सामनें की जगह से दुकान के सामने रखे कुर्सी-टेबल समेत अन्य सामानों को हटा लेने का निर्देश दिया है। इस संदर्भ में विवि के संपदा पदाधिकारी ने सूचना जारी की है। इसको लेकर भाकपा माले के प्रखंड सचिव ने नाराजगी व्यक्त की है। आरोप है कि कुर्सी-टेबल हटने से कई दुकानो का व्यवसाय प्रभावित हो रहा है। इसे प्रशासन की मनमानी का आरोप लगाते हुए चरणबद्ध आंदोलन की चेतावनी दी है। प्रखंड सचिव ने आरोप लगाया है कि अस्पताल के सामने कथित रूप् से अवैध हाट व बस स्टैंड संचालित हो रहा है।

Hindustan 10-04-2025

आज भर रहेगा असर

डॉ . राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम वैज्ञानिक डॉ . ए सत्तार ने कहा कि मौसम का असर में जिले में शुक्रवार तक रहेगा . शुक्रवार को बारिश की संभावना है . शनिवार से मौसम को साफ होने के आसार हैं . उन्होंने बताया कि प्रतिचक्रवात और पश्चिमी विक्षोभ के कारण मौसम में अचानक बदलाव आया है . उन्होंने बताया कि फसल को क्षति नहीं पहुंची है . जिन क्षेत्रों में ओले गिरे हैं, वहां फसल को क्षति हुई हैं . वहीं बारिश के साथ-साथ जहां तेज हवा चली है, उन क्षेत्रों में गेहूं, मक्का व अन्य फसल को आंशिक क्षति हुई है .

प्रभात खबर
Friday, April 11, 20
Samstipur
https://epaper.prab

वैश्विक पहचान दिला रहा केंद्रीय कृषि विवि

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्टड फार्म का ऐतिहासिक महत्व और वर्तमान संदर्भ पूसा स्टड फार्म का उल्लेख उस समय के ब्रिटिश दस्तावेजों में मिलता है. जब यह घोड़ों के प्रजनन और प्रशिक्षण का एक प्रमुख केंद्र हुआ करता था. 19वीं सदी के प्रारंभ से ही यहां का कार्य और अनुसंधान क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति को मजबूत करने में सहायक था. बाद में 1905 में पूसा में इंपीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट (जो अब भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान का हिस्सा है) की स्थापना हुई. जिसने इस क्षेत्र को कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में प्रसिद्धि दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका थे. वर्तमान पूसा, समस्तीपुर में जागृति का संदेशविलियम मूरक्रॉफ्ट और विलियम फ्रेजर जैसे व्यक्तियों के कार्यों से प्रेरणा लेकर, वर्तमान पूसा (समस्तीपुर) के निवासी अपने ऐतिहासिक गौरव को पुनर्जनन कर सकते हैं.

निरीक्षण पंजी पर हस्ताक्षर बनाते अतिथि.

पूसा का इतिहास न केवल पशुपालन और कृषि अनुसंधान से जुड़ा है, बल्कि यह एक ऐसी भूमि है. जहां परंपरा और आधुनिकता का संगम हुआ है. फिलवक्त बिहार का धरोहर राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय भारत सरकार एवं बिहार सरकार के अथक प्रयास से परिवर्तित होकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इस क्षेत्र को वैश्विक पहचान दिला रहा है. कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय के अथक प्रयास एवं समुचित मार्गदर्शन में कर्मठ वैज्ञानिकों की टीम सतत नये शोध एवं तकनीक विकसित कर देश के किसानों के विकास के लिए दृढ़संकलपित हैं. स्थानीय समुदाय को इस इतिहास से प्रेरणा लेकर शिक्षा, प्रसार एवं अनुसंधान, और पशुपालन के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने की जरूरत है. ताकि पूसा का नाम फिर से विश्व पटल पर अपना पहचान बनाकर किसानों को नवीनतम तकनीकों से लाभान्वित कर सके.

प्रभात खबर
Friday, April 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67f81b94cd844479177df633

तकनीकी रूप से सशक्त हों किसान

वीडियो देख लाभ उठाते किसान.

प्रतिनिधि, पूसा

अगर किसान एकजुट हो जायें, तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं. इसी सोच के साथ किसानों को संगठित और तकनीकी रूप से सशक्त बनाने का कार्य कृषि ज्ञान वाहन कर रहा है. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा चतुर्थ कृषि रोड मैप के अंतर्गत संचालित कृषि ज्ञान वाहन के माध्यम से मुजफ्फरपुर जिला के बेझा पंचायत स्थित बेझा फार्मर प्रोड्यूस कंपनी लिमिटेड में किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से रूबरू कराया. इस कार्यक्रम में विभिन्न पंचायतों से आये लगभग 70 किसानों ने भाग लिया. फसल अवशेष प्रबंधन, पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खीपालन और जैविक खेती जैसे विषयों पर वीडियो फिल्मों के माध्यम से व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की. कृषि ज्ञान वाहन न सिर्फ जानकारी का माध्यम है, बल्कि यह एक चलित समाधान केंद्र भी है. इसमें विशेषज्ञ कृषि वैज्ञानिक, प्रशिक्षक और तकनीकी टीम शामिल होते हैं. वे किसानों को उत्पादन बढ़ाने, लागत घटाने और नई तकनीकों को अपनाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं.

साथ ही किसान सीधे अपने प्रश्न पूछ सकते हैं. समस्याओं का त्वरित समाधान भी पा सकते हैं. कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए इसे कृषि विकास की दिशा में एक बड़ा कदम बताया. उन्होंने कहा कि ऐसे ज्ञानवर्धक प्रयास न केवल कृषि को लाभकारी बनायेंगे, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर भी बनायेंगे.

प्रभात खबर
Friday, April 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67...

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 13 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान तराई व मैदानी इलाकों में बूंदाबांदी की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान तापमान बढ़ेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
11 अप्रैल	38.0	22.0
12 अप्रैल	38.2	22.0
दरभंगा		
11 अप्रैल	38.2	22.0
12 अप्रैल	38.2	22.3
पटना		
11 अप्रैल	39.0	23.0
12 अप्रैल	39.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 11-04-2025

विवि के पेंशनर समाज की बैठक कई अहम निर्णय

पूसा। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पेंशनर समाज की बैठक डॉ शंभू शरण ठाकुर की अध्यक्षता में हुई। बैठक में पेंशनरों से जुड़ी समस्याओं और उसके निदान की दिशा में विवि की पहल पर विस्तार से चर्चा की गई। मौके पर वक्ताओं ने पेंशनरों के सभी बकाया भुगतान के साथ सम्मान से पेंशनरों की विदाई पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विवि प्रशासन के प्रति आभार जताया गया। इस दौरान विवि के सेवानिवृत कर्मी बैद्यनाथ पाण्डेय के निधन शोक सभा आयोजित की गई। जिसमें उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना की गई। बैठक में राम लगन राय, राम विनोद पांडे समेत दर्जनों पेंशनर मौजूद थे।

Hindustan 11-04-2025

18 से 19 अप्रैल तक अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा के आसार, गेहूं वाले किसान रहें अलर्ट

समस्तीपुर. डॉ राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा व भारत मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक 18 से 19 अप्रैल के आसपास अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना है. उत्तर बिहार के जिलों में फिर से गरज वाले बादलों के बनने की संभावना है. वर्षा के समय तेज हवा चल सकती है. इस अवधि में अधिकतम तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है. अगले पांच दिनों तक अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है.वहीं न्यूनतम तापमान 20-21 डिग्री सेल्सियस के आसपास बने रहने की संभावना है. इस दौरान 10 से 15 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चल सकती है. तेज हवा तथा वर्षा की संभावना को देखते हुये किसान गेहूं की फसल काटने एवं दौनी में सावधानी बरतें.

प्रभात खबर
Wednesday, April 16, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67fead4e7f50ed8566a47355

कृषि ज्ञान वाहन संवाद स्थापित करने में रहा अव्वल

प्रतिनिधि, पूसा

कृषि ज्ञान वाहन बिहार के किसानों के लिए एक परिवर्तनकारी पहल बनकर उभरा है. जिसने केवल 1 वर्ष में अपनी उपस्थिति और प्रभाव को मजबूत किया है. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय ने कहा कि कृषि समस्याओं का समाधान के साथ कृषि ज्ञान वाहन से कृषि व संबंधित क्षेत्र की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने के लिए इस वाहन ने किसानों के साथ सीधा संवाद स्थापित किया है.

वैज्ञानिक ने किया प्रत्यक्षण : पूसा . कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के अध्यक्ष डा आरके तिवारी ने दलहनी फसलों पर किसानों के साथ प्रत्यक्षण किया. बताया कि मूंग बिहार में उगाई जाने वाली ग्रीष्मकालीन दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. इसकी बुवाई 15 अप्रैल तक होता है. देर से बुवाई करने पर गर्म हवा तथा वर्षा के कारण फलियों को नुकसान होता है.

प्रभात खबर
Wednesday, April 16, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67fead4e7f50ed8566a47346

भास्कर 16/4/25 पेज 13

खेती-किसानी • लीची का फल जब इलायची के आकार का हो जाए, तब हल्की सिंचाई नियमित रूप से करें

लीची से अच्छे व अधिक फल प्राप्त करने के लिए बागों का तकनीक से करें प्रबंधन

भास्कर न्यूज़|पूसा

मौजूदा समय में लीची के पेड़ों पर फल लग चुके हैं। इस समय लीची के फलों में कई तरह के कीट और रोग के लगने की संभावना बनी रहती हैं। ऐसी स्थिति में लीची से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए लीची उत्पादक किसानों को लीची के बागों की देखभाल और वैज्ञानिक विधि से रोग व कीटों का प्रबंधन करने की जरूरत हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पैसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने मंगलवार को खासकर लीची उत्पादक किसानों को सुझाव देते हुए दी है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष लीची में काफी अच्छी फलन देखने को मिल रही है। लीची से अच्छी आमदनी प्राप्त करने के लिए लीची उत्पादक किसानों को सजग एवं सचेत रहते हुए वैज्ञानिक तरीके से बाग की देखभाल और प्रबंधन करने की आवश्यकता है। केवीके में लगे लीची के बागों का निरीक्षण करते हुए डॉ. आर के तिवारी व केवीके के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को सलाह दिया कि वे लीची का फल जब इलायची के आकार का हो जाएं तब खासकर लीची के पेड़ों के थालों में हल्की हल्की सिंचाई नियमित रूप से करते रहे। इससे बाग में नमी की कमी नहीं होगी और फल का विकास अच्छे से होगा। उन्होंने कहा कि सिंचाई करते वक्त किसान ध्यान दें कि बाग में पानी ज्यादा नहीं लगे अन्यथा फायदे की जगह उन्हें नुकसान भी उठाना पड़ सकता है।

बाग में ज्यादा पानी नहीं लगे तो फायदे की जगह नुकसान भी हो सकता है

केवीके में लीची के बाग और फलों को देखते वैज्ञानिक डॉ. धीरू तिवारी।

पेड़ों में अनुपात के अनुसार डाले उर्वरक

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस समय लीची के फलों के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए 8 से 12 वर्ष के लीची के पेड़ों में 350 ग्राम यूरिया और 250 ग्राम पोटाश (एमओपी) प्रयोग करें। इसके अलावे 15 वर्ष के उपर के पेड़ों में 450 से 500 ग्राम यूरिया एवं 300 से 350 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि लीची उत्पादक किसान लीची के पेड़ों के बाहरी फैलाव से 1 मीटर अंदर की तरफ जमीन पर 2 फीट चौड़ाई में पेड़ के चारों तरफ गोलाई में उर्वरक डालकर उसे कुदाल या फावड़ा से मिट्टी में मिला दें। ध्यान रहें कि उर्वरकों का प्रयोग बाग में पर्याप्त नमी रहने पर ही करें।

फल फटे तो बोरेक्स दवा का करें पौधों पर छिड़काव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि फल फटने की समस्या आने पर लीची उत्पादक किसान बोरेक्स दवाई की 5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पेड़ों पर छिड़काव करें। उन्होंने कहा की लीची में अक्सर देखा जाता है कि लीची का फल बेधक यानी (बोरर) कीट लीची के फल को काफी नुकसान पहुंचाता है। यह कीट किसानों की आमदनी पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। इस कीट से फलों को बचाने के लिए किसान थियाक्लोप्रिड 21 प्रतिशत दवाई की 0.6 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ या नोवाल्यूरान 10 ईसी दवाई की 1.5 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पेड़ों पर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि लीची को झुलसा एवं अन्य रोग से बचाने के लिए किसान कीटनाशक दवाइयों के साथ कवकनाशी दवाई जैसे थायोफेनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यू.पी की 2 ग्राम मात्रा को मिलाकर भी पेड़ों पर छिड़काव कर सकते हैं। हालांकि उन्होंने कहा कि इन दवाओं का छिड़काव किसान फल के बड़े लौंग के आकार के हो जाने के बाद ही करें।दवाओं के स्प्रे और उससे अच्छे परिणाम के लिए किसान कीटनाशी या कवकनाशी दवाओं के साथ स्टिकर यानी गोंद की 0.3 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के अनुसार जरूर मिलाकर छिड़काव करें।

भास्कर 16/4/25 पेज 11

उत्तर बिहार के जिलों में अगले पांच दिनों में गरज वाले बादल के साथ बारिश के आसार

मौसम पूर्वानुमान : अधिकतम तापमान 33-34 डिग्री रहने की संभावना

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में अगले 5 दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान में फिर से गरज वाले बादलों के बनने की संभावना है तथा 18-19 अप्रैल को हल्की वर्षा हो सकती है।

वहीं वर्षा के समय हवा तेज रह सकती है। अगले 5 दिनों तक अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है, न्यूनतम तापमान 20-21 डिग्री के आसपास रहने की संभावना है। 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूर्व हवा चल सकती है। गरमा मूंग तथा उरद की बुआई वर्षा न होने की स्थिति में अविलंब संपन्न करें। खेत की जुताई में 20 किलो ग्राम नेत्रजन, 45 किलो स्फूर, 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद-19, पंत उरद-31, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबि यम कल्चर से उपचारित कर बुअ करें।

गेहूं काटने एवं दौनी में सावधानी बरतें

तेज हवा तथा वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान गेहूं को काटने एवं दौनी में सावधानी बरतें। वैसे किसान जिनके अन्य प्रकार के फसलों में अभी सिंचाई की बहुत आवश्यकता नहीं है। वे इस बारिश का इंतजार करें। इस बार 5 से 10 एमएम बारिश होने के आसार हैं। ज्यादा बारिश होने की संभावना तराई यानी कोशी क्षेत्र में हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में 18-19 अप्रैल के आसपास अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
16 अप्रैल	32.0	20.0
17 अप्रैल	32.0	20.5
	दरभंगा	
16 अप्रैल	32.0	20.5
17 अप्रैल	32.8	20.5
	पटना	
16 अप्रैल	34.0	21.0
17 अप्रैल	34.0	21.0

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण- 16/4/2025 P-3

दैनिक जागरण - 16/04/2025 P-3, 1

उत्तर बिहार में गरज वाले बादल के साथ बारिश की संभावना

संस, जागरण • पूसा : उत्तर बिहार में लगभग तीन दिनों के बाद मौसम में बदलाव आने की संभावना है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने अगले 5 दिनों के मौसम पूर्वानुमान में बताया कि गरज वाले बादलों के बनने की संभावना है। 18 -19 अप्रैल के आसपास अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होगी। वर्षा के समय हवा तेज रह सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान में थोड़ी गिरावट आएगी और इसके अगले 5 दिनों तक 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान रहेगा। न्यूनतम तापमान 20-21 डिग्री सेल्सियस के आसपास बनी रहेगी। मौसम विभाग के द्वारा मंगलवार का अधिकतम तापमान 33.5 एवं न्यूनतम तापमान 18.1 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस दौरान 10 से 15 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पूरबा हवा चल सकती है। तेज हवा तथा वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान गेहूं की काटने एवं दौनी में सावधानी बरतें।

हिन्दुस्तान 16/4/25 पेज 4

तेज हवा के साथ 18-19 के आसपास हो सकती है वर्षा

- पांच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी किया
- तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है

पूसा, निज संवाददाता। उत्तर बिहार के जिलों में अगले 5 दिनों तक गरज के साथ बादल रहने की संभावना है। इस दौरान 18-19 अप्रैल के आसपास अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। वर्षा के समय हवा तेज रह सकती है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को अगले पांच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी किया है।

जिसके अनुसार इस अवधि में 10 से 15 किमी प्रति घंटा की गति से पुरवा हवा चल सकती है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है। जिसके कारण पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री एवं न्यूनतम 20 से 21 डिग्री सेल्सियस के आसपास बने रहने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्तार ने तेज हवा एवं वर्षा की संभावना को देखते हुए गेहूं की कटनी एवं दौनी में सावधानी बरतने की सलाह किसानों को दी गई है।

वैज्ञानिक तकनीक व तरीके से करें लीची बगान की देखभाल व प्रबंधन : आरके तिवारी

लीची में कीट प्रबंधन करते वैज्ञानिक।

समस्तीपुर (एसएनबी)। इस वर्ष लीची में काफी अच्छी फलत देखने को मिल रही है। ऐसे में लीची से अच्छी आमदनी प्राप्त करने के लिए लीची उत्पादक किसानों को सजग एवं सचेत रहते हुए वैज्ञानिक तरीके से बागीचे की देखभाल एवं प्रबंधन करने की आवश्यकता है। कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने उक्त बातें लीची उत्पादक किसानों के लिए जारी सुझाव में कही है। जिसमें उन्होंने कहा है कि वैज्ञानिक तकनीक व विधि से लीची बगान की देखभाल व प्रबंधन से लीची के फल स्वस्थ होंगे। जिससे बाजार में उनकी अच्छी कीमत मिल सकती है। इसी क्रम में केन्द्र के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरू कुमार तिवारी ने सलाह देते हुए कहा कि लीची के फल इलायची के आकार के हो जायें तो पेड़ों के थालों में हल्की सिंचाई नियमित रूप से करते रहना चाहिए। ताकि बाग में नमी की कमी नहीं हो और फल का समुचित विकास हो सके। सिंचाई करते वक्त ध्यान देना चाहिए कि बाग में पानी ज्यादा नहीं लगे, अन्यथा फायदे की जगह नुकसान हो सकता है। उन्होंने बताया कि फलों के गुणवत्तापूर्ण विकास हेतु 8-12 वर्ष के पेड़ों में 350 ग्राम यूरिया एवं 250 ग्राम पोटाश (एमओपी) का व्यवहार करें। वहीं 15 वर्ष के उपर पेड़ों केलिए 450-500 ग्राम यूरिया एवं 300 से 350 ग्राम पोटाश का व्यवहार करें। छत्रक के बाहरी फैलाव से 1 मीटर अंदर की तरफ जमीन पर 2 फीट चौड़ाई में पेड़ के चारों तरफ गोलाई में उर्वरक डालकर कुदाल/फावड़ा से मिट्टी में मिला दें। डॉ तिवारी कहा कि उर्वरकों का प्रयोग पर्याप्त नमी होने पर ही करें।

अगले फसल की तैयारी में लेजर लैंड लेवलिंग बेहद उपयोगी : डॉ तिवारी

समस्तीपुर । अभी गेहूं की कटाई की जा रही है इसके पश्चात किसान के खेत खाली हो रहे है। ऐसे में अगली फसल को किफायती और लाभकारी बनाने केलिए खेत का लेजर लेवलर के द्वारा लेवलिंग करने का यह बहुत ही उचित समय है। खेत की गहरी जुताई करने के पश्चात उसे सही तरीके से तैयार कर लेने के बाद लेजर लैंड लेबलर से एक समान लेवलिंग कर लेने पर किसान भाई को अगले फसल में काफी सुविधा हो जाती है। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ आरके तिवारी ने गेहूं कटने के बाद खेत तैयार करने को लेकर किसान भाईयों केलिए सुझाव जारी करते हुए उक्त बातें कही है। उन्होंने कहा है कि अगली फसल केलिए खेत तैयार में लेजर लैड लेबलर बेहद उपयोगी उपकरण है। इसी क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र की विषय वस्तु विशेषज्ञ इंजीनियर विनीता ने बताया कि लेजर लैंड लेवलिंग खेत में एक समान नमी सुनिश्चित करता है और खरपतवार की समस्या को खत्म करता है। सटीक भूमि समतलीकरण से फसल की वृद्धिए परिपक्वता और उपज भी एक समान होती है। लेजर नियंत्रित भूमि समतलीकरण तकनीक का उपयोग करने से पानी कम बर्बाद होता हैए जिससे करीब 30: तक पानी की बचत की जा सकती है। ईण् विनीता इस मशीन के बारे में बताते हुए कहती है कि यह एक लेजर तकनीक पर आधारित यंत्र हैए जिसमें एक लेजरए जनरेटर और रिसीवर होता है। लेजर जनरेटर एक निश्चित ऊंचाई पर एक लेजर बीम का उत्सर्जन करता हैए जो भूमि की सतह पर निर्देशित होता है। रिसीवर इस बीम को पकड़कर यंत्र को बताता है कि भूमि कहाँ ऊँची है और कहाँ नीची। इस जानकारी के आधार परए यंत्र में लगे हल या अन्य उपकरणों की सहायता से मिट्टी को समतल किया जाता है। उन्होंने कहा कि लेजर ट्रांसमीटर लेजर बीम को सिग्नल भेजता है जिसे लेवलिंग बकेट पर लगे लेजर रिसीवर के द्वारा पकड़ लिया जाता है। ट्रैक्टर पर लगे कंट्रोल पैनल द्वारा रिसीवर के सिग्नल का विवेचन किया जाता है तथा हाइड्रोलिक नियंत्रण वाला वॉल्व को खोलता एवं बंद करता है। जिससे बकेट को आवश्यकतानुसार ऊपर उठाया व गिराया जा सकता है। ई विनिता ने बताया कि कुछ लेजर ट्रांसमीटर 0०01 से 15 प्रतिशत वर्गीकृत ढाल पर काम करने की क्षमता से युक्त होते है तथा भूमि पर दोहरे नियंत्रण ढाल बनाने के लिए प्रयुक्त होते है। नियंत्रण खोल ट्रैक्टर के 3.पॉइंट पर लगाकर अथवा ट्रैक्टर के ड्रॉ बार से खींचा जा सकता है। खोल के आयामए पहियों की संख्या और क्षमताए शक्ति स्रोत तथा क्षेत्र की परिस्थिति के अनुसार कम या अधिक हो सकती है। लेजर लैड लेवलर को चलाने के लिए 45 से 60 हॉर्स पॉवर तक के ट्रैक्टर की आवश्यकता होती है। सामान्यतः एक एकड़ भूमि को समतल बनाने के लिए लगभग दो से ढाई घंटे का समय लगता है। यदि भूमि काफी ऊबड़.खाबड़ है तो इससे अधिक समय भी लग जाता है। सबसे अच्छी बात यह है कि यह यंत्र किसान भाईयों केलिए कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में भाड़े पर भी उपलब्ध है। इसके लिए आवश्यकता तिथि से कुछ दिन पहले केवीके में आवेदन देना पड़ता है। उसके बाद किसानों को यह मशीन उपलब्ध कराया जाता है।

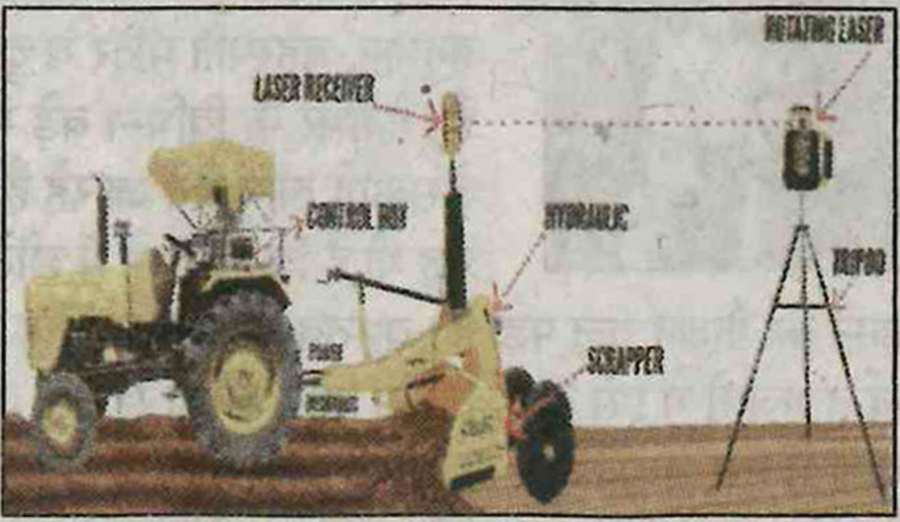

लेजर लैड लेबलर।

राष्ट्रीय सहारा-16/04/2024 P-5

संक्षिप्त खबरें

गरज और तेज हवा के साथ बारिश की संभावना

समस्तीपुर। अगले पांच दिनों तेज हवा के साथ बारिश की संभावना बरकरार है। गरज वाले बादलों की आसमान में मौजूदगी रह सकती है। इस बाबत डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 19 अप्रैल तक के मौसम पुर्वानुमान के अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में फिर से गरज वाले बादलों के बनने की संभावना है। 18-19 अप्रैल के आसपास अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। वर्षा के समय हवा तेज रह सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है, और इसके अगले 5 दिनों तक 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। न्यूनतम तापमान 20-21 डिग्री सेल्सियस के आसपास बने रहने की संभावना है। पुर्वानुमानित अवधि में 10 से 15 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पूर्व हवा चल सकती है। तेज हवा तथा वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाईयों को सलाह दिया जाता है कि वे गेहूं की काटने एवं दौनी में सावधानी बरतें। साथ ही सुरक्षित भंडारण सुनिश्चित कर ले।

राष्ट्रीय सहारा - 16/04/2024 P.08

भास्कर 17/4/25 पेज 13

पूर्वानुमान • अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री व न्यूनतम तापमान 20 से 21 डिग्री के बीच रहने के आसार

कल से बदलेगा मौसम, 19 अप्रैल को हल्की बारिश की संभावना, गेहूं व अरहर की कटाई-दौनी में बरतें सावधानी

भास्कर न्यूज़ | समस्तीपुर

तापमान में उतार-चढ़ाव से लोगों की परेशानी बढ़ गई है। बुधवार को अधिकतम तापमान 34.5 डिग्री और न्यूनतम तापमान 20.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मंगलवार को अधिकतम तापमान 33 डिग्री था। बुधवार को अचानक तापमान बढ़ने से दिन में गर्मी तेज महसूस हुई। पूसा मौसम विभाग के अनुसार 18 और 19 अप्रैल को कई जगहों पर हल्की बारिश हो सकती है। बारिश के समय हवा तेज चलेगी। इस दौरान अधिकतम तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है। अगले पांच दिनों तक अधिकतम तापमान 33 से 34 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। न्यूनतम तापमान 20 से 21 डिग्री सेल्सियस के बीच बना रह सकता है। पूर्व दिशा से 10 से 15 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है। मौसम विभाग ने 21 अप्रैल तक उत्तर बिहार के जिलों में गरज वाले बादल बनने की संभावना जताई है। किसानों के लिए वैज्ञानिकों ने सलाह दी है कि पिछले दिनों उत्तर बिहार के कई इलाकों में तेज हवा के साथ हल्की से मध्यम बारिश हुई है। आगे भी बारिश या बूंदाबांदी की संभावना है। ऐसे में गेहूं और अरहर की तैयार फसलों की कटाई और दौनी में सावधानी बरतें।

बुधवार को तेज धूप से परेशान रहे लोग।

प्याज की फसल पर कीट का प्रकोप

प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी जरूरी है। यह कीट आकार में बहुत छोटा होता है। पत्तियों की सतह पर चिपककर रस चूसता है। इससे पत्तियों पर दाग बनते हैं, जो बाद में हल्के सफेद हो जाते हैं। थ्रिप्स की संख्या अधिक होने पर प्रोफेनोफॉस 50 ईसी दवा का 1 मिली प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड दवा का 1 मिली प्रति 4 लीटर पानी में घोल बनाकर, बारिश न होने की स्थिति में छिड़काव करें। भिंडी की फसल में लीफ हॉपर कीट की निगरानी करें। यह कीट भी बहुत छोटा होता है। इसके नवजात और व्यस्क दोनों पत्तियों पर चिपककर रस चूसते हैं। इससे पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और पौधे कमजोर हो जाते हैं। फलन पर असर पड़ता है। इसका प्रकोप दिखने पर इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर, बारिश न होने की स्थिति में छिड़काव करें।

भास्कर 17/4/25 पेज 16

सलाह • मिर्च की खेती करने के लिए किसान अभी लगाएं नर्सरी, जल निकासी के प्रबंधन का रखें ध्यान

वैज्ञानिक तकनीक से करें मिर्च की खेती कम जमीन व लागत में अधिक आमदनी

मिर्च की अच्छी पैदावार के लिए उष्ण और उप-उष्ण जलवायु उपयुक्त

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के किसान अब परंपरागत खेती से हटकर नकदी फसलों की ओर बढ़ रहे हैं। आम, केला और गन्ना के साथ अब मिर्च की खेती भी किसानों के लिए लाभकारी साबित हो रही है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रमुख डॉ. आरके तिवारी ने बताया कि वैज्ञानिक तकनीक से मिर्च की खेती कर किसान अच्छी उपज और नकद आमदनी दोनों प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि जून-जुलाई में लगाई जाने वाली बरसाती मिर्च की खेती के लिए किसान अभी से नर्सरी तैयार करना शुरू करें। मिर्च की अच्छी पैदावार के लिए उष्ण और उप-उष्ण जलवायु उपयुक्त होती है। परंतु प्रतिकूल तापमान और पानी की कमी से कलियां, फूल और फल गिर सकते हैं। मिर्च की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली जीवांश युक्त दोमट मिट्टी सबसे बेहतर मानी जाती है। क्यारियां बनाकर उसमें मिर्च के बीज एक इंच की दूरी पर पंक्तियों में बोएं और मिट्टी से ढक दें। इसके बाद क्यारियों को खरपतवार या पुआल से ढक दें। सुबह या शाम को इसे हटा दें। बीजों को बोने से पहले थीरम या कैप्टान दवा से उपचारित करें। एक हेक्टेयर खेत के लिए 1 से 1.5 किलोग्राम बीज की जरूरत होती है। बुआई के 30 से 35 दिन बाद पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। खेत की तैयारी में प्रति हेक्टेयर 2.5 से 3 क्विंटल गोबर या वर्मी कम्पोस्ट, 100 से 110 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस और 60 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा रोपाई से पहले और बाकी दो बार, रोपाई के 40 से 50 दिन बाद और 80 से 120 दिन बाद छिड़काव के रूप में दें।

बिरौली में नर्सरी में लगे मिर्च के पौधे।

थ्रिप्स, लाही, सफेद मक्खी, डायबैक व उखड़ा का प्रकोप

मिर्च की फसल में थ्रिप्स, लाही, सफेद मक्खी, डायबैक और उखड़ा रोग जैसे कीटों का प्रकोप होता है। थ्रिप्स भूरे रंग का छोटा बेलनाकार कीट होता है। यह पत्तियों को खुरचकर रस चूसता है जिससे सफेद धब्बे बनते हैं और पत्तियां सिकुड़ जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल का 1 एमएल या डायमेथोएट 30 ईसी का 2 एमएल प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। खेत को खरपतवार मुक्त रखें और बीजों को उपचारित कर ही बुआई करें ताकि रोग कम लगें। इसको लेकर निगरानी भी जरूरी है।

किसान अच्छी किस्म के बीज का करें चुनाव

किसान मिर्च की पूसा ज्वाला, कल्याणपुर चमन, चमत्कार, सिंदूर, आंध्र ज्योति, भाग्य लक्ष्मी, जे 218, पंजाब लाल और पूसा सदाबहार जैसी किस्मों की खेती कर सकते हैं। पूसा सदाबहार बारहमासी किस्म है। इसके एक गुच्छे में 6 से 22 मिर्च लगती हैं। साल में 2 से 3 बार फलन होता है। यह किस्म 150 से 200 दिन में तैयार होती है। इसकी उपज क्षमता लगभग 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

दैनिक जागरण 17/4/25 पृ 3

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में 18-19 अप्रैल के आसपास अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान कम होगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
17 अप्रैल	32.0	20.0
18 अप्रैल	32.0	20.5
दरभंगा		
17 अप्रैल	32.0	20.5
18 अप्रैल	32.8	20.5
पटना		
17 अप्रैल	34.0	21.0
18 अप्रैल	34.0	21.0

डिग्री सेल्सियस में

18-19 अप्रैल को गरज के साथ बारिश, धूल भरी आंधी व बिजली गिरने की संभावना

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 18 से 22 अप्रैल 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में अगले दो दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल देखें जा सकते हैं. जिसके कारण 18 से 19 अप्रैल को गरज के साथ बारिश,

बिजली गिरने और धूल भरी आंधी की संभावना है, साथ ही तेज सतही हवायें चलने की भी संभावना है. दो दिनों के बाद 18 से19 अप्रैल के बाद मौसम शुष्क रहने की संभावना है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 34 से 38 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है. न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 15 से 20 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 34.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.9 डिग्री कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 20.6 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.3 डिग्री कम रहा.

प्रभात खबर
Friday, April 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/680156420f3279f5e994aa8d

आम के बागों को गुजिया कीट से बचाने की जरूरत : डॉ तिवारी

प्रतिनिधि, पूसा

कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने बताया कि आम के फल परिपक्वता की तरफ तेजी से अग्रसर हो रहे हैं. साथ ही बाग में कुछ समस्याएं भी आ रही है. उसमें से एक गुजिया कीट आम को क्षति पहुंचाने वालों में से एक है. कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को सावधानी बरतने का सुझाव देते हुए कहा कि गुजिया के मादा कीट अप्रैल-मई में पेड़ों से नीचे उतर कर भूमि की दरारों में प्रवेश कर सफेद थैलियों में अंडे देते हैं. अंडे भूमि में नवम्बर-दिसम्बर तक सुप्तावस्था में रहते हैं. छोटे-छोटे सफेद गुलाबी रंग के बच्चे भूमि में अण्डों से निकल कर दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में आम के पौधों पर चढ़ना प्रारम्भ कर देते हैं. अच्छी धूप निकलने के समय ये अधिक क्रियाशील होते हैं. बच्चे और वयस्क मादा कीट जनवरी से मई तक बौर, फलों के डंठलों एवं नर्म पत्तों से खूब रस चूस कर उनको सूखा देते हैं. यदि समय पर इसका नियंत्रण नहीं किया जाता है तो पूरी फसल प्रभावित हो सकती है. ऐसी अवस्था में क्लोरोपाइरीफास 20 ई.सी. (2 मिली. प्रति ली. पानी में) अथवा डायमेथोएट 30 ई.सी. (2 मिली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव स्टीकर के साथ निम्फ की प्रारम्भिक अवस्था में करना चाहिए. कीटनाशकों का छिड़काव सुबह अथवा शाम को करना ज्यादा प्रभावशाली होता है. कीटनाशक के प्रति सहिष्णुता की स्थिति में कीटनाशक को बदलकर प्रयोग करना चाहिए.

प्रभात खबर
Friday, April 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/680156420f3279f5e994aa96

भास्कर 18/4/25 पेज 22

कृषि • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वैज्ञानिक ने दी जानकारी

आम के बागों में गुजिया कीट का बढ़ा प्रकोप, टिकोले के डंठल हो रहे कमजोर

आम के बागों में कीट का प्रकोप दिखे तो करें दवा का छिड़काव

भास्कर न्यूज | पूसा

आम के बागों में इस साल गुजिया कीट यानी (मिली बग) का संक्रमण काफी अधिक देखने को मिल रहा हैं। यह कीट आम का एक प्रमुख नाशी कीट है। आम के बागों में बहुतायत रुप से इस कीट का प्रकोप होने से यह आम के फलों को व्यापक स्तर पर नुकसान पहुंचा रहा है। बिहार के आम उत्पादक किसान इस कीट का ससमय प्रबंधन करें। ये जानकारी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि आम के फल परिपक्वता की तरफ तेजी से अग्रसर हो रहें हैं। इस समय आम के ज्यादातर बागों गुजिया कीट यानी (मिली बग) काफी ज्यादा मात्रा में देखने को मिल रही है। इस कीट के निम्फ यानी बच्चे अंडे से निकलने के तुरंत बाद पेड़ के तने पर चढ़ना प्रारंभ कर देते है। इस कीट का झुंड कोमल शाखाओं, बौर तथा फलों के डंठलों पर देखा जाता हैं। गुजिया के अनगिनत निम्फ और वयस्क इन भागों का रस चूस लेते हैं। अत्याधिक रस चूसे जाने के कारण प्रभावित भाग मुरझा कर अंत में सूख जाते है। निम्फ तथा वयस्क एक चिपचिपा द्रव्य भी निकालते है। कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने बताया कि गुजिया के मादा कीट अप्रैल-मई में पेड़ों से नीचे उतर कर भूमि की दरारों में प्रवेश कर सफेद थैलियों में करीब 400-500 तक अंडे देते है। अंडे भूमि में नवम्बर-दिसम्बर तक सुसुप्तावस्था में रहते है। इसके छोटे-छोटे सफेद गुलाबी रंग के बच्चे भूमि में अण्डों से निकल कर दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में आम के पौधों पर चढ़ना प्रारंभ कर देते हैं। अच्छी धूप निकलने के समय ये अधिक क्रियाशील होते हैं।

पेड़ों से नीचे उतर कर सफेद थैलियों में अंडे देते हैं कीट

आम के फलों में लगा गुजिया कीट।

उपज कम होने की आशंका

बच्चे और वयस्क मादा कीट जनवरी से मई तक बौर, फलों के डंठलों एवं नर्म पत्तों से खूब रस चूस कर उनको सूखा देते हैं। यदि समय पर इसका नियंत्रण नहीं किया जाता है तो आम की पूरी फसल प्रभावित हो जाती है। गुजिया कीट अगर पेड़ पर चढ़ गया हो तो ऐसी अवस्था में किसान क्लोरोपाइरीफास 20 ई.सी दवाई की 2 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में अथवा डायमेथोएट 30 ई.सी दवाई की 2 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर पेड़ो पर छिड़काव करें। इस दवाई में स्टीकर यानी गोंद जरूर मिला दें। किसान इन दवाओं का छिड़काव सुबह अथवा शाम को ही करें।

रखें ध्यान : गुजिया कीट का प्रकोप कम हो इसके लिए करें प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया बाग के बार्षिक प्रभावी प्रबंधन के लिए आम उत्पादक किसान बाग की जुताई करके अक्टूबर-नवम्बर माह में खरपतवार एवं अन्य घासों को बागों से निकाल दें। इससे सुसुप्तावस्था में रहने वाले गुजिया कीट के अंडे धूप गर्मी द्वारा नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद दिसम्बर माह के तीसरे सप्ताह में वृक्ष के तने के आस-पास क्लोरपाइरीफॉस चूर्ण (1.5 प्रतिशत) 250 ग्राम प्रति वृक्ष मिट्टी में डालने से वयस्क कीट से निकलने वाले निम्फ मर जाते हैं। यदि अल्काथीन पॉलीथीन (400 गेज) की 30 सेमी. पट्टी पेड़ के तने के चारों ओर भूमि की सतह से 50 सेमी ऊँचाई पर दिसम्बर के चौथे सप्ताह में लपेट दिया जाता है तो निम्फ का वृक्षों पर ऊपर चढ़ना रुक जाता है। पट्टी के प्रयोग से पहले तने पर मिट्टी के लेप को प्रयोग में लाया जाता है। इसके बाद इसके ऊपर अल्काथीन की पट्टी बाँधी जाती है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 22 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में दो-तीन दिनों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमानकमहोगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
18 अप्रैल	34.5	20.6
19 अप्रैल	34.5	21.0
दरभंगा		
18 अप्रैल	34.5	21.0
19 अप्रैल	35.0	21.0
पटना		
18 अप्रैल	36.0	22.0
19 अप्रैल	36.0	22.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 18-04-25

आज-कल बिजली गिरने की संभावना

पूसा,निसं। उत्तर बिहार के जिलों में अगले 5 दिनों तक हल्के से मध्यम बादल रह सकते हैं। इस दौरान 18-19 अप्रैल को गरज के साथ वर्षा व बिजली गिरने एवं धूल भरी आँधी की संभावना मौसम विभाग ने जताया है। जिसके कारण सतही हवाएं काफी तेज चलने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों के बाद मौसम शुष्क रहेगा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने शुक्रवार को 22 अप्रैल तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में औसतन 15 से 20 किमी प्रति घंटा की गति से पुरवा हवा चल सकती है। इस दौरान सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 एवं दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 34 से 38 डिग्री एवं न्यूनतम 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।

Hindustan 18-04-2025

राष्ट्रीय सहारा 18/4/25 पेज 5

आम सहित फलदार पेड़ों को गुजिया कीट से बचायें : डॉ आरके तिवारी

समस्तीपुर (एसएनबी)। आम के फल परिपक्वता की तरफ तेजी से अग्रसर हो रहें है। लेकिन साथ ही बाग में कुछ कीटों को प्रकोप भी बागों में देखा जा रहा है। उनमें से एक गुजिया कीट (मिली बग) जो आम के पैदावार को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कीट है। जिसका प्रकोप बहुतायत रुप से देखा जा रहा है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय .षि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर के अन्तर्गत संचालित .षि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने गुरूवार को आम की पैदावार बढाने केलिए तकीनकी सुझाव जारी करते हुए बताया कि इस कीट के निम्फ ड्डबच्चे) अण्डों से निकलने के तुरंत बाद पेड़ के तने पर चढ़ना प्रारम्भ कर देते है। ये झुण्ड में कोमल शाखाओं, बौर तथा फलों के डंठलों पर देखे जा सकते है। डॉ तिवारी ने बताया कि गुजिया के अनगिनत निम्फ और वयस्क इन भागों का रस चूस लेते है। अत्याधिक रस चूसे जाने के कारण प्रभावित भाग मुरझा कर अंत में सूख जाता है। निम्फ तथा वयस्क एक चिपचिपा द्रव्य भी निकालते है। वहीं .षि विज्ञान केन्द्र बिरौली के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को सावधानी बरतने हेतु जानकारी दिया कि गुजिया के मादा कीट, अप्रैल-मई में पेड़ों से नीचे उतर कर भूमि की दरारों में प्रवेश कर सफेद थैलियों में करीब 400-500 तक अंडे देती है। अंडे भूमि में नवम्बर-दिसम्बर तक सुसुप्तावस्था में रहते है। छोटे-छोटे सफेद गुलाबी रंग के बच्चे भूमि में अण्डों से निकल कर दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में आम के पौधों पर चढ़ना प्रारम्भ कर देते है। अच्छी धूप निकलने के समय ये अधिक क्रियाशील होते हैं। बच्चे और वयस्क मादा कीट जनवरी से मई तक बौर, फलों के डंठलों एवं नर्म पत्तों से खूब रस चूस कर उनको सूखा देते है। यदि समय पर इसका नियंत्रण नहीं किया जाता है तो पूरी फसल

गुजिया कीट से घिरा आम की डंठल।

प्रभावित हो सकती है। इस कीट से बचाव का सुझाव देते हुए डॉ तिवारी ने बताया कि गुजिया पेड़ पर चढ़ गई हो तो ऐसी अवस्था में क्लोरोपाइरीफास 20 ई.सी. (2 मिली. प्रति ली. पानी में) अथवा डायमेथोएट 30 ई.सी. ड्ड2 मिली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव स्टीकर के साथ निम्फ की प्रारम्भिक अवस्था में करना चाहिए। कीटनाशकों का छिड़काव सुबह अथवा शाम को करना ज्यादा प्रभावशाली होता है।कीटनाशक के प्रति सहिष्णुता की स्थिति में कीटनाशक को बदलकर प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बाग की जुताई करके अक्टूबर-नवम्बर माह में खरपतवार एवं अन्य घासों को बागों से निकाल देने से सुसुप्तावस्था में रहने वाले अंडे धूप गर्मी द्वारा नष्ट हो जाते है। इसके बाद दिसम्बर माह के तीसरे सप्ताह में वृक्ष के तने के आस-पास क्लोरपाइरीफॉस चूर्ण ड्ड1.5:) 250 ग्राम प्रति वृक्ष मिट्टी में डालने से अण्डों से निकलने वाले निम्फ मर जाते है। यदि अल्काथीनध्पॉलीथीन ड्ड400 गेज) की 30 सेमी. पट्टी पेड़ के तने के चारों ओर भूमि की सतह से 50 सेमी. ऊँचाई पर दिसम्बर के चौथे सप्ताह में गुजिया के निकलने से पहले लपेट दिया जाता है तो निम्फ का वृक्षों पर ऊपर चढ़ना रुक जाता है। पट्टी के प्रयोग से पहले तने पर मिट्टी के लेप को प्रयोग में लाया जाता है। इसके बाद इसके ऊपर अल्काथीन की पट्टी बाँधी जाती है। पट्टी के दोनों सिरे सुतली से बाँधने चाहिए। इसके बाद थोड़ी ग्रीस पट्टी के निचले धेरे पर लगाने से गुजिया को पट्टी पर नीचे से चढ़ने को रोका जा सकता है। पट्टी के नीचे वाले खुले तने पर तथा तने के आस-पास क्लोरोपाइरीफॉस को कपड़े की पोटली की सहायता से डालना चाहिए। यह पट्टी बाग में स्थित सभी आम के पेड़ों तथा अन्य वृक्षों पर भी बाँध देनी चाहिए। पॉलीथीन की चादर पर इसके बच्चे, फिसल कर नीचे गिर जाते है।

ओलावृष्टि की चोट से छोटे फलों पर सीधा प्रभाव पड़ता है. फल टूटकर गिर जाते हैं या उनकी सतह पर गहरे धब्बे और खरोंचें उभर आती हैं.

अचानक बदले मौसम ने किसानों को किया मायूस, खेत में खड़ी गेहूं की फसल को अधिक नुकसान

आंधी, पानी व ओलावृष्टि से आम, लीची व गेहूं को नुकसान

प्रतिनिधि, पूसा/मोतिहारी/मधुबन

गुरुवार की देर शाम से आयी आंधी पानी के साथ ओलावृष्टि भी हुई. आंधी, पानी व ओला वृष्टि से उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, पूर्वी चंपारण समेत कई जिलों में आम, लीची व खेतों में बची गेहूं की फसल को काफी नुकसान हुआ है. किसान मायूस हैं. कई इलाकों में जहां ओलावृष्टि हुई वहां आम, लीची व सब्जी की फसल को नुकसान पहुंचा है. मक्का की भी फसलें भी गिरी हैं. हालांकि, बारिश के कारण सब्जी सहित कई फसलों को काफी लाभ भी पहुंचा है. अधिसंख्य किसान गेहूं की तैयारी कर चुके थे. कुछ किसानों की खेतों में फसल लगी रह गयी थी, उन्हें नुकसान उठाना पड़ा है. वहीं आम व लीची की फसल को ओला के कारण अधिक क्षति पहुंची है. किसान आम व लीची की अच्छी फसल देखकर काफी खुश थे. लेकिन, अचानक आयी इस प्राकृतिक आपदा ने उन्हें मायूस कर दिया है. ओला के कारण फसल टूटकर गिरे हैं. इसके अलावा जिस फली पर ओला का चोट आ गया है, आगे चलकर उसका फल खराब हो जायेगा. किसान इस बात को लेकर भी चिंतित हैं. पूर्वी चंपारण के मधुबन में पश्चिमी विक्षोभ के कारण बंगाल की खाड़ी से आने वाली हवाओं के कारण असमय बारिश व ओलावृष्टि से गेहूं व सब्जी की फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है. क्षेत्र में कभी तक 25 फीसदी गेहूं खेत में लगा है या कटनी के बाद खेत ही पड़ा हुआ था.

पूर्वी चंपारण के मधुबन में बारिश से बर्बाद गेहूं की फसल.

आम व लीची होगी प्रभावित

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के प्रो. डॉ. एसके सिंह का कहना है कि इस प्राकृतिक आपदा ने खासकर आम के टिकोले और लीची के विकसित हो रहे फलों को निशाना बनाया है, जिससे न केवल उपज प्रभावित हुई है, बल्कि गुणवत्ता और बाजार मूल्य भी घटने की आशंका है. तैयार गेहूं की फसल के लिए इस बार के अप्रत्याशित बारिश एवं ओला मानों अभिशाप बनकर कुदरत ने कहर बरसा दिया हो. प्रभावित क्षेत्रों का आधिकारिक तौर पर क्षति का आकलन तो फिलहाल नहीं हो पाया है पर फसलों की स्थिति देखने से घोर क्षति का अनुमान लगाया जा रहा है. डॉ. सिंह ने बताया कि ओलावृष्टि की चोट से छोटे फलों पर सीधा प्रभाव पड़ता है. फल टूटकर गिर जाते हैं या उनकी सतह पर गहरे धब्बे और खरोंचें उभर आती हैं, जिससे वे निर्यात योग्य नहीं रहते. इसके अलावा, पौधों की कोमल पत्तियां, नई शाखायें और पुष्प गुच्छे भी क्षतिग्रस्त होते हैं, जिससे वृक्ष की वृद्धि रुक जाती है और आगामी मौसम की पैदावार पर भी विपरीत असर पड़ता है. घावग्रस्त पौधों में फफूंदीय एवं जीवाणु रोगों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है.

प्रो. डॉ. एसके सिंह,
विभागाध्यक्ष, पीजी विभाग, प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी, प्रधान, केला अनुसंधान केंद्र, गोरौल

मार-कर 19/4/25 पेज 13

सलाह • पूसा केंद्रीय विवि के कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय कृषि वैज्ञानिक ने दी खेती की जानकारी

मूंग की बुआई का सही समय, किसान वैज्ञानिक विधि से करें खेती तो कम लागत में होगी अधिक आमदनी

भास्कर न्यूज | पूसा

हाल की बारिश से खेतों में नमी बनी है। किसान इस नमी का लाभ उठाकर गेहूं काटने के बाद खेतों की जुताई कर लें। फिर तुरंत मूंग की बुआई करें। यह सलाह कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के प्रधान सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी। उन्होंने कहा कि मूंग की फसल दलहन की कमी को दूर करेगी। साथ ही धान की रोपाई से पहले मूंग के पौधों को मिट्टी में मिलाकर खेत की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाई जा सकती है। डॉ. तिवारी ने बताया कि मूंग बिहार की प्रमुख ग्रीष्मकालीन दलहनी फसल है। इसमें 23 से 24 प्रतिशत प्रोटीन होता है। साथ ही कई मिनरल्स और विटामिन भी मिलते हैं। उन्होंने कहा कि मूंग की बुआई का सही समय 15 मार्च से 15 अप्रैल तक होता है। जो किसान अब तक बुआई नहीं कर पाए हैं, वे जल्द से जल्द बुआई कर लें। देर होने पर गर्म हवाएं और बारिश से फलियों को नुकसान हो सकता है। अप्रैल में जल्दी पकने वाली किस्में लगाना बेहतर रहेगा। जैव विधि से बीज उपचार के लिए 25 ग्राम गुड़, 20 ग्राम राइजोबियम और पीएसबी कल्चर को 50 मिली पानी में मिलाएं। इस घोल को 1 किलो बीज पर छिड़कें। हल्के हाथों से मिलाकर बीज पर लेप चढ़ाएं। फिर बीज को 1 से 2 घंटे छायादार जगह पर सुखाएं। इसके बाद बुआई करें।

केवीके में वैज्ञानिक तकनीक से लगाई गई मूंग की फसल।

मूंग के बीज को फफूंदनाशक से उपचारित करें

वैज्ञानिक विधि से बुआई के लिए खेत में सड़ी गोबर की खाद, नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें। खेत की दो-तीन बार जुताई कर पाटा चला दें। बुआई से पहले मूंग के बीज को कारबेंडाजिम फफूंदनाशक से उपचारित करें। 2.5 ग्राम दवा प्रति किलो बीज मिलाएं। इसके बाद बीज को राइजोबियम और पीएसबी कल्चर से भी उपचारित करें। ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई में 20 से 25 किलो बीज प्रति हेक्टेयर की जरूरत होती है।

पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर रखें किसान

डॉ. तिवारी ने बताया कि छिटकाव विधि से कम उपज मिलती है। पंक्ति में बुआई करने से उपज ज्यादा होती है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 5 से 7 सेंटीमीटर रखें। रस्सी या जीरो टिलेज विधि से बुआई करें। बीज को 3 से 4 सेंटीमीटर गहराई में बोएं ताकि अच्छा अंकुरण हो। बुआई के लिए आईपीएम 2, आईपीएम 3, एसएमएल 668 और पीडीएम 139 जैसे प्रभेद चुनें। हल्की मिट्टी वाले खेतों में 4 से 5 बार सिंचाई करें। भारी मिट्टी में 2 से 3 बार सिंचाई पर्याप्त है।

भास्कर 19/4/25 पेज 13

पूर्वानुमान : अगले दो दिनों तक कई जिलों में आसमान में हल्के बादल छाए रहने के आसार

जिले में आंधी-बारिश से फसलों को भारी नुकसान पेड़ गिरने से आवागमन बाधित, बिजली आपूर्ति ठप

सिटीरिपोर्टर | समस्तीपुर

जिले में गुरुवार की देर शाम आई आंधी-तूफान व बारिश काफी नुकसान पहुंचा। तेज हवा के साथ हुई बारिश से आम और लीची के फसल के अलावे कई अन्य चीजों को भी नुकसान पहुंचा। आंधी के कारण कई आम और द्वितीय उत्पादन उत्पादक किसान के बागों में जहां ज्यादा संख्या में फल झड़े। वहीं कई जगहों पर पेड़ पौधे भी टूट कर बिजली के तार पर गिर पड़े जिससे पूरी रात विद्युत आपूर्ति बाधित रहा। इससे किसानों को काफी नुकसान पहुंचा है। कटाई के बाद खेत में रखी हुई गेहूं की फसल बारिश में भींग गई है। अब जब तक कड़ी धूप नहीं निकलती है तो कटे हुए फसल की दौनी करना मुश्किल है। वहीं मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल देखें जा सकते है। इसके कारण 19 अप्रैल को गरज के साथ बारिश, बिजली गिरने और धूल भरी आंधी की संभावना है। साथ ही तेज सतही हवाएं चलने की भी सम्भावना है। 19 अप्रैल के बाद मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा मौसम विभाग के अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान 34 से 38 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 15 से 20 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की सम्भावना है।

बारिश में खेतों में भिंगा भूसा ।

मौसम का बदला मिजाज, अप्रैल में महसूस हुआ फरवरी सा एहसास

शुक्रवार की सुबह तक रुक-रुक हुई बारिश, इस बदलाव से अधिकतम तापमान में भी पांच डिग्री सेल्सियस गिरावट दर्ज की गई, गर्मी में राहत

- इससे पहले अप्रैल की शुरुआत में ही जून जैसी गर्मी थी
- अगले कुछ दिनों में फिर से तापमान में वृद्धि हो सकती

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : जिले में बीते कुछ दिनों से लगातार बढ़ती गर्मी से परेशान लोगों को गुरुवार शाम से राहत मिली, जब अचानक मौसम का मिजाज बदल गया। अप्रैल की शुरुआत से ही जिले में जून जैसी गर्मी महसूस की जा रही थी, लेकिन गुरुवार शाम से चली ठंडी पुरवा हवा और रुक-रुक कर हुई बारिश ने लोगों को फरवरी जैसी हल्की ठंडक का एहसास कराया। गुरुवार को शाम से ही आसमान में बादल छाने लगे थे और हवाएं तेज हो चली थीं। इसके साथ ही हल्की बारिश का सिलसिला शुरू हुआ, जो शुक्रवार की सुबह तक रुक-रुक कर जारी रहा। इस बदलाव ने मौसम में ठंडक घोल दी और अधिकतम तापमान में भी 5 डिग्री सेल्सियस गिरावट दर्ज की गई। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरुवार को जिले का अधिकतम तापमान 34.5 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 20.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं शुक्रवार को अधिकतम तापमान गिरकर 28.8 डिग्री सेल्सियस पर आ गया, जबकि न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस रहा। इसके अलावा शुक्रवार को 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पुरवा हवा चली, जिसने मौसम को और अधिक सुहावना बना दिया। मौसम के इस बदलाव को राहत की सांस के रूप में लिया। सुबह-शाम टहलने वाले लोगों की संख्या में इजाफा देखा गया और बाजारों में भी चहल-पहल सामान्य रही। हालांकि मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि यह बदलाव अस्थायी है और अगले कुछ दिनों में फिर से तापमान में वृद्धि हो सकती है।

मौसम में परिवर्तन के बाद पार्क में खेलते बच्चे • जागरण

संस, जागरण, हसनपुर : गुरुवार देर शाम आई आंधी, पानी ने प्रखंड क्षेत्र में जमकर तबाही मचाई है। कई स्थानों पर लगे टीन शेड हवा में उड़ गए। आंधी के कारण आम की फसलों को भारी क्षति पहुंची। फल लदे वृक्ष धराशाई हो गए। कई स्थानों पर विद्युत पोल टूटकर गिरने से सभी गांवों की विद्युत व्यवस्था पूर्णरूपेण बाधित हो गई। मरांची उजागर गांव के वार्ड नंबर-10 में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या-116 का एसबेसटस का बना छत आंधी की हवा में उड़ गया। पटसा गांव के सुभाषचंद्र झा की भूमि में लगा विशालकाय आम का तीन पेड़ मकान पर गिर पड़ा। पेड़ के नीचे एक व्यक्ति व भैंस की पड़िया दब गई। वरिष्ट किसान सलाहकार सुभाषचंद्र झा उर्फ बिदुर झा ने बताया कि गुरुवार की रात आई तेज आंधी के साथ मूसलाधार बारिश में प्रखंड क्षेत्र के करीब सैकड़ों खेतों में लगी केला, आम, लीची, अमरूद, परवल करेला, टमाटर, खीरा आदि की फसलें को पूर्णरूप से नष्ट हो गया है। वहीं किसान गंगोत्री प्रसाद राय, शंभु कुमार राय, रवींद्र कुमार यादव, परमील यादव, नवीन कुमार आदि ने बताया कि गुरुवार की रात आई भीषण तूफान में हुई फसल क्षति से किसानों की कमर टूट गई है।

बिथान प्रखंड क्षेत्र में गुरुवार की देर संध्या मूसलाधार बारिश व आंधी से सैकड़ों एकड़ में गेहूं एवं मक्का की फसल बर्बाद, किसानों में मायूसी • जागरण

संस, जागरण, बिथान : प्रखंड में आई बारिश से सैकड़ों एकड़ में लगी गेहूं और मक्का की फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई। खेतों में तैयार गेहूं और मक्का खड़ी फसल देखते ही देखते बर्बाद हो गई। फसल बर्बाद होने से किसान हताश और परेशान हैं। प्रखंड क्षेत्र के पुसहो, सोहमा, जगमोहरा, सलहाचंदन, सलहाबुजुर्ग, मरथुआ, सिहमा, करांची, बेलसंडी, बिथान, सखवा, उजान आदि पंचायतों के किसान सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। ओले गिरने और तेज हवाओं के चलते फसलें जमीन पर गिर गईं। खासकर पके खड़ी गेहूं व मक्का के फसल को भारी नुकसान हुआ।बीएओ इन्द्र कुमार झा ने बताया कि क्षेत्र का सर्वे कराया जा रहा है, जल्द ही रिपोर्ट के आधार पर मुआवजे की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। प्रखंड प्रमुख ललिता देवी प्रशासन से नुकसान का आकलन कर उचित मुआवजा देने की मांग की है।

उत्तर बिहार के जिलों में गरज वाले बादल के साथ होगी वर्षा

संस, जागरण • पूसा (समस्तीपुर) : उत्तर बिहार में एक दो दिन आसमान में हल्के से मध्यम बादल रहेंगे। गरज के साथ वर्षा बिजली गिरने और तेज सतही हवा चलने की संभावना है। इस दौरान 15 से 20 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से पुरवा हवा चलेगी। दो दिनों बाद मौसम शुष्क रहेगा। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय मौसम विभाग के विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि अगले चार दिनों में अधिकतम तापमान 34 से 38 और न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। शुक्रवार का अधिकतम तापमान 28.8 एवं न्यूनतम तापमान 20.0 डिग्री सेल्सियस रहा। अधिकतम तापमान 6.8 और न्यूनतम तापमान 1.9 डिग्री सेल्सियस सामान्य से कम रहा। वर्षा 20 मिलीमीटर रिकार्ड किया गया।

किसानों के लिए सुझाव : अगले दो दिनों तक बारिश की संभावना को देखते हुए किसान गेहूं की कटाई सावधानी पूर्वक करें। अगर किसान सब्जी वाले खेतों में या किसी अन्य खड़ी फसलों में कीटनाशक का छिड़काव करना चाहते हैं तो एक-दो दिनों तक स्थगित कर दें। खेत की जुताई में 20 किलो ग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 एवं सोना तथा उड़द के लिए पंत उड़द-19 का उपयोग करें। खेत की जुताई में 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 एवं सोना तथा उड़द के लिए पंत उड़द-19, पंत उरद 31, नवीन एवं उत्तरा किस्में बोआई के लिए अनुशंसित हैं। बोआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। शोधित बीज को उचित राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बोआई करें। बीज दर छोटे दानों के प्रभेदों के लिए 20-25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों के लिए 30-35 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बोआई की दूरी 30 गुणे10 सेमी रखें। भिंडी की फसल में लीफ हापर कीट की निगरानी करें। यह कीट दिखने में सूक्ष्म होता है।

Dainik Jagran 19-04-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 22 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में दो-तीन दिनों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमानकमहोगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
20 अप्रैल	34.5	20.6
21 अप्रैल	34.5	21.0
दरभंगा		
20 अप्रैल	34.5	21.0
21 अप्रैल	35.0	21.0
पटना		
20 अप्रैल	36.0	22.0
21 अप्रैल	36.0	22.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 20-04-2025

बैठक करते एनडीए कार्यकर्ता.

समुचित संसाधन जुटाने की जरूरत : महेश्वर हजारी

पूसा. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित आईबी में मंत्री महेश्वर हजारी की अध्यक्षता में एनडीए कार्यकर्ताओं की बैठक हुई. इसमें मुख्यरूप से आगामी 24 अप्रैल को झंझारपुर में पीएम की आमसभा में अधिक से अधिक लोगों को जुटाने की दिशा में मंथन किया गया. मंत्री श्री हजारी ने कहा कि झंझारपुर जाने के लिए समुचित संसाधन जुटाने की जरूरत है.

प्रभात खबर
Monday, April 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6805470ac604e83930852de

दैनिक भास्कर 21-04-25 P-16

कृषि • समतल खेत से फसल उत्पादन में वृद्धि होने के साथ-साथ पानी की बचत, खरपतवार नियंत्रण में सुधार

गेहूं कटाई के बाद किसान खाली खेतों को लेवलर मशीन से कराएं समतल

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बेहतर और अच्छी खेती के लिए जमीन का समतल होना अति आवश्यक होता है। भूमि के समतल होने के कई सारे फायदें है जो किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी हैं। समतल भूमि में खेती करने से जहां खेती की लागत में कमी आती है। वहीं समय की भी बचत होती है। इतना ही नहीं समतल भूमि में सिंचाई के दौरान पानी भी काफी कम लगता है। बिहार के किसान अगर एक बार लेजर लेवलर मशीन चलवाकर अपने खेतों की भूमि को समतल करवा लेते हैं तो किसानों को इसका लाभ कई सालों तक मिलता रहेगा। ये जानकारी डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने है। उन्होंने कहा कि लेजर लैंड लेवलर मशीन परंपरागत विधियों से अलग हटकर एक अत्याधुनिक तकनीक वाली मशीन है। इसमें लगा लेजर किरणों के माध्यम से लेवलर को नियंत्रित कर भूमि को समतल करने का काम करता है। इस मशीन से खेत को समतल करने के दौरान खासकर इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होती है की खेत की जुताई अच्छी से की गई हो तथा खेत में 5 प्रतिशत से अधिक नमी न हो। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की विषय वस्तु विशेषज्ञ इंजीनियर विनीता कश्यप ने बताया कि अभी गेहूं की कटाई की जा रही है। गेहूं कटाई बाद किसान के खेत खाली हो जाएंगे ऐसे में खेत का लेजर लेवलर द्वारा लेवलिंग करने के लिए बहुत ही उचित समय है। किसान खेत की गहरी जुताई कराने के पश्चात अपने खेतों की जमीन को लेजर लैंड लेबलर से एक समान लेवलिंग करा लें। खेतों का लेवल हो जाने से किसानो को अगले फसल में काफी सुविधा होगी। इंजीनियर ने बताया कि लेजर लैंड लेवलिंग मशीन से खेतों को समतल कराने के बाद पूरे प्लॉट में एक समान नमी बना रहता है। वहीं ज्यादा खरपतवार निकलने की समस्या भी लगभग खत्म हो जाती है।

सिंचाई में समय और लागत की बचत, पर्यावरण संरक्षण भी

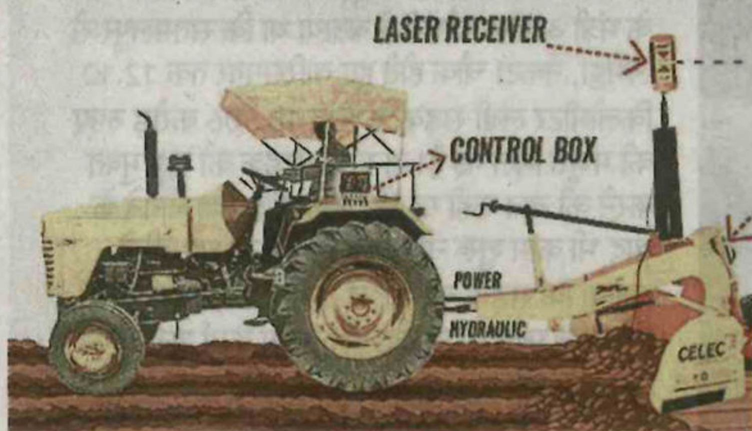

लेजर लेवलर मशीन।

केवीके से किराये पर किसान ले सकते हैं लेजर लेवलर मशीन

ई.विनीता कश्यप ने बताया कि सबसे अच्छी बात यह है कि इस मशीन का उपयोग किसान भारे पर लेकर भी कर सकते हैं। यह मशीन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में भी उपलब्ध है। अगर कोई किसान इसका उपयोग करना चाहते हैं तो भाड़े पर कृषि विज्ञान केंद्र से ले सकते हैं। इसके लिए किसान को कुछ दिन पहले केंद्र में आवेदन देना पड़ता है।

खेतों के समतलीकरण के फायदों से वैज्ञानिक ने कराया अवगत

इंजीनियर विनीता कश्यप के अनुसार भूमि के समतलीकरण से फसल की वृद्धि, फसल की समय से परिपक्वता, उपज में बढ़ोतरी सब एक समान होती है.लेजर नियंत्रित भूमि समतलीकरण तकनीक का उपयोग करके किसान सिंचाई में 30 प्रतिशत तक पानी की भी बचत कर सकते है जिससे पानी की बर्बादी कम होती है और संसाधनों का संरक्षण होता है। इस मशीन के बारे में बताते हुए ई. विनीता कश्यप कहती हैं कि यह एक लेजर तकनीक पर आधारित यंत्र है जिसमें एक लेजर जनरेटर और रिसीवर होता है। लेजर जनरेटर एक निश्चित ऊंचाई पर एक लेजर बीम का उत्सर्जन करता है जो भूमि की सतह पर निर्देशित होता है। रिसीवर इस बीम को पकड़कर यंत्र को बताता है कि भूमि कहाँ ऊँची है और कहाँ नीची। इस जानकारी के आधार पर यंत्र में लगे हल या अन्य उपकरणों के माध्यम से मिट्टी को समतल किया जाता है। लेजर ट्रांसमीटर लेजर बीम को भेजता है जिसे लेजर रिसीवर (जो लेवलिंग बकेट पर लगा हुआ होता है) के द्वारा पकड़ लिया जाता है। ट्रैक्टर पर लगे कंट्रोल पैनल द्वारा रिसीवर के सिग्नल का विवेचन किया जाता है तथा हाइड्रोलिक नियंत्रण वाला वॉल्व को खोलता एवं बंद करता है जो खोल को ऊपर या नीचे करता है। लेजर ट्रांसमीटर लेजर किरणों जो कि समतल बकेट पर लगे लेजर रिसीवर द्वारा रोका जाता है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 22 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में दो-तीन दिनों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमानकमहोगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
21 अप्रैल	36.0	25.0
22 अप्रैल	36.5	25.0
दरभंगा		
21 अप्रैल	36.5	25.0
22 अप्रैल	36.5	26.0
पटना		
21 अप्रैल	37.0	27.0
22 अप्रैल	37.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 21-04-2025

बीज उत्पादन क्षेत्र का किया निरीक्षण

नरकटियागंज (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि वि वविद्यालय पूसा समस्तीपुर द्वारा प्रमाणीकरण संस्था मुज्जफरपुर के राम.ष्ण परमहंस सिंह ने रबी फसल गेहूं तथा अलसी के बीज उत्पादन क्षेत्र का निरीक्षण किया है। निरीक्षण के दौरान उन्होंने प्रक्षेत्र में चलाए जा रहे बीज उत्पादन क्षेत्र का भ्रमण कर .षि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा विशेषज्ञ डॉ. रातुल मोनी राम से आवश्यक जानकारी ली। विशेषज्ञ डॉ मोनी ने बताया कि 10 एकड़ परिक्षेत्र में गेहूं की अधिक उपज देने वाली प्रजाति एच डी 2967 तथा अलसी के प्रभेद साबौर तीसी- 2 के बीज उत्पादन का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस बीज का उत्पादन में गेहूं की समस्त बुआई सुपर सीडर मशीन के द्वारा कराई गई है। उन्होंने यह भी बताया कि अलसी के उच्च गुणवत्ता युक्त प्रभेद साबौर तीसी-2 के बीज उत्पादन का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इन सभी प्रजातियों के बीज उत्पादन का कार्यक्रम फसलों के उत्पादन की नवीन प्रौद्योगिकियों को प्रयोग कर किया गया है। मौके पर .षि विज्ञान केंद्र के अशोक बैठा, नितेश कुमार आदि उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 21-04-2025

भास्कर 22/4/25 पेज 13

सलाह • इस समय आम के बागों में मधुआ और चूर्णिल आसिता रोग लगने की रहती है ज्यादा आशंका

आम के पेड़ों पर फल को टिकाने, स्वस्थ बनाए रखने और रोगों के नियंत्रण के लिए बागों की निगरानी करें

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के आम के बागों में इस समय लगभग फल लग चुके हैं। अब आम उत्पादकों के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया है कि पेड़ो पर लगे उनके आम के फल अधिक से अधिक संख्या में टिके रहे और स्वस्थ बने रहें। इसके लिए आम उत्पादकों को वैज्ञानिक द्वारा बताएं गए तमाम तरह के सलाह पर यथाशीघ्र अमल करना होगा। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी हैं। उन्होंने बताया कि आम के इस वृद्धि चरण में कीटों और रोगों के लगने की संभावना ज्यादा होती हैं। इस समय कीट व रोग से आम के फल बचाना आम उत्पादकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। डॉ. सिंह ने बताया कि इस समय आम के बागों में मधुआ (हॉपर) एवं चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू) कीट व रोग ज्यादा लगता हैं। मधुआ रोग के नियंत्रण के लिए आम उत्पादक किसान पेड़ो पर इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एसएल) की 1 एमएल मात्रा प्रति 2 लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करें। इसके अलावे किसान हैक्साकोनाजोल दवाई की 1 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी या डाइनोकैप (46 ईसी) दवाई की 1 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पेड़ो पर छिड़काव करें। इससे चूर्णिल आसिता रोग की उग्रता में कमी आती हैं। उन्होंने बताया कि फल गिरने की समस्या को रोकने के लिए किसान प्लेनोफिक्स नामक हार्मोन दवाई की 1 एमएल मात्रा प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर पेड़ो पर छिड़काव करें। इसके प्रयोग से फलों के गिरने में कमी आती है। उन्होंने बताया कि इस समय किसान बाग में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करें। सिंचाई से मिट्टी में नमी बनी रहेगी। किसान ध्यान रखें कि बाग में जलभराव न हो क्योंकि इससे जड़ सड़न और अन्य रोगों का खतरा बढ़ सकता है।

मधुआ कीट से ग्रसित मंजर व फल।

कृषि रसायनों का संतुलित प्रयोग बहुत जरूरी

डॉ. सिंह ने बताया कि कीटों और रोगों की उपस्थिति के अनुसार ही आम के बागों में रसायनों का छिड़काव करें। किसान आम के बागों में अनावश्यक रूप से कीटनाशकों एवं कवकनाशकों का प्रयोग करने से बचें अन्यथा यह फल की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। आम उत्पादक किसान जैविक या कम हानिकारक विकल्पों को प्राथमिकता दें ताकि पर्यावरणीय संतुलन बना रहे।

अधिकतम तापमान जायेगा 42 डिग्री पार सतायेगी भीषण गर्मी

समस्तीपुर. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 23 से 27 अप्रैल 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ के साथ मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना है. इस अवधि में अधिकतम तापमान में 3 से 5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है, जिसके कारण अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के आसपास तक पहुंच सकता है. न्यूनतम तापमान में भी हल्की वृद्धि के साथ 25 से 27 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है. सामान्य से अधिक तापमान एवं हवा में नमी के कारण प्रचंड गर्मी की स्थिति बनी रहने की संभावना है. पूर्वानुमानित अवधि में अगले दो दिनों तक पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा औसतन 4 से 8 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से चलने की संभावना है. 27 अप्रैल को हवा की रफ्तार थोड़ी अधिक रह सकती है. सापेक्ष आद्रर्ता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 37.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.5 डिग्री अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 25.0 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 2.7 डिग्री अधिक रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, April 2[illegible]
Samstipur
https://epaper.pra[illegible]com

किसानों को उद्योग लगाने के लिए प्रोत्साहित करें : वीसी

प्रतिनिधि, पूसा

उद्घाटन करते कुलपति डा पीएस पांडेय.

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के सत्रहवीं एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, लादा की पांचवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक मंगलवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, लादा में हुई. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने शुभारम्भ किया. पिछले वर्ष के वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक के सुझावों एवं अनुपालन, प्रगति प्रतिवेदन व आगामी वर्ष की कार्य-योजना को डॉ. आरके तिवारी व डॉ. सुनिता कुशवाह ने प्रस्तुत किया.

कुलपति डॉ. पाण्डेय ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र की पहुंच जिले के प्रत्येक पंचायतों तक होनी चाहिए. छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए छोटे-छोटे कृषि यंत्रों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग के लिए कार्यक्रम आयोजित करें. कुशल कारीगर एवं छोटे रोजगार करने वाले किसान एवं महिला किसानों को उद्योग स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उनका मार्गदर्शन किया जाये. किसानों को उद्योग लगाने के लिए प्रोत्साहित करें निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने विश्वविद्यालय के माध्यम से विकसित प्रजातियों एवं तकनीकों तथा भविष्य की शोध गतिविधियों से अवगत कराया.

निदेशक प्रसार शिक्षा, डॉ. मयंक राय ने केवीके के लिए बिंदुओं पर समान लक्ष्य निर्धारित करते हुए समग्र रुप से कार्य करने की बात कही. डीएओ सुमित सौरभ ने धान के संकर बीज उत्पादन करने की आवश्यकता के बारे में बताया. सहायक निदेशक उद्यान प्रशांत कुमार ने मखाना उत्पादन के लिए जागरुकता अभियान की बात कही. सहायक निदेशक अभियंत्रण रिशु कुमार ने कस्टम हायरिंग सेंटर एवं यांत्रीकरण की योजना के बारे में चर्चा की. सहायक निदेशक रसायन अमित कुमार ने रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के संतुलित उपयोग के लिए किसानों को जागरूक करने की बात कही गई. इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से डा एसआर सिंह, डा केके सिंह, डॉ कमल शर्मा, डॉ एमएल मीणा, पंकज सिंह, सुजीत कुमार, सोनी कुमारी, रेखा देवी, कुमारी अभिलाषा, अनिल पासवान, डॉ धीरू कुमार तिवारी, ई. विनिता कश्यप, भारती उपाध्याय, सुमित कुमार सिंह, डॉ. इमती, ई. अभिषेक कुमार, वर्षा कुमारी, अभिलिप्सा कुमारी, निशा कुमारी आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, April 23, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6807e903e024539812e8b7da

गुणवत्तायुक्त शहद उत्पादन करने की जरूरत : डॉ मुखर्जी

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मधुमक्खीपालन विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुई. इसकी अध्यक्षता करते हुए वैज्ञानिक डा यू. मुखर्जी ने कहा कि किसानों को गुणवत्तायुक्त शहद निर्माण करने की जरूरत है. इससे देश ही नहीं बल्कि विदेशों के बाजार में भी औषधीय गुणों से भरपूर शहद का निर्यात किया जा सके. पहले देशी मधुमक्खी का पालन वृहत पैमाने पर किया जाता था. विश्वविद्यालय के सहयोग से लुधियाना से इटालियन मधुमक्खी को लाया गया. फिर इसका उपयोग एवं उत्पादन व्यवसायिक दृष्टिकोण से बेहतर साबित हुआ. वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

मधुमक्खीपालन के क्षेत्र में बिहार के विभिन्न जिलों में बेहतर कार्य संपादित किया जा रहा है. इससे किसान लाभ लेकर स्वरोजगार के दिशा में मुखातिब हो चुके हैं. बिहार से मधुमक्खी का बक्सा पूर्व में झारखंड राज्य में भेजा जाता था. किसानों या व्यवसायी के साथ बोर्डर पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने मधुमक्खी के बक्से के साथ आने जाने पर प्रतिबंध लगा दिया. इससे बहुत हद तक व्यवसाय प्रभावित हुआ. अब बिहार एवं झारखंड राज्य सरकार के बीच मधुमक्खीपालन के क्षेत्र में आपसी सहमति बनाने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है. मकरंद, पराग एवं जल के समिश्रण से शहद का निर्माण होता है. उद्यमिता के क्षेत्र में मधुमक्खी पालन सफल व्यवसाय बन चुका है. व्यवसाय के क्षेत्र में मधुमक्खी पालन का महत्वपूर्ण स्थान है. इस व्यवसाय के लिए भूमि की आवश्यकता नहीं है. इससे पहले आगत अतिथियों ने दीप जलाकर प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ किया. स्वागत भाषण करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा बिनीता सतपथी ने कहा कि वैज्ञानिकी विधि के बदौलत खेती में विविधताएं लाने का प्रयास किया जा रहा है. धान गेहूं एवं साक सब्जियों के अलावा भी कृषि के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है. जिसे अपनाकर किसान अपनी आमदनी मजबूत बना सकते हैं. आधुनिक युग में मधुमक्खी पालन व्यवसाय बहुत ही तीव्रता के साथ बढ़ रही है. शहद उत्पादन मीठी क्रांति के रूप में क्रियाशील हो चुका है. बिहार में लीची के अलावे विभिन्न जटिल फलों से भी शहद का निर्माण संभव हुआ है. मौके पर झारखंड देवघर के बीटीएम राम आधार सिंह, जनसेवक धर्मेंद्र देव आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, April 23, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6807e903e024539812e8b7e3

पूसा विवि में मधुमक्खी पालन विषय पर किसानों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | पूसा

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डॉ. मुखर्जी व मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पुसा स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मधुमक्खी पालन विषय पर किसानों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन विवि के वैज्ञानिक डा. यू मुखर्जी सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर डॉ. यू मुखर्जी ने कहा पहले देशी मधुमक्खी का पालन बृहत पैमाने पर किया जाता था। बाद में विश्वविद्लाय के सहयोग से लुधियाना से इटालियन मधुमक्खी को लाया गया तथा इसका पालन भी शुरु किया गया। अंततः इटालियन मधुमक्खीपालन का पालन, इसके शहद का उपयोग एवं उत्पादन व्यवसायिक दृष्टिकोण से काफी बेहतर साबित हुआ। उन्होंने कहा कि कुलपति डा. पीएस पांडेय के समुचित मार्गदर्शन एवं वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में बिहार के विभिन्न जिलों में बेहतर कार्य किये जा रहा है। इससे सैकड़ों किसान लाभ लेकर स्वरोजगार से भी जुड़ चुके है। बिहार से मधुमक्खी का बक्सा पूर्व में झारखंड राज्य को भेजा जाता था। लेकिन बाद में किसानों व व्यवसाई के मधुमक्खियों के बक्शे को बॉर्डर पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने लाने ले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। मधुमक्खी पालन का व्यवसाय इससे बहुत हद तक प्रभावित हुआ। अब बिहार एवं झारखंड राज्य सरकार के बीच मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में आपसी सहमति बनाने की दिशा में प्रयास किये जा रहे है। उन्होंने कहा कि उद्यमिता के क्षेत्र में मधुमक्खी पालन काफी सफल व्यवसाय बन चुका है। व्यवसाय के क्षेत्र में मधुमक्खी पालन का महत्वपूर्ण स्थान है।

Dainik Bhaskar 23-04-2025

भास्कर 23/4/25 पेज 16

कृषि • पूसा विश्वविद्यालय के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली और बीसा पूसा के वैज्ञानिक कर रहे शोध

जलवायु अनुकूल खेती पर 5 साल से चल रहा शोध, किसानों को भी मिल रहा लाभ

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली और बीसा पूसा के वैज्ञानिक जलवायु अनुकूल खेती पर पिछले पांच वर्षों से शोध कर रहे हैं। इस शोध का नेतृत्व केवीके बिरौली के हेड डॉ. आरके तिवारी और बीसा पूसा के हेड डॉ. राजकुमार जाट कर रहे हैं। दोनों संस्थानों के दर्जनों वैज्ञानिक जलवायु के अनुकूल फसल किस्मों का विकास, जल उपयोग की दक्षता, फसल विविधीकरण जैसे विषयों पर काम कर रहे हैं। बिहार सरकार के सहयोग से उत्तर बिहार के कई जिलों में यह शोध चल रहा है। इसका उद्देश्य किसानों को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बचाना है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस शोध से किसानों को नई तकनीकों की जानकारी मिल रही है। इससे वे खेती में बदलाव कर पा रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार जलवायु परिवर्तन एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है। इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। कृषि इस परिवर्तन की सबसे बड़ी शिकार है। तापमान में लगातार वृद्धि, कार्बन डाईऑक्साइड का अधिक उत्सर्जन, सूखा, बाढ़, कीट और रोग का प्रकोप खेती को नुकसान पहुंचा रहे हैं। 1970 के बाद से वैश्विक तापमान 1.7 डिग्री सेल्सियस प्रति शताब्दी की दर से बढ़ रहा है। इससे फसलों की गुणवत्ता और उपज दोनों घट रही है। उच्च तापमान के कारण फसलें जल्दी पक रही हैं, जिससे उत्पादन कम हो रहा है।

वैज्ञानिकों ने कहा- जलवायु परिवर्तन एक दीर्घकालिक प्रक्रिया, और दिखेगा प्रभाव

चकपहार में जलवायु अनुकूल कृषि के तहत खेतों में लगाई गई फसल का जायजा लेते वैज्ञानिक।

देश में 120 मिलियन हेक्टेयर भूमि खेती के लिए अनुपयुक्त हुई

भारत में 120 मिलियन हेक्टेयर भूमि खेती के लिए अनुपयुक्त हो चुकी है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगले 80 वर्षों में खरीफ मौसम के दौरान तापमान में 0.7 से 3.3 डिग्री सेल्सियस तक वृद्धि हो सकती है। इससे रबी में गेहूं की उपज में 22% और धान के उत्पादन में 15% तक की गिरावट आ सकती है। 2014 में भारत में कुल 3402 मिलियन मीट्रिक टन कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन हुआ था। यह वैश्विक उत्सर्जन का 6.55% था। इसका बड़ा कारण खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग है। वैज्ञानिक किसानों को वर्षा जल के प्रबंधन की जानकारी दे रहे हैं। वाटर शेड प्रबंधन से वर्षा जल को सिंचाई में उपयोग करने की सलाह दी जा रही है। इससे भूजल स्तर भी सुधरेगा। किसानों को जैविक और समग्रित खेती अपनाने की सलाह दी जा रही है। रासायनिक खादों से मृदा की गुणवत्ता घटती है और यह भोजन के माध्यम से मानव शरीर में पहुंचती है। समग्रित खेती में कई फसलें एक साथ ली जाती हैं। इससे एक फसल खराब होने पर दूसरी से नुकसान की भरपाई हो जाती है।

मौसम पूर्वानुमान के अनुसार खेती करने की सलाह दे रहे वैज्ञानिक

वैज्ञानिक किसानों को मौसम पूर्वानुमान के अनुसार खेती करने की सलाह दे रहे हैं। केवीके बिरौली के वैज्ञानिकों ने समस्तीपुर जिले के पांच गांवों हरपुर भिंडी, रामपुर, चकपहार, चाको भिंडी और तारा धमौन को गोद लिया है। यहां किसानों के खेतों में रेड बेड प्लांटर से मक्का, जीरो टिलेज और हैप्पी सीडर से गेहूं की बुआई, लेजर लैंड लेवलर से खेत समतल करने, धान की सीधी बुआई, मोटे अनाज की खेती जैसे प्रयोग किए जा रहे हैं। गांवों में सिंचाई सुविधा के लिए बोर्डिंग भी कराई गई है। वैज्ञानिकों के अनुसार लेजर लैंड लेवलर से पानी की 35 से 40% तक बचत होती है। रेड बेड से मक्का की पैदावार बढ़ती है। जीरो टिलेज से गेहूं की खेती में प्रति एकड़ 12 से 15 हजार रुपये की बचत होती है। सिंचाई में भी खर्च कम होता है। सीधी बुआई से पछिया हवा से फसल को कम नुकसान होता है। लागत घटती है और मुनाफा बढ़ता है।

भास्कर 23/4/25 पेज 13

कार्यक्रम • केवीके बिरौली की 17वीं एवं कृषि विज्ञान केन्द्र लादा की 5वीं सलाहकार समिति की बैठक

ज्यादा से ज्यादा किसानों को तकनीक से लाभान्वित करने के लिए केवीके की पहुंच हर पंचायत तक होनी चाहिए : कुलपति

कृषि वैज्ञानिकों ने उपज बढ़ाने के लिए किसानों को जागरूक करने की सलाह दी

भास्करन्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली की सत्रहवीं एवं कृषि विज्ञान केन्द्र लादा की पांचवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक मंगलवार को केवीके लादा के सभागार में आयोजित की गई।कार्यक्रम की अध्यक्षता और इसका उद्घाटन विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बैठक में कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली एवं कृषि विज्ञान केन्द्र लादा के पिछले वर्ष के वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक के सुझावों एवं अनुपालन, प्रगति प्रतिवेदन तथा आगामी वर्ष की कार्य-योजना को क्रमशः बिरौली केवीके के हेड डॉ. आरके तिवारी तथा लादा केवीके हेड डॉ. सुनीता कुशवाहा के द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने सुझाव देते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र की पहुंच जिले के प्रत्येक पंचायतों तक होनी चाहिए ताकि कृषि की नवीनतम तकनीकों से अधिक से अधिक किसान लाभान्वित हो सकें। उन्होंने कहा कि खासकर छोटे एवं सीमांत किसानों से छोटे-छोटे कृषि यंत्रों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कराने के लिए कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को जागरूक किया जाएं जिससे की उत्पादन लागत के साथ-साथ समय एवं श्रम में भी कमी लाई जा सके।

बैठक को संबोधित करते कुलपति व मौजूद वैज्ञानिक।

धान की संकर बीज उत्पादन की आवश्यकता पर दिया गया जोर

डीएओ सुमित सौरभ ने धान की संकर बीज उत्पादन करने की आवश्यकता के बारे में बताया। सहायक निदेशक उद्यान प्रशांत कुमार ने मखाना उत्पादन हेतु जागरुकता अभियान चलाने की बात कही। सहायक निदेशक अभियंत्रण रिशु कुमार ने कस्टम हायरिंग सेंटर एवं यांत्रीकरण की योजना के बारे में चर्चा की। सहायक निदेशक रसायन अमित कुमार ने रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के संतुलित उपयोग हेतु किसानों को जागरूक करने की बात कही। मौके पर डॉ. एसआर सिंह, डा. केके सिंह, डॉ.कमल शर्मा, डॉ. एम एल मीणा, पंकज सिंह, सुजित कुमार, सोनी कुमारी, रेखा देवी, कुमारी अभिलाषा, अनिल पासवान, डॉ. धीरू कमार तिवारी आदि थे।

भास्कर 23/4/25 पेज 13

गर्मी की ताप से बचाएं • प्रचंड गर्मी गर्भवती महिलाएं और छोटे बच्चों के लिए सबसे ज्यादा जोखिम भरा, गर्भवती व नवजात का रखें ध्यान

पानी की कमी से गर्भस्थ शिशु को हो सकता है खतरा

सिटी रिपोर्ट | समस्तीपुर

गर्मी ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू कर दिया है और मई-जून में इसके और तीव्र होने की संभावना है। ऐसे में सबसे ज्यादा खतरा है गर्भवती महिलाओं, गर्भस्थ शिशुओं, नवजातों और छोटे बच्चों को। डॉक्टरों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों का साफ कहना है कि इस मौसम में जरा सी लापरवाही भारी पड़ सकती है। इस मौसम में गर्भवती महिलाओं के लिए खास सावधानी जरूरी है। इसको लेकर सदर अस्पताल की गायनीकोलॉजिस्ट डॉ. प्रेरणा बताती हैं कि इस मौसम में गर्भवती महिलाओं को दिन में कई बार पानी पीना चाहिए। नारियल पानी, ओआरएस और ताजे फलों का सेवन जरूरी है। गर्मी में शरीर का तापमान अनियंत्रित होने से चक्कर, उल्टी और मूर्छा आने की स्थिति बन सकती है। यहां तक कि ब्लड प्रेशर का उतार-चढ़ाव गर्भस्थ शिशु को नुकसान पहुंचा सकता है। लगातार पसीने और पानी की कमी के चलते प्री-मैच्योर डिलीवरी का खतरा बढ़ जाता है। शिशु के ब्रेन डेवलेपमेंट पर असर पड़ सकता है। विशेषकर गर्भ के दूसरे और तीसरे तिमाही में गर्मी का असर बच्चे के मस्तिष्क के विकास पर पड़ सकता है। इसलिए ऐसे में बिलकुल भी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। गर्मी में गर्भवती महिलाओं को कम से कम तीन-चार लीटर तरल पदार्थ प्रतिदिन लेना चाहिए। बहुत जरूरी हो तभी उन्हें बाहर निकलना चाहिए, नहीं तो घर में ठंडे वातावरण में आराम करना चाहिए।

नवजात की स्वास्थ्य जांच करती शिशु रोग विशेषज्ञ।

तेज धूप से बचाव कर जाती स्कूली बच्ची

स्कूल जाने वाले बच्चों को पानी का बोतल व पौष्टिक लंच दें

गर्मी के मौसम में नवजातों के शरीर में पानी की कमी न हो, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। सदर अस्पताल की शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ इशरत परवीन का कहना है कि जो बच्चे मां का दूध पीते हैं, उन्हें सामान्य 8 बार की जगह इस मौसम में 10-12 बार दूध पिलाना चाहिए। बच्चा जब भी रोए, चाहे एक घंटे में या दो घंटे में, मां उसे दूध पिलाएं। इस दौरान मां को भी पौष्टिक और संतुलित आहार लेना चाहिए जिससे दूध की मात्रा में कमी न हो। 28 दिन से कम उम्र के शिशुओं को सिर्फ मां का दूध ही दिया जाना चाहिए। ऊपर का दूध, पानी या कोई अन्य तरल पदार्थ नहीं देना चाहिए। कपड़ों में नमी न रहे, इसका खास ख्याल रखें ताकि इंफेक्शन या रैशेज से बचा जा सके। छह महीने तक के बच्चों को केवल मां का दूध दें और उसके बाद कांप्लीमेंट्री फीडिंग जैसे खिचड़ी, दलिया आदि शुरू करें, लेकिन साथ में पानी देना भी जरूरी है। फ्रिज का पानी या जूस देना नुकसानदायक हो सकता है।

गर्मी के इस मौसम में करें ये उपाय

दिन में कम से कम 8-10 गिलास पानी पिएं
नारियल पानी, छाछ और ओआरएस का करें सेवन
नवजातों को सिर्फ मां का दूध दें
गर्भवती महिलाएं धूप में न निकलें, आराम करें
बच्चों को धूप से बचाकर रखें, ठंडी छांव में खेलाएं
स्कूल बैग में पानी की बोतल जरूर दें

उत्तर बिहार के जिलों में 27 अप्रैल तक साफ आसमान के साथ मौसम के शुष्क बने रहने की सम्भावना है। अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के आसपास तक पहुंच सकता है। - डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी

27 तक अधिकतम तापमान 42 डिग्री के पार होने के आसार

समस्तीपुर | उत्तर बिहार के जिलों में 23 से 27 अप्रैल तक साफ आसमान के साथ मौसम के शुष्क बने रहने की सम्भावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान में 3-5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। इसके कारण अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के आसपास तक पहुंच सकता है। न्यूनतम तापमान में भी हल्की वृद्धि के साथ 25-27 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। सामान्य से अधिक तापमान एवं हवा में नमी के कारण प्रचंड गर्मी की स्थिति बनी रहने की सम्भावना है। वहीं मंगलवार को पूसा में अधिकतम 37.8 डिग्री और न्यूनतम तापमान 25.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मौसम विभाग के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में अगले दो दिनों तक पछिया हवा उसके बाद पुरवा हवा औसतन 4 से 8 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से चलने की सम्भावना है। 27 अप्रैल को हवा की रफ्तार थोड़ी अधिक रह सकती है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के शिशु जो उजले रंग के होते हैं। यह फलों के डंठल के पास से फलो में प्रवेश कर गुद्दे को खाते हैं जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता। इस कीट से बचाव के लिए लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी का 10 मि.ली या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील पावडर का 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें।

Dainik Bhaskar 23-04-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 27 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
23 अप्रैल	37.8	24.0
24 अप्रैल	37.8	25.0
दरभंगा		
23 अप्रैल	37.8	25.0
24 अप्रैल	39.0	25.0
पटना		
23 अप्रैल	40.0	26.0
24 अप्रैल	40.0	26.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 23-04-2025

तापमान 42 डिग्री तक पहुंचने की संभावना

- मंगलवार को 27 तक का पूर्वानुमान जारी
- अधिक तापमान से हवा में रहेगी नमी, बढ़ेगी गर्मी

पूसा, निज संवाददाता। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में 4 से 8 किमी. प्रति घंटा की गति से अगले दो दिनों तक पछुआ एवं उसके बाद पुरवा हवा चलने की सम्भावना है। इस दौरान 27 अप्रैल को हवा की रफ्तार थोडी अधिक रह सकती है। पूर्वानुमान की अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 एवं दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 27 अप्रैल तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान में 3 से 5 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है। मौसम वैज्ञानिक डॉ.ए.सत्तार ने बताया कि इस दौरान अधिकतम तापमान 42 डिग्री के आसपास रह सकती है। जबकि न्यूनतम तापमान हल्की वृद्धि के साथ 25 से 27 डिग्री के आसपास रहने का अनुमान है। मौसम वैज्ञानिक के अनुसार सामान्य से अधिक तापमान एवं हवा में नमी के कारण प्रचंड गर्मी की स्थिति बनी रहने की संभावना है।

Hindustan 23-04-2025

केवीके की पहुंच पंचायतों तक जरूरी : कुलपति

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली की 17वीं एवं केवीके, लादा की 5वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक मंगलवार को लादा केन्द्र के सभागार में हुई। अध्यक्षता कर रहे कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने दीप प्रज्ज्वलित कर बैठक की शुरूआत की। इस दौरान केन्द्र प्रमुख डॉ.आरके तिवारी एवं डॉ.सुनिता कुशवाहा प्रगति प्रतिवेदन व आगामी योजनाओं को प्रस्तुत किया।

मौके पर कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि केवीके की पहुंच जिले के प्रत्येक पंचायत से होने की जरूरत है। जिससे कृषि की नवीनतम तकनीको से अधिक से अधिक किसान लाभान्वित हो सकें। उन्होंने छोटे व सीमांत किसानो के लिए छोटे कृषि यंत्रो के उपयोग पर बल देते हुए कहा कि इससे कृषि की लागत व श्रम कम होगा। उन्होंने कुशल कारीगरो एवं छोटे रोजगार वाले किसानों व महिलाओं को उद्योग स्थापित करने के प्रति प्रोत्साहित करने पर बल दिया।

Hindustan 23-04-2025

प्रशिक्षण | **कृषि विश्व विद्यालय में मधुमक्खी पालन पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू, देवघर के प्रशिक्षु ले रहे हैं भाग**

मधुमक्खी पालन व रोजगार से मिलेगा आर्थिक लाभ

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.यूएन मुखजी ने कहा कि कृषि के बदलते परिवेश में किसानो को परंपरागत खेती के साथ मधुमक्खी पालन व इससे जुड़े व्यवसाय को बढ़ावा देने की जरूरत है। इसे व्यवसायिक रूप देकर किसान बेहतर लाभ ले सकते है। कार्यो को गति देने के लिए समूह बनाकर व वैज्ञानिक तरीके से मधु उत्पादन कार्य को बढ़ावा देना समय की मांग है। इसमें महिला व युवाओं की अधिक सहभागिता बेहतर परिणाम मिल सकता है। सरकार व कृषि विवि के वैज्ञानिक हरसंभव प्रयास में जुटे हैं। वे मंगलवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में देवघर (झारखंड) के कई प्रखंडो से आये चयनित प्रशिक्षु किसानों को संबोधित कर रहे थे। मौका था मधुमक्खी पालन पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि पूर्व में देशी मधुमक्खी के पालन से उत्पादन कम होता था। लेकिन वर्ष 1986-87 के बाद ईटालियन मधुमक्खी पालन की शुरूआत की गई। जो उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ गुणवत्तायुक्त शहद भी उत्पादित होने लगी। निदेशक प्रसार शिक्षा की प्रशिक्षक संयोजक डॉ.विनिता क्षत्रपति ने कहा कि मधुमक्खी बेहतर व्यवसाय के साथ पर्यावरण संतुलन में भी सहायक होता है। जरूरत है परंपरागत खेती के साथ मधुमक्खी पालन कर गुणवत्तायुक्त उत्पादन के साथ उसकी मार्केटिंग के लिए हरसंभव प्रयास को बढ़ावा देने की। कहा कि देश का शहद कई अन्य देशो के लोगो की पसंद हैं। कहा कि बीते 5-6 वर्षो में उत्पादन के क्षेत्र में बिहार आगे बढ़ा है। मौके पर देवघर के बीटीएम रामाधार सिंह, जनसेवक धर्मेन्द्र देव, सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार, कामेश्वर राय, मनीष कुमार आदि मौजूद थे।

मंगलवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में उद्घाटन करते विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व अन्य।

Hindustan 23-04-2025

कृषि विज्ञान केन्द्र की पहुंच पंचायत स्तर तक होनी चाहिए : वीसी

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली की सत्रहवीं एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, लादा की पांचवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक मंगलवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, लादा के सभागार में आयोजित हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, लादा के पिछले वर्ष के वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक के सुझावों एवं अनुपालन, प्रगति प्रतिवेदन तथा आगामी वर्ष की कार्य-योजना को क्रमशः डॉ. आरके तिवारी तथा डॉ. सुनिता कुशवाह के द्वारा प्रस्तुत किया गया। अपने संबोधन में कुलपति डॉ. पाण्डेय ने सुझाव देते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र की पहुंच पंचायत स्तर तक होनी चाहिए ताकि

उद्घाटन करते वीसी व अन्य।

अधिक से अधिक किसान कृषि की नवीनतम तकनीकों से लाभान्वित हो सकें। छोटे एवं सीमांत किसानों हेतु छोटे-छोटे कृषि यंत्रों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जाएं जिससे की उत्पादन लागत के साथ साथ समय एवं श्रम में भी कमी लाई जा सके। उन्होंने कहा कि कुशल कारीगर एवं छोटे रोजगार करने वाले किसान एवं महिला किसानों को उद्योग स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करते हुए उनका मार्गदर्शन किया जाय। वही निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियों एवं तकनिकों तथा भविष्य की शोध गतिविधियों से अवगत कराया। जबकि निदेशक प्रसार शिक्षा, डॉ. मयंक राय ने सभी केवीके के लिए कुछ बिंदुओ पर समान लक्ष्य निर्धारित करते हुए समग्र रुप से कार्य करने की बात कही। जिला कृषि पदाधिकारी सुमित सौरभ ने धान की संकर बीज उत्पादन करने की आवश्यकता के बारे में बताया। सहायक निदेशक उद्यान श्री प्रशांत कुमार ने मखाना उत्पादन हेतु जागरुकता अभियान की बात कही। सहायक निदेशक अभियंत्रण रिशु कुमार ने कस्टम हायरिंग सेंटर एवं यांत्रिकरण की योजना के बारे में चर्चा की। सहायक निदेशक रसायन अमित कुमार ने रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के संतुलित उपयोग हेतु किसानों को जागरूक करने की बात कही गई। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ एस.आर. सिंह, डॉ के.के. सिंह, डॉ कमल शर्मा, डॉ एम. एल. मीणा, पंकज सिंह, सुजित कुमार, सोनी कुमारी, रेखा देवी, कुमारी अभिलाषा, अनिल पासवान, डॉ धीरू कुमार तिवारी, ई. विनिता कश्यप, भारती उपाध्याय, सुमित कुमार सिंह, डॉ. इमती, ई. अभिषेक कुमार, वर्षा कुमारी, अभिलिप्सा कुमारी, निशा कुमारी इत्यादि उपस्थित रहे।

भास्कर 25/5/25 पेज 17

कार्यक्रम • बीसा संस्थान पूसा में स्वागत व बधाई समारोह का आयोजन, नए महानिदेशक को दी बधाई

जलवायु-संवेदनशील और अनुकूल कृषि तकनीकों से किसानों की बदली स्थिति

भास्कर न्यूज़ | पूसा

प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. एमएल जाट ने हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक एवं भारत सरकार के कृषि सचिव (डेयर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। इस प्रतिष्ठित पद पर उनके नियुक्ति से देश भर के कृषि वैज्ञानिक और कृषकों में खुशी की लहर दौड़ गई है। बिहार में कृषि क्षेत्र में उनके योगदान को लेकर बुधवार को बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) फार्म पूसा में एक स्वागत एवं बधाई समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन डॉ. जाट की अनुपस्थिति में किया गया लेकिन वे इस कार्यक्रम में वर्चुअल रूप से जुड़े तथा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। इधर सम्मान समारोह के कर्ता धर्ता बीसा संस्थान के हेड डॉ. राजकुमार जाट ने कहा कि यह आयोजन कृषि अनुसंधान एवं नवाचार में नेतृत्व को सम्मानित करने का एक प्रेरणादायक क्षण रहा। उन्होंने कहा कि डॉ. एमएल जाट को विशेष रूप से बिहार में उनके अमूल्य योगदान के लिए जाना जाता है। बिहार में रहते हुए उन्होंने सिमिट और बीसा जैसे संस्थान के माध्यम से जलवायु-संवेदनशील, संसाधन-कुशल और छोटे किसानों के लिए अनुकूल कृषि तकनीकों को जमीनी स्तर तक पहुचाया। उन्होंने कहा कि डॉ. एमएल जाट का बिहार से गहरा जुड़ाव रहा है। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ किसानों की आमदनी और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी सोच हमेशा किसानों को केंद्र में रखकर होती है। इस सम्मान समारोह में आईएआरआई के हेड डॉ. केके सिंह, केवीके तुर्की के हेड डॉ. एमएल मीना, डॉ. शतीश नायक, डॉ. विजय सिंह मीना, डॉ. काजोड़ मल चौधरी, डॉ. मनीष विश्कर्मा आदि थे।

किसानों की आमदनी और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में रही भूमिका

पूसा में सम्मान समारोह में वर्चुअल रूप से जुड़े आईसीएआर के महानिदेशक व कृषि वैज्ञानिक।

शून्य जुताई तकनीक, डायरेक्ट सीडेड राइस, फसल अवशेष प्रबंधन समेत कई तकनीकों को प्रोत्साहित कर किसानों तक पहुंचाया

बिहार में रहने के दौरान डॉ.एमएल जाट ने किसानों के लिए एक से बढ़कर एक कार्य कर तमाम तरह की उपलब्धियां हासिल की। डॉ. एमएल जाट ने शून्य जुताई तकनीक, डायरेक्ट सीडेड राइस, फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधिकरण जैसी संरक्षण कृषि तकनीकों को प्रोत्साहित कर किसानों तक पहुंचाया। इसके अलावे उन्होंने हैप्पी सीडर, जीरो टिलेज, जीरो ड्रिल जैसी यांत्रिक तकनीकों एवं कस्टम हायरिंग सेंटर मॉडल के जरिए यांत्रिक सेवाओं को छोटे-छोटे किसानों तक यानी गांव-स्तर पर उपलब्ध कराया। डॉ. एमएल जाट की उपलब्धियां इतने पर भी खत्म नहीं हुई। उन्होंने मिट्टी स्वास्थ्य प्रबंधन, सटीक पोषण प्रबंधन, डिजिटल कृषि तकनीक का विस्तार, सीएसआईएसए, एसआरएफएसआई, सात निश्चय और जीविका जैसी योजनाओं में भी तकनीकी समर्थन देकर उसके लिए बेहतर कार्य किए। उनके इन प्रयासों से हजारों किसान लाभान्वित हुए। किसानों के खेती में लागत में कमी आई तथा उत्पादन में वृद्धि हुआ। जलवायु जोखिमों से मुकाबले की क्षमता में सुधार हुआ।

दैनिक भास्कर, दिनांक - 24/04/2025, पे. नं. - 18

लीची फल के बढ़ने पर कीटों और रोगों के लगने का खतरा भी अधिक : कृषि वैज्ञानिक

किसान रखें ध्यान: बाग में लगने वाली बीमारियों की पहचान कर सही समय पर उसका वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरी, किसान लीची के बागों पर नजर रखें, कीट दिखे तो दवा का छिड़काव करें

भास्कर न्यूज़ | पूसा

मौजूदा समय लीची के फलों के बढ़ने और विकसित होने का है। आने वाले समय में लीची के फल जैसे-जैसे बड़े होते जाएंगे ठीक उसी प्रकार लीची के फलों पर बीमारियों और रोगों के लगने की संभावना भी बढ़ती चली जाएगी। ऐसी स्थिति में लीची उत्पादक किसानों को प्रतिदिन अपने अपने लीची के बागों का निरीक्षण करना होगा ताकि वे बाग में लगने वाले बीमारियों की पहचान कर ससमय उसका वैज्ञानिक प्रबंधन कर सकें। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के सह

लीची के फल में लगे कीट।

निदेशक अनुसंधान एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. एसके सिंह ने दी। उन्होंने कहा की लीची के फल जैसे ही परिपक्व होने लगेंगे उसमें फ्रूट एवं सीड बोरर यानी (फल एवं बीज बेधक कीट) के लगने की संभावना बढ़ जाएगी। यह कीट लीची के सबसे प्रमुख कीटों में से एक है। उन्होंने बताया की लीची के फल के परिपक्व होने के पहले यदि मौसम में नमी अधिक रहती है तो फल बेधक कीटों के प्रकोप की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। इस कीट के पिल्लू लीची के गूदे के ही रंग के होते हैं जो डंठल के पास से फलों में प्रवेश कर फल को खाकर उन्हें हानि पहुंचाते हैं। अंततः बाद में फल खाने योग्य नहीं रह जाता हैं। उन्होंने बताया की लीची के फल में अगर इस कीट का आक्रमण हो गया तो बाजार में इस लीची का कुछ भी दाम नही मिलेगा।

कीट का प्रकोप कम करने के लिए साफ-सुथरी खेती को बढ़ावा दें

उन्होंने बताया कि लीची में फल छेदक कीट का प्रकोप कम हो इसके लिए आवश्यक है की साफ-सुथरी खेती को बढ़ावा दिया जाय। अगर बागों में फल झुलसा व अन्य फफूंद रोग लगे हो तो किसान पूर्व छिड़काव किये जाने वाले कीटनाशकों के साथ ही कोई एक कवकनाशी जैसे हेक्साकोनाजोल नामक दवाई की 1 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर या थायोफेनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. नामक दवाई की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर बगीचे में फल लगे या बिना लगे सभी तरह के पौधों पर छिड़काव कर दें। इससे फल को नुकसान से बचाया जा सकता है।

फ्रूट एवं सीड बोरर का वैज्ञानिक तकनीक से करें प्रबंधन

वैज्ञानिक ने बताया कि इस कीट के प्रबंधन के लिए किसानों को 3 से 5 स्टेज में दवाओं का छिड़काव करना पड़ेगा। पहला छिड़काव किसान लीची में फूल निकलने से पूर्व ही निंबिसिडिन 0.5 प्रतिशत नामक दवाई या नीम का तेल यानी निंबिन की 4 एमएल की मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पौधों पर करें। इसके बाद दूसरा छिड़काव जब लीची के फूल में फल लग जाएं तब किसान इन्ही दवाओं से छिड़काव करें। उन्होंने बताया की तीसरा छिड़काव लीची के फूल में फल लगने के दस दिन बाद जब फल लौंग के आकार के बराबर का हो जाएं तब किसान थियाक्लोप्रिड 21.7 एससी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल नामक दवाई की 0.7 से 1 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के अनुसार घोलकर पेड़ पर करें। चौथा छिड़काव तीसरे छिड़काव में किये गए दवाओं से ही 12 से 15 दिन बाद करें। उन्होंने बताया कि पांचवां छिड़काव अगर मौसम की स्थिति सामान्य है यानी रुक-रुक कर बारिश नहीं हो रही है तब फल तुड़ाई के 12 से 15 दिन पहले नोवलुरॉन 10 प्रतिशत ईसी दवाई की 1.5 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी दवाई की 0.7 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर या लैम्ब्डा साइहलोथिन 5 प्रतिशत ईसी नामक दवाई की 0.7 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ तथा दवाओं में 0.3 एमएल प्रति लीटर पानी के साथ स्टिकर मिलाकर करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 27 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
24 अप्रैल	39.8	26.0
25 अप्रैल	39.8	27.0
दरभंगा		
24 अप्रैल	39.8	27.0
25 अप्रैल	40.0	27.0
पटना		
24 अप्रैल	41.0	28.0
25 अप्रैल	41.0	28.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 24-04-25

अप्रैल में ही तापमान 40 डिग्री आने वाले दिनों में बढ़ेगा पारा

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : अप्रैल महीने में ही जिले में भीषण गर्मी ने लोगों को जून जैसी तपिश का एहसास करा दिया है। बुधवार को जिले में अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान 20.8 डिग्री सेल्सियस रहा। तेज धूप और लू जैसे हालात के कारण दिन के 11 बजे के बाद से ही बाजारों में सन्नाटा छा गया।

गर्म हवाओं और चुभती धूप की वजह से लोग जरूरी कामों को छोड़कर घरों में ही कैद हो गए। गर्मी का असर यह रहा कि सड़कों पर आवाजाही बेहद कम हो गई और ज्यादातर दुकानदारों ने दोपहर में ही अपने प्रतिष्ठान बंद कर दिए। स्टेशन रोड, रामबाबू चौक जैसे व्यस्त इलाकों में भी वीरानी देखने को मिली। आमजन इस

27 अप्रैल तक 42 डिग्री तक पहुंचेगा तापमान

असमय गर्मी से परेशान नजर आए। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम वैज्ञानिक डा. ए. सत्तर के अनुसार अभी गर्मी का असर और तेज होने वाला है। उन्होंने बताया कि आगामी 27 अप्रैल तक जिले में अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। उन्होंने कहा कि मौसम में तेजी से बदलाव के कारण लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। आने वाले दिनों में लू चलने की संभावना है। डा. आरके सिंह ने इस बढ़ती गर्मी को लेकर लोगों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी है। कहा कि दोपहर 11 बजे से शाम 4 बजे तक धूप में निकलने से बचें।

आयोजन | पूसा के बीसा संस्थान में आयोजित स्वागत समारोह में नवनियुक्त महानिदेशक ने वर्चुअल मोड से किया संबोधित

खेती-किसानी में बिहार के लोग काफी मेहनती: डॉ.जाट

कृषि विवि

- बीसा में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया
- जलवायु परिवर्तन के बारे में भी दी गई जानकारी

पूसा, निज संवाददाता। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली (आईसीएआर) के नव नियुक्त महानिदेशक डॉ.एमएल जाट ने कहा कि खेती-किसानी में बिहार के लोग काफी मेहनती व लगनशील है। राज्य के किसानों के साथ कार्य करना काफी बेहतर रहा। आगे भी राज्य के किसानों के विकास के लिए हरसंभव प्रयास जारी रहेगा। वे बुधवार को बोरोलॉग इन्स्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) में आयोजित सम्मान समारोह के मौके पर वर्चुअल मोड में वैज्ञानिकों व किसानों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने अपने छोटे से संबोधन में राज्य के किसानों के प्रति आभार जताते हुए कहा कि जल्द ही वे बिहार के किसानों व वैज्ञानिकों से मिलने का प्रयास करेंगे। इससे पूर्व बीसा प्रमुख डॉ.राज कुमार जाट की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में केवीके, तुर्की के प्रमुख डॉ.एमएल मीणा ने बीसा समेत डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन एवं किसानो की ओर से

बुधवार को बीसा फार्म में महानिदेशक को सुनते वैज्ञानिक और किसान।

महानिदेशक का स्वागत किया। इस मौके पर बीसा प्रमुख डॉ.राज कुमार जाट ने कहा कि नवनियुक्त महानिदेशक का बिहार के कृषि क्षेत्र में अमूल्य योगदान रहा है। उन्होंने सिमीट व बीसा के माध्यम से जलवायु अनुकूल खेती में किसान केंद्रीय कृषि तकनीकों को जमीन पर उतारने में अहम भूमिका निभाई। इस कड़ी में जीरो टिलेज, डीएसआर, फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधिकरण जैसी कृषि तकनीकों का बड़े पैमाने पर प्रसार कर किसानों को जागरूक किया। छोटे किसानों के लिए हैप्पी सीडर, जीरो टिल ड्रिल जैसे यंत्रों की पहुंच सुनिश्चित की। अब बिहार समेत पूरे देश की उम्मीदे टिकी है। विज्ञान आधारित सुधार देखने को मिल सकता है। मौके पर आईएआरआई के अध्यक्ष डॉ.केके सिंह, डॉ.सतीश नायक, डॉ.विजय सिंह मीणा, डॉ.काजोड़मल चौधरी, डॉ.मनीष विश्वकर्मा, डॉ.शुभम, डॉ.सेल्वगणेशन, डॉ.सुनील कुमार, डॉ.मो.हसनैन, डॉ.सुभायन, डॉ.मुकेश कुमार आदि मौजूद थे।

Hindustan 24-04-2025

प्रभात खबर, दि.-25.04.25 पृ.-5

नवीनतम तकनीक सीख रही ग्रामीण महिला किसान

पूसा . किसानों को संगठित करके उन्हें उनकी फसल का उचित लाभ दिलाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई एफपीओ यानि किसान उत्पादक संगठन ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर रहा है. उन्हें तकनीकी रूप से सशक्त बनाने का कार्य कृषि ज्ञान वाहन कर रहा है. इन्हीं योजनाओं को पूर्ण करने के लिए डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के सहयोग से संचालित कृषि ज्ञान वाहन ने मुजफ्फरपुर जिला के पिरापुर पंचायत स्थित कंचन सेवा आश्रम के द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. महिला किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से रूबरू भी कराया गया. कार्यक्रम में विभिन्न पंचायतों से आयी महिला किसानों ने भाग लिया. फसल अवशेष प्रबंधन, पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन और जैविक खेती जैसे विषयों पर वीडियो फिल्मों के माध्यम से व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की. चतुर्थ कृषि रोड मैप के विभिन्न आयामों की विशेषताओं के बारे में जानकारी दी गई. इस कार्यक्रम के मध्य से किसानों ने सीधे अपने प्रश्न पूछे व समस्याओं का त्वरित समाधान भी पाया. कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए इसे कृषि विकास की दिशा में बड़ा कदम बताया.

आतंकवादी हमले के विरोध में छात्रों ने निकाला कैंडल मार्च

मार्च में शामिल छात्र-छात्राएं व शिक्षक.

पूसा. डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के छात्रों, शिक्षकों, प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों, पदाधिकारियों व कर्मचारियों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के विरोध में कैंडल लाइट मार्च निकाला. घटना में मारे गये निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी. मार्च के बाद विश्वविद्यालय के सरस्वती गार्डन में एकत्र हुए. मृत लोगों की आत्म की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की. विश्वविद्यालय के कुलपति डा पीएस पांडेय ने इस हमले की कड़ी निंदा की. मृतक के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की. निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी ने कहा कि यह देश में शांति और सुरक्षा बनाने के लिए एकजुटता का परिचायक है.

प्रभात खबर
Saturday, April 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/680bddf26803d1a531d156ec

दैनिक भास्कर - 26/4/25 P-15

अगले एक-दो दिनों तक हॉट डे बने रहने की आशंका, फिर बारिश की भी संभावना

पूर्वानुमान : तेज धूप के साथ ही मौसम में परिवर्तन होने का अनुमान, आंधी-तूफान के साथ बिजली गिरने की आशंका , स्वास्थ्य पर पड़ सकता है विपरीत असर

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। अगले एक-दो दिनों तक मौसम शुष्क तथा गर्म दिन (हॉट डे) बने रहने की सम्भावना है। 27 अप्रैल के बाद मौसम में परिवर्तन होने का अनुमान है। इसके कारण आंधी-तूफान के साथ बिजली गिरना और तेज हवा के साथ वर्षा होने की सम्भावना है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मौसम विभाग के अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान 38-40 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 8 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की सम्भावना है। दूसरी सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

जिले में 41 डिग्री के पार पहुंचा अधिकतम तापमान

समस्तीपुर में शुक्रवार को अधिकतम तापमान 41 डिग्री और न्यूनतम तापमान 23 डिग्री रहा। वहीं पूसा में अधिकतम तापमान 39.7 डिग्री और न्यूनतम तापमान 17.5 डिग्री सेल्सियय रहा। अगले दो दिनों तक मौसम शुष्क रहने की सम्भावना को देखते हुए किसान गेहूं की कटनी एवं दौनी के कार्य को प्राथमिकता दें। क्योंकि उसके बाद वर्षा होने की सम्भावना बन रही है। आंधी वर्षा की सम्भावना को देखते हुए कटे हुए गेहूं को खेत में न छोड़ें।

बागों में फल मक्खी का प्रकोप दिखने पर करें दवा छिड़काव

आम के बागों में विगत वर्षों में फल मक्खी बहुत देखने को मिला था जिससे किसानों को नुकसान हुआ था उसको देखते हुए इस बार किसान सावधानी बरते तथा फल मक्खी के प्रबन्धन के लिए फ्रूट पलाई ट्रैप सबसे बढ़िया विकल्प है। प्रति हेक्टेयर 15-20 फरोमैन ट्रैप लगाकर फ्रूट पलाई मक्खी को प्रबंधित किया जा सकता है। इन ट्रैपो को निचली शाखाओं पर 4 से 6 फिट की ऊंचाई पर बांधना चाहिए। एक ट्रैप से दूसरे ट्रैप के बीच में 35 मीटर की दूरी रखे। ट्रैप को कभी भी सीधे सूर्य की किरणें में नहीं रखे। ट्रैप को आम की बहुत घनी शाखाओ के बीच में नहीं बाधना चाहिए। ट्रैप बाग में स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए की कहा बाधा गया है। ट्रैप बांधने की अवस्था फल पकने से 60 दिन से पहले होना चाहिए।

भीषण गर्मी में 12 बजे के बाद स्कूलों में छुट्टी, बिगड़ रही सेहत

विद्यापतिनगर | पिछले एक सप्ताह से तेज धूप और बढ़ते तापमान से लोग परेशान हैं। सुबह दस बजे के बाद सड़कों पर सन्नाटा छा जाता है। बाजारों में भी भीड़ नहीं दिखती। पिछले दो दिनों से तापमान 41 डिग्री के करीब दर्ज किया जा रहा है। दोपहर में धूप इतनी तेज होती है कि लोगों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है। इसके बावजूद विद्यालयों में दोपहर 12 बजे के बाद छुट्टी दी जा रही है। इस कारण स्कूली बच्चों को घर लौटते समय परेशानी हो रही है। सबसे ज्यादा दिक्कत प्राथमिक विद्यालय के छोटे बच्चों को हो रही है।

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। अगले एक-दो दिनों तक मौसम शुष्क तथा गर्म दिन (हॉट डे) बने रहने की सम्भावना है। -डॉ. ए सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग, पूसा

Dainik Bhaskar 26-04-2025

दैनिक भास्कर - 26/4/25 P - 16

आक्रोश • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के छात्र, शिक्षक व प्राध्यापकों में रोष

विवि से जुड़े अधिकारी व कर्मी ने आतंकवादी हमले के विरोध में निकाला कैंडल मार्च, कड़ी कार्रवाई की मांग

भास्कर न्यूज | पूसा

कैंडल मार्च में शामिल कुलपति व अन्य।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के छात्रों, शिक्षकों, प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के विरोध में कैंडल लाइट मार्च निकाला। इस मार्च का उद्देश्य आतंकवाद की निंदा करना और हमले में शहीद हुए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि देना था। कैंडल मार्च के बाद सभी लोग विश्वविद्यालय के सरस्वती गार्डन में एकत्र हुए और पहलगाम हमले में मृत निर्दोष लोगों के आत्मा की शांति के लिए मौन धारण कर प्रार्थना की। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने अपने संबोधन में इस हमले की कड़ी निंदा करते हुए शहीदों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि देश के सभी लोगों को आतंक के विरोध में अपनी एकजुटता दिखानी चाहिए। बाद में सभी लोगों ने शहीदों के प्रति सम्मान व्यक्त किया और आतंकवाद को मानवता का दुश्मन करार दिया। विवि में निकाले गए इस कैंडल लाइट मार्च ने आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता का संदेश दिया हैं। निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी ने कहा कि यह आयोजन देश में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए एकजुटता का प्रतीक है। छात्रों ने अपने संबोधन में कहा कि आतंकवाद और उससे जुड़ी घटनाएं देश की शांति और सुरक्षा के लिए खतरा हैं। इसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करना आवश्यक है। छात्रों ने कहा कि उन्हें देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर पूरा भरोसा है। सरकार जल्द ही आतंकवादियों को ढूंढ ढूंढ कर सबक सिखायेगी।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में इस दौरान आसमान में बादल आ सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 38-40 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
26 अप्रैल	39.8	21.0
27 अप्रैल	39.8	21.5
दरभंगा		
26 अप्रैल	39.8	21.5
27 अप्रैल	40.0	22.0
पटना		
26 अप्रैल	41.0	23.0
27 अप्रैल	41.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 26-04-2025

कुलपति के नेतृत्व में निकला कैंडल मार्च

पूसा,निज संवाददाता। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के विरोध में डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के छात्रों, शिक्षकों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने कैंडल लाइट मार्च निकाला। मार्च का उद्देश्य आतंकवाद की निंदा करना और हमले में शहीद हुए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि देना था।

शुक्रवार को पूसा कृषि विवि में कैंडल मार्च निकालते कुलपति व अन्य।

विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय के नेतृत्व में निकला कैंडल मार्च विभिन्न मार्गों से होते हुए मुख्यालय के सरस्वती गार्डन में संपन्न हो गया। जहां घटना में मृत निर्दोष लोगों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजली दी गई।

मौके पर कुलपति ने इस हमले की कड़ी निंदा करते हुए मृत परिवारों के प्रति शोक-संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि देश के सभी लोगों को आतंकवाद के विरोध में अपनी एकजुटता दिखाने की जरूरत है। यह मानवता एवं देश की शांति व सुरक्षा का सबसे बड़ा दुश्मन है।

Hindustan 26-04-2025

27 के बाद वज्रपात, आंधी-तूफान व बारिश के बन रहे आसार, तबतक हॉटेस्ट डे जारी रहने की संभावना

समस्तीपुर (एसएनबी)। अगले एक दो दिनों तक मौसम शुष्क तथा हॉटेस्ट डे बने रहने की सम्भावना है। 27 अप्रैल के बाद मौसम में परिवर्तन होने का अनुमान है। जिसके तहत आंधी-तूफान के साथ बिजली गिरने की घटना और तेज हवा के साथ वर्षा होने की सम्भावना है। इस बाबत जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, और भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 30 अप्रैल, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 38-40 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की सम्भावना है। जिससे उमस भी परेशानी का सबब बन सकता है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

बिथान-हसनपुर रेल खंड पर दशकों बाद दौड़ी उम्मीदों की रेल, पीएम मोदी ने दिखाई हरी झंडी

बिथान (एसएनबी)। दशकों की प्रतीक्षा के बाद बिथान-हसनपुर नई रेल खंड पर ट्रेन परिचालन की ऐतिहासिक शुरुआत हो गई। गुरुवार को मधुबनी की जनसभा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पहली ट्रेन को बिथान स्टेशन से समस्तीपुर के लिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसके साथ ही क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर दौड़ गई। इस ऐतिहासिक पल का गवाह बनने के लिए बड़ी संख्या में बिथान प्रखंड समेत दरभंगा जिले के कुशेश्वरस्थान, बेगूसराय जिले के बखरी, गढपुरा के लोग स्टेशन पर मौजूद थे। जिनके चेहरे पर वर्षो की आशा पूरी हाने की खुशी की झलक साफ दिखाई दे रही थी। बताते चलें कि बिथान-हसनपुर रेल परियोजना लंबे समय से कागजों में सिमटी हुई थी। अब इस लाईन पर गाडी दौडने के बाद यह नई रेल लाइन न केवल बिथान और हसनपुर को जोड़ेगी, बल्कि समस्तीपुर, दरभंगा, बेगूसराय, पडोसी देश नेपाल तक के लोगों के लिए भी एक नयी जीवन-रेखा सिद्ध होगी। इन इलाकों में क्षेत्रीय व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के नए द्वार खुलेंगे। सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को सुगम यात्रा सुविधा मिलने के साथ-साथ इन इलाकों के आर्थिक विकास को भी गति मिलेगी। रेल मंत्रालय ने इस खंड पर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखा है। यात्रियों की सुविधा के लिए स्टेशन पर आवश्यक सुविधाओं को भी बेहतर बनाया गया है। विदित हो कि हसनपुर-सकरी रेल लाईन मिथिलांचल के अति महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है इस परियोजना को 1972 में पूर्व रेल मंत्री ललित नारायण मिश्रा ने रेल लाइन के लिए सर्वे करा कर, 1974 में हसनपुर-सकरी के लिए छोटी लाइन का शिलान्यास किया था। फिर 1996 में पूर्व रेल मंत्री रामविलास पासवान ने बड़ी लाइन का शिलान्यास किया। 28 मार्च 2023 को सीआरएस ने हसनपुर से बिथान रेल खंड पर स्पीड ट्रायल किया गया था। मौके पर उपमुख्य अभियंता कंस्ट्रक्शन विनोद गुप्ता, स्टेशन मास्टर मनोज कुमार चौधरी, मुख्य वाणिज्य अधीक्षक अमित कुमार, वाणिज्य अधीक्षक चंदन कुमार, डीआरएम अधीक्षक दिलीप सिंह, राजेश कुमार साह, नंदलाल पासवान, स्टेशन अधीक्षक चमन जी, ट्रेफिक इंस्पेक्टर सुनील कुमार मलिक समेत दर्जनों पदाधिकारी मौजूद थे। मुख्य वाणिज्य अधीक्षक अमित कुमार, वाणिज्य अधीक्षक चंदन कुमार ने बताया कि कुल-927 यात्रियों ने टिकट कटा कर यात्रा किया जिससे कुल-10330 रुपये की राजस्व वसूली हुई।

Rashtriya Sahara 26-04-2025

कटनी और दौनी को प्राथमिकता दें किसान भाई : डॉ ए सत्तार

समस्तीपुर (एसएनबी)। अगले दो दिनों तक मौसम शुष्क रहने की सम्भावना को देखते हुए किसान भाई गेहू की कटनी एवं दौनी के कार्य को प्राथमिकता दें क्यूंकि उसके बाद वर्षा होने की सम्भावना बन रही है। आंधी वर्षा की सम्भावना को देखते हुए कटे हुए गेहूं को खेत में न छोड़े। कटाई के बाद गेहूँ को पूरी तरह सुखाकर भंडारित करें। भंडारण के लिए जूट के बोरे की व्यवस्था कर लें। एवं बोरे को पलटकर अच्छी प्रकार धूप में सुखाकर कीट रहित कर लें। जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र ने किसाना भाईयों केलिए जारी समसामयिक सुझाव में उक्त बातें कही है। मौसम विशेषज्ञ डॉ अब्दुल सत्तार और नोडल पदाधिकारी डॉ गुलाब सिंह ने सुझाव देते हुए कहा है कि आम के बागों में विगत वर्षो में फल मक्खी बहुत देखने को मिला था, जिससे किसान भाइयों का नुकसान हुआ था। उसको देखते हुए इस बार किसान भाई सावधानी बरते तथा फल मक्खी के प्रबन्धन के लिए फ्रूट फ्लाई ट्रैप अपनायें, यह सबसे बेहतर विकल्प है। प्रति हेक्टेयर 15-20 फरोमैन ट्रैप लगाकर फ्रूट फ्लाई मक्खी को प्रबंधित किया जा सकता है। इन ट्रैपो को निचली शाखाओं पर 4 से 6 फिट की ऊंचाई पर बांधना चाहिए। एक ट्रैप से दूसरे ट्रैप के बीच में 35 मीटर की दूरी रखे। ट्रैप को कभी भी सीधे सूर्य की किरणों में नहीं रखे। ट्रैप को आम की बहुत घनी शाखाओ के बीच में नहीं बाधना चाहिए। ट्रैप बाग में स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए की कहा बाधा गया है। ट्रैप बांधने की अवस्था फल पकने से 60 दिन से पहले होना चाहिए और 6 से 10 सप्ताह के अंतराल पर नर की सुगंध बदलते रहना चाहिए। दुधारू पशुओं को नये गेहूँ के भूसे को खिलाने से पहले दो घंटे पानी में भिगोकर रखें। चारा दान सुबह धूप निकलने से पहले और शाम में धूप समाप्त होने के बाद खिलाए। पशुओं को तेज धूप में न चराएँ। गर्मी से पशुओं को निर्जलीकरण एवं लवण की कमी से बचानें के लिए दिन में चार बार स्वच्छ ठंढा पानी पिलाए एवं 50 ग्राम नमक, 50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं प्रोबायोटिक प्रतिदिन दें। गलघोंटू एवं लंगडी बीमारी से बचाव के लिए टिकाकरण करायें।

Rashtriya Sahara 26-04-2025

विवि पदाधिकारियों, कर्मियों व छात्रों का पहलगाम हमले के विरोध में कैंडल मार्च

पूसा (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के छात्रों, शिक्षकों, प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के विरोध में कैंडल मार्च निकाला। मार्च में शामिल पदाधिकारियों ने इस हमले को कायरतापूर्ण व बर्बर कार्रवाई करार देते हुए घटना की निंदा की और उसमें मारे गये लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। कैंडल मार्च के बाद सभी लोगों ने विश्वविद्यालय के सरस्वती गार्डन में पहलगाम हमले में मृत निर्दोष लोगों के आत्म की शांति के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति ने इस हमले की कड़ी निंदा की और मृतक के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि देश के सभी लोगों को आतंक के विरोध में अपनी एकजुटता दिखानी चाहिए। सभा के दौरान हमले में शहीद लोगों के लिए दो मिनट का मौन रखा गया और उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। इस दौरान छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने एक स्वर में आतंकवाद की निंदा की और शहीदों को श्रद्धांजलि दी। वही निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण त्रिवेदी ने कहा कि यह कैडल मार्च देश में शांति सद्‌भाव और सुरक्षा बनाए रखने के लिए एकजुटता का प्रतीक है। जबकि छात्रों ने इस तरह की आतंकवादी घटनाओं को देश की शांति और सुरक्षा के लिए खतरा बताया और कहा कि इसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना आवश्यक है। छात्रों ने कहा कि उन्हें देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर पूरा भरोसा है और सरकार जल्द ही आतंकवादियों को ढूंढ ढूंढ कर सबक सिखायेगी।

कैंडल मार्च में शामिल वीसी व अन्य।

Rashtriya Sahara 26-04-2025

हीट वेव से लीची का उत्पादन प्रभावित होने का खतरा

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष सह वैज्ञानिक डा एसके सिंह ने बताया कि बिहार के मुजफ्फरपुर में लीची का उत्पादन बहुत अधिक किया जाता है. इस जिले में काफी संख्या में किसान लीची पर ही निर्भर हैं. वहीं, किसान इस बात को लेकर चिंतित हैं कि जिस तरह से हीटवेव ने लीची का उत्पादन प्रभावित किया है. उससे उनकी लागत भी निकल पायेगी या नहीं? विशेषज्ञों ने उत्पादन प्रभावित होने का अनुमान जताया है. मुजफ्फरपुर के किसानों का कहना है कि अभी अप्रैल चल रहा है. बिहार के कई जिलों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है. पिछले कुछ दिनों में मुजफ्फरपुर में तापमान बहुत तेजी से बढ़ा है. इतना अधिक तापमान लीची की सेहत के लिए बिल्कुल भी सही नहीं है. किसानों ने बताया कि लीची की अलग-अलग प्रजातियां तेज धूप से प्रभावित होंगी. लीची की शाही प्रजाति की उपज में 20 प्रतिशत तक कमी हो सकती है. वहीं, चाइना लीची का उत्पादन 70 से 80 फीसदी तक कम होने की संभावना है. हालांकि कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि गर्मी से लीची उत्पादन कितना प्रभावित होगा? इसके बारे में अभी सटीक भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है. यदि उपज कम होती है तो बाजार में खपत पर फर्क पड़ सकता है.

प्रभात खबर
Sunday, April 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/680d2fb614b832fd1eb6fa8f

भास्कर 28/4/25 पेज 18

मंडे पॉजिटिव

पूसा विवि से जुड़े वैज्ञानिक मोटे अनाज के उत्पादन को अधिक से अधिक बढ़ाने को कर रहे शोध

जलवायु परिवर्तन के दौर में मिलेट्स की खेती सामान्य फसलों की तुलना में काफी फायदेमंद : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

जलवायु परिवर्तन के दौर में मिलेट्स की खेती सामान्य फसलों की तुलना में काफी कारगर साबित हो रही है। बाजरा, ज्वार, रागी, मरुआ, सामा, कौनी, चीना, कोदो, कुटकी जैसे मोटे अनाज वाले फसल पानी और उच्च तापमान को आसानी से सहन कर सकते हैं। मोटे अनाज वाले इन फसलों का गुण ही इन्हें जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक लचीला बनाता है। आज के दौर में दुनिया के ज्यादातर देशों के कृषि वैज्ञानिक किसानों को मिलेट्स की खेती और इसका सेवन करने के लिए लगातार जागरूक कर रहे हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा से जुड़े वैज्ञानिक भी मोटे अनाज के उत्पादन और इसके सेवन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के पहल पर पिछले कुछ वर्षों से मोटे अनाज के विभिन्न फसलों पर अनुसंधान कर रहे हैं। कृषि वैज्ञानिकों की मानें तो मोटा अनाज आज के दौर की महत्वपूर्ण मांग है। पूसा विवि के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड डॉ. आरके तिवारी के नेतृत्व में यहां के वैज्ञानिक मोटे अनाज के उत्पादन पर जोर शोर से शोध कर रहे हैं।

किसानों को जानकारी देती विषय वस्तु विशेषज्ञ भारती उपाध्याय।

किसान खाद्य आपूर्ति की समस्या को दूर कर सकेंगे

मोटे अनाज पर अनुसंधान कर रही केवीके की विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल उत्पादन) भारती उपाध्याय ने बताया कि बिहार के किसान रागी, कौनी, चीना, कोदो, कुटकी, ज्वार, बाजरा आदि जैसे श्री अन्न की खेती कर खाद्य आपूर्ति की समस्या को दूर करते हुए खुद अच्छी आमदनी प्राप्त करने के साथ-साथ इन अनाजों का सेवन कर अपने स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाए रख सकते हैं। उन्होंने बताया कि मोटे अनाज की खेती में काफी कम पानी की जरूरत पड़ती है। खासकर बाजरे की खेती की बात करें तो बाजरे की फसल सबसे अधिक शुष्क सहिष्णु फसल है।

मोटे अनाज में कैल्शियम, आयरन, जिंक जैसे तत्व

केवीके के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने बताया की संयुक्त राष्ट्र महासभा के नेतृत्व में विश्व के 72 देशों ने भारत के पहल पर समर्थन देते हुए साल 2023 को अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित किया था। इस साल से ही केवीके में मोटे अनाज पर अनुसंधान चल रहा है। उन्होंने बताया की मोटे अनाज के उत्पादन एवं सेवन को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों को जागरूक करने के उद्देश्य से केवीके के द्वारा योजनाओं के तहत सैकड़ों एकड़ खेतों में मोटे अनाज की खेती का प्रत्यक्षण किया जा रहा है।

मौसम ने ली अंगड़ाई, गर्मी से झुलस रहे लोगों को मिली राहत

मौसम में बदलाव के बाद पार्क में खेलते बच्चे • जागरण

जासं, समस्तीपुर : जिले में रविवार को मौसम ने अचानक अंगड़ाई ले ली। इससे पिछले कई दिनों से झेल रही भीषण गर्मी से लोगों को बड़ी राहत मिली। शनिवार तक तेज धूप और गर्म हवाओं ने जनजीवन को प्रभावित कर रखा था। अधिकतम तापमान शनिवार को 39.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, जिससे लोगों को बाहर निकलना भी मुश्किल हो रहा था। वहीं रविवार को मौसम में बदलाव देखने को मिला और अधिकतम तापमान में 6 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। रविवार का अधिकतम तापमान 33 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। दिन भर हल्के बादल छाए रहे और लगभग आठ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा भी चलीं, जिससे वातावरण में काफी ठंढक घुल गई। शाम होते-होते जिले के कई हिस्सों में हल्की बूंदाबांदी भी हुई। बारिश की फुहारों से गर्मी से बेहाल लोगों ने राहत की सांस ली। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने इस मौसम के बदलाव का आनंद लिया। डा राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तार के अनुसार आने वाले कुछ दिनों तक जिले में हल्के बादलों की आवाजाही बनी रह सकती है और तापमान में भी मामूली गिरावट की संभावना है। हालांकि दिन के समय धूप निकल सकती है, लेकिन तेज गर्मी जैसी स्थिति फिलहाल नहीं बनती दिख रही है। उन्होंने जिलेवासियों को मौसम में अचानक बदलाव को देखते हुए स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने और बाहर निकलते समय हल्के कपड़े पहनने को कहा है। मौसम का यह सुहावना मिजाज लोगों के लिए फिलहाल राहत लेकर आया है और उम्मीद की जा रही है कि अगले कुछ दिन तक यह राहत बनी रहेगी। बता दें कि शुक्रवार को जारी मौसम पूर्वानुमान में मौसम विज्ञानी ने मौसम के मिजाज में बदलाव आने की संभावना जतायी थी। इस दौरान आंधी-तूफान, तेज हवा, बिजली गिरने और बारिश की संभावना जताई गई थी।

Dainik Jagran 28-04-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में इस दौरान आसमान में बादल आ सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 38-40 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
28 अप्रैल	39.0	22.0
29 अप्रैल	39.8	22.5
दरभंगा		
28 अप्रैल	39.8	22.5
29 अप्रैल	40.0	22.8
पटना		
28 अप्रैल	41.0	23.0
29 अप्रैल	41.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 28-04-2025

खेती में एआई तकनीक अपनाने की जरूरत : डॉ सिंह

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने इन दिनों ड्रोन तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आईआईटी आधारित खेती की तकनीक पर प्रयोग शुरू करने पर जोर दिया है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने वैज्ञानिकों को भी इसके लिए आगे आने का आह्वान किया. कहा कि तकनीक के प्रयोग से ही किसानों को लाभ पहुंचा सकते हैं. कहा कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के एक्सपेरिमेंटल फील्ड में आईसीएआर -एआईसीआरपी (फल) एवं एनआरसी, केला के सौजन्य से डेटा संचालित स्मार्ट खेती के लिए एक मशीन लगायी गयी है. जिसका नाम फसल है. यह किसानों के फसलों की भविष्यवाणी करेगा. यह सोलर संचालित है. यह मशीन सिंचाई, रोग एवं कीड़ों से बचाव के लिए छिड़काव, उर्वरक का प्रयोग के विषय में भी जानकारी देगी. डॉ एसके सिंह ने बताया कि यह मशीन फसल प्रणाली लगातार यह सुनिश्चित करने के लिए मिट्टी में पानी की उपलब्धता की जांच करती है कि फसल की सिंचाई की आवश्यकता हर समय फसल, उसकी अवस्था और मिट्टी की विशेषताओं के आधार पर पूरी हो. अगले 14 दिनों के लिए खेत-विशिष्ट सूक्ष्म-जलवायु पूर्वानुमान प्रदान करता है. इससे बागवानी फसल में कई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सहूलियत होती है.

कृषि में एआई तकनीक की झलक

प्रभात खबर
Tuesday, April 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/680fd3e809f585f8e315fe82

आम के बागों में फल मक्खी की करें निगरानी

वैज्ञानिक सुझाव

प्रतिनिधि,समस्तीपुर

जिले में किसानों के आय का एक मजबूत स्त्रोत आम की फसल है. सफेद मालदह सहित कई तरह आम का बाग किसानों ने लगा रखा है. इस बार बाग में आम की फसल भी अच्छी है. आम के बागों में विगत वर्षों में फल मक्खी बहुत देखने को मिला थाङ जिससे किसानों को नुकसान हुआ था. इसको देखते डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा किसानों के हित में समसायिक सुझाव जारी किये गये हैं. वैज्ञानिक ने कहा कि इस बार किसान सावधानी बरतें तथा फल मक्खी के प्रबन्धन के लिए छूट फ्लाई ट्रैप सबसे बढ़िया विकल्प है. इसका उपयोग करें. वैज्ञानिक ने कहा है कि आम के बाग में प्रति हेक्टेयर 15-20 फरोमैन ट्रैप लगाकर फूट फ्लाई मक्खी को प्रबंधित किया जा सकता है. इन ट्रैपो को निचली शाखाओं पर 4 से 6 फीट की ऊंचाई पर बांधना चाहिये. एक ट्रैप से दूसरे ट्रैप के बीच में 35 मीटर की दूरी रखें. ट्रैप को कभी भी सीधे सूर्य की किरणों में नहीं रखें. ट्रैप को आम की बहुत घनी शाखाओं के बीच में नहीं बाधना चाहिये. ट्रैप बाग में स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए की कहा बांधा गया है. ट्रैप बांधने की अवस्था फल पकने से 60 दिन से पहले होनी चाहिए और 6 से 10 सप्ताह के अंतराल पर नर की सुगंध बदलते रहना चाहिये. दूसरी ओर जारी समसायिक सुझाव के मुताबिक भिण्डी की फसल को लीफ हॉपर कीट द्वारा काफी नुकसान पहुंचाया जता है. यह कीट दिखने में सुक्ष्म होता है. इसके नवजात एवं व्यस्क दोनों पत्तियों पर चिपककर रस चुसते हैं. अधिकता की अवस्था में पतियों पर छोटे-छोटे घने उभर जाते हैं और पत्तियां पीली तथा पौधे कमजोर हो जाते हैं, जिससे फलन प्रभावित होता है. इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर इमिलाक्लोप्रिड 0.5 मिमी प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें. भिंडी फसल में माइट कीट की निगरानी करते रहें. प्रकोप दिखाई देने पर इथियॉन प्रति 1.5 से 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें. गरमा सब्जियों जैसे भिण्डी, नेनुआ, करेला, लौकी (कददू), और खीरा की फसल में निकाई-गुड़ाई करें. रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें, ताकि सूर्य की तेज धूप मिट्टी में छिपे कीड़ों के अंडे, प्यूपा एवं घास के बीजों को नष्ट कर दें. दुधारू पशुओं को नये गेहूं के भूसे को खिलाने से पहले दो घंटे पानी में भिंगोकर रखें.

प्रभात खबर
Tuesday, April 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/680fd3e809f585f8e315fe82

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में इस दौरान आसमान में बादल आ सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 38-40 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
29 अप्रैल	39.8	21.0
30 अप्रैल	39.8	21.5
दरभंगा		
29 अप्रैल	39.8	21.5
30 अप्रैल	40.0	22.0
पटना		
29 अप्रैल	41.0	23.0
30 अप्रैल	41.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 29-04-2025

उत्तर बिहार में एक से तीन मई तक बारिश की अधिक संभावना

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 30 अप्रैल से 04 मई 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल आ सकते हैं. अनुकूल मौसमीय परिस्थितियां बनने के कारण पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने की संभावना बनी रहेगी. 1 से 3 मई के बीच इसकी संभावना अधिक है.इस अवधि में अधिकतम तापमान 28-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. जबकि न्यूनतम तापमान 21-24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है.पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 13 से 17 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की संभावना है.

सापेक्ष आद्रर्ता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 70 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 31.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 4.8 डिग्री कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 21.0 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 2.8 डिग्री कम रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, April 30, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6811285f6f01a5f58a1e9fd8

डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय का योगदान अव्वल : डॉ एमएल जाट

महानिदेशक डॉ जाट को सम्मानित करते कुलपति .

पूसा .डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक और सचिव डेयर डॉ. एमएल जाट से मुलाकात की. इस दौरान कुलपति ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान एवं विकास कार्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की. बता दें कि महानिदेशक डॉ जाट व कुलपति डॉ पांडेय मोदीपुरम में काफी दिनों तक साथ में काम कर चुके हैं. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक डॉ. जाट ने विश्वविद्यालय के अच्छे कार्यों की सराहना की. कहा कि अन्य संस्थानों में भी इसकी चर्चा होती रहती है. उन्होंने विशेष रूप से नमो दीदी ड्रोन योजना और डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के योगदान को उल्लेखनीय बताया. नमो दीदी ड्रोन योजना के तहत विश्वविद्यालय ने कई राज्यों के किसानों को ड्रोन तकनीक का प्रशिक्षण दिया है. इसमें महिला किसान की संख्या काफी अधिक है. भारत सरकार की ओर से नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत इन लोगों को ड्रोन भी उपलब्ध कराया गया है. जिसकी मदद से महिला किसान अच्छी खासी आय अर्जित कर रही है. इसके अतिरिक्त ड्रोन के उपयोग से किसानों को फसलों की निगरानी और प्रबंधन में भी मदद मिल रही है. कुलपति डॉ पांडेय और महानिदेशक डॉ जाट के बीच हुई मुलाकात में भविष्य की योजनाओं, सहयोग और साझेदारी के अवसरों पर भी चर्चा हुई. 2047 तक भारत को विकसित बनाने को लेकर विश्वविद्यालय की तैयारियां पर भी गंभीर विचार किया गया.

प्रभात खबर
Wednesday, April 30, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6811285f6f01a5f58a1e9fe4

भास्कर 30/4/25 पेज 21

बधाई • पूसा विवि के कुलपति ने महानिदेशक से नई दिल्ली में की मुलाकात

आईसीएआर के महानिदेशक ने नमो दीदी ड्रोन योजना और डिजिटल एग्रीकल्चर के उत्कृष्ट कार्यों को सराहा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर) के महानिदेशक, भारत सरकार के कृषि सचिव (डेयर) डॉ. एम एल जाट से मंगलवार को नई दिल्ली में मुलाकात की। मुलाकात के दौरान कुलपति ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान एवं विकास कार्यों के बारे में महानिदेशक को विस्तार से बताया। बाद में महानिदेशक डॉ. एम एल जाट ने भी पूसा विश्वविद्यालय के अच्छे कार्यों की सराहना की और कहा कि अन्य संस्थानों में भी पुसा विवि की चर्चा होती रहती है। उन्होंने पुसा विवि द्वारा विशेष रूप से नमो दीदी ड्रोन योजना और डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्य एवं विवि के योगदान को काफी उल्लेखनीय योगदान बताया। कुलपति डॉ. पांडेय और महानिदेशक डॉ. जाट के बीच हुई मुलाकात में कृषि से जुड़ी भविष्य की योजनाओं, सहयोग और साझेदारी के अवसरों पर भी चर्चा हुई। इतना ही नही वर्ष 2047 तक भारत को विकसित बनाने को लेकर विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही तैयारियों पर भी कुलपति और महानिदेशक के बीच विचार विमर्श हुआ।

महानिदेशक से मिलते कुलपति।

नमो दीदी ड्रोन योजना से खासकर महिलाओं की

कृषि विवि पूसा में नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत अब तक सैकड़ो महिलाओं को ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग दी जा चुकी हैं और दिए भी जा रहे हैं। इनमें से कई महिलाएं आज ड्रोन पायलट के रूप में विभिन्न कृषि संस्थानों, कृषि विभाग व कृषक समूहों से जुड़कर अपनी आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ कर रही हैं। वैज्ञानिकों की मानें तो नमो ड्रोन दीदी योजना कृषि उद्देश्यों के पूर्ति के लिए ड्रोन तकनीक प्रदान करती है। इस तकनीक के जरिये फसलों पर तरल उर्वरकों और कीटनाशकों आदि का छिड़काव कम समय और कम लागत में किया जाता हैं। नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत पायलटों को सब्सिडी पर ड्रोन दिया जा रहा है।

तीन मई तक हल्की बारिश की संभावना

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : उत्तर बिहार के मौसम में एक बार फिर बदलाव के संकेत मिले हैं। डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि अगले चार दिनों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान कई स्थानों पर हल्की वर्षा होने की संभावना है। विशेषकर एक से तीन मई के बीच बारिश की संभावना अधिक है। मौसम विभाग के मुताबिक इस अवधि में अधिकतम तापमान 28 से 32 डिग्री और न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। मौसम के इस बदलते मिजाज को देखते हुए कृषि विज्ञानियों ने किसानों से सावधानी बरतने को कहा है। वर्षा की संभावना को ध्यान में रखते हुए गेहूं, अरहर और रबी मक्का जैसी फसलों की कटाई और सुखाने का कार्य सतर्कता के साथ करें। कटी हुई फसलों की दौनी कर सुरक्षित स्थानों पर भंडारित कर लें। खड़ी फसलों में सिंचाई अभी टालने की सलाह दी गई है। कीटनाशकों का छिड़काव तभी करें जब मौसम पूरी तरह साफ हो।

फसलों का रखें विशेष ध्यान : उन्होंने कहा कि ओल की रोपाई के लिए यह उपयुक्त मौसम है। विज्ञानियों ने गजेन्द्र किस्म को उपयुक्त मानते हुए सलाह दी है कि कंदों को ट्राइकोडरमा भिरीडी नामक दवा के गोबर के घोल में उपचारित कर रोपाई करें। इससे मिट्टी जनित बीमारियों से बचाव होगा और उपज में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा मूंग और उड़द की फसलों में रस चूसने वाले कीटों जैसे माहु, सफेद मक्खी, हरा फुदका और थ्रिप्स की निगरानी करें। ये कीट पौधों की पत्तियों और फूलों को नुकसान पहुंचाते हैं।

Dainik Jagran 30-4-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 4 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल आ सकते हैं। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना बनी रह सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
30 अप्रैल	31.0	21.0
01 मई	31.0	21.5
दरभंगा		
30 अप्रैल	31.0	21.5
01 मई	32.0	21.0
पटना		
30 अप्रैल	34.0	22.0
01 मई	34.0	22.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 30-4-2025

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक एवं सचिव डेयर से कुलपति ने की मुलाकात

पूसा (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक एवं सचिव डेयर डॉ. एम एल जाट से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान, कुलपति ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न शोध एवं विकास कार्यो के बारे में अवगत कराया। बता दें कि महानिदेशक डॉ जाट और कुलपति डॉ पांडेय मोदीपुरम में काफी दिनों तक साथ में काम भी कर चुके हैं। वही भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक डॉ. एम एल जाट ने विश्वविद्यालय के कार्यो की सराहना करते हुए कहा कि अन्य संस्थानों में भी इसकी चर्चा होती रहती है। उन्होंने विशेष रूप से नमो दीदी ड्रोन योजना एवं डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के योगदान को उल्लेखनीय बताया। नमो दीदी ड्रोन योजना के तहत, विश्वविद्यालय ने कई राज्यों के किसानों को ड्रोन तकनीक का प्रशिक्षण दिया है, जिसमें महिला किसान की संख्या काफी अधिक है। भारत सरकार की ओर से नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत इन किसानों को ड्रोन भी उपलब्ध करवाया गया है। जिसकी मदद से एक तरफ महिला किसान आर्थिक स्वावलंबन की ओर बढ रही है। वहीं ड्रोन के उपयोग से किसानों को फसलों की निगरानी और प्रबंधन में भी मदद मिल रहा है। कुलपति डॉ पांडेय और महानिदेशक डॉ जाट के बीच हुई इस मुलाकात के दौरान भविष्य की योजनाओं एवं सहयोग व साझेदारी के अवसरों पर भी चर्चा हुई और 2047 तक भारत को विकसित बनाने को लेकर विश्वविद्यालय की तैयारियां पर भी गंभीर विचार विमर्श किया गया।

डॉ जाट का स्वागत करते वीसी।

Dainik Jagran 30-04-2025

मौसम : उत्तर बिहार के जिलों में हल्की बारिश की संभावना

समस्तीपुर। अगामी 4 मई तक उत्तर बिहार के जिलों में हल्की बारिश की संभावना है। खास तौर पर 1 से 3 मई के बीच इसकी संभावना अधिक है। इस संबंध में जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 04 मई, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल आ सकते है। अनुकूल मौसमीय परिस्थितियाँ बनने के कारण पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना बनी रहेगी। 1 से 3 मई के बीच इसकी सम्भावना अधिक है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 28-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 21-24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 13 से 17 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की सम्भावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 70 से 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 30-4-2025